यह है दक्षिण भारत जहाँ संयम नहिं हारत

स्वर्णिम नगर * स्वर्णिम इतिहास * स्वर्णिम अनुभव

SERIES - 2

युगप्रधान आचार्यसम प.पू.पंन्यास
श्री चंद्रशेखरविजयजी म.सा.

अर्पणम्

- 3 मुमुक्षु आत्माओं को, जो हमारी दक्षिण यात्रा के अभिन्न हिस्से थे,
- उन्हीं 3 मुमुक्षु आत्माओं को, जिन्होंने सिर्फ दक्षिण का ही नहीं,

  परंतु अपने जीवन का सफर भी तय किया....
- उन्हीं 3 मुमुक्षु आत्माओं को, जो खुद की आत्मा रूपी गाड़ी

  में वैराग्य रूपी Petrol भरकर मोक्ष मार्ग पर गतिशील होने की तैयारी में है....
- उन्हीं 3 मुमुक्षु आत्माओं को, जो खुद का

श्रीपाल,भव्य और कलश

- रूपी लौकिक नाम छोड़कर 3 February, 2017 को अलौकिक नाम में सज्ज होने वाले है....
- मोह को छोड़कर मोक्ष की ओर बढ़नेवाले इन मुमुक्षुओं को यह दूसरा भाग समर्पित है....

मु. गुणहंस वि.

कुरूक्कुपेट, चेन्नई

24/1/2017, 7.45 AM

2

यह है दक्षिण भारत
जहाँ संयम नहिं हारत

स्वर्णिम नगर * स्वर्णिम इतिहास * स्वर्णिम अनुभव

युगप्रधान आचार्यसम प.पू.पंन्यास
श्री चंद्रशेखरविजयजी म.सा.

* दिव्याशीष *

सिद्धांत महोदधि सच्चारित्र चूडामणि

पूज्यपाद आचार्य **श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराज** के

विनय पूज्यपाद युगप्रधानाचार्यसम पू.पं.प्रवर **श्री चंद्रशेखरविजयजी महाराज**

* शुभाशीष दाता *

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति **पू.आ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.**

निश्रादाता **पू.आ. श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.**

* लेखक *

मुनिराज **श्री गुणहंसविजयजी म.सा.**

* अनुवादक *

मुनिराज **श्रीशीलगुणविजयजी म.सा.**

* प्रकाशन *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

102-ए, चंदनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर

पोस्ट ऑफिस के सामने, भट्ठा, पालडी, अहमदावाद-7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश भाई
373, मिंट स्ट्रीट, राजेन्द्र काम्पलेक्स
(महाशक्ति होटल के पास)
चेन्नई-79 फोन: 9841067888

सुरेश भाई
401, मिंट स्ट्रीट,पंकु कुंज
दुसरा माला, साहुकारपेट
चेन्नई-79 फोन: 9840318499

विनित जैन
1, पल्लीयप्पन स्ट्रीट,
(अन्नापिलै स्ट्रीट के पास) चौथा माला
चेन्नई-79 फोन: 9566292931

* मुद्रक *

DESIGN & PRINTED BY

First look

IMPRESSION GUARANTEED....

9597511135

पूर्वकथन

यह है दक्षिण भारत, जहाँ संयम नहीं हारा

बारडोली से लेकर भिवंडी तक का अनिश्चितताओं से भरा पहला सफर(B to B) समाप्त हुआ ...

प्रतिकुलताओं के बीच भी भगवान ने हमको रास्ता दिखाया, अनुकूलताओं का मार्ग दिखाया...

अब शुरु होने जा रहा था हमारा दूसरा सफर !

भिवंडी में Rest करने के बाद नई स्फुर्ति तथा और प्रतिकुलताओं को सहन करने की सज्जता के साथ सज्ज होकर हम बारामती की ओर निकल पडे...

हमारा दूसरा B to B (भिवंडी से बारामती) का रोमांचक सफर चालु हुआ।

लोयणावाला की घाटीयों की रम्यता को छूते हुए तथा मराठी प्रजाओं की भक्तिभावना से रंजित होते हुए हम आगे बढते गए...

विशेष, तो आप जब यह पुस्तक उठाएँगे, तब ही पता चलेगा...तो भी,

जो खुद की मदद करता है, खुदा उसकी मदद करता है...

यह बात तो हमको आत्मसात हो रही थी...

क्या हम B to B का दूसरा सफर चारित्र में दाग लगाए बिना पार कर सकेंगे?

क्या हम B to B का दूसरे सफर में प्रतिकुलताओं को मानसिक संतुलन रखकर पार सकेंगे?

जानना हो तो,

हो जाओ तैयार...एक और Adventure के लिए !

युगप्रधानाचार्यसम
प.पू.पं चंद्रशेखरविजयजी म.सा. के
शिष्य मु.गुणहंसविजयजी म.सा.

गुरुगुणहंसचरणमृद्
मु.शीलगुण.वि.
पोष वद 6, 19.12.2017
कोंडीतोप, चेन्नई
दोपहर 3.15 बजे

Vihar Day :

19

मार्गशीष सुद

४

DATE :

15.12.2015

Place :

भिवंडी

शासन रत्न

विहार दिन :

19

मृगशीर्ष सुदी ४ दिनांक :
15/12/2015

स्थान :
भिवंडी से

।। नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय ।।

भिवंडी में जल्दी सबेरे पोणे घंटे की वाचना रखी थी। उसमें प्रस्तुत विषय लिया कि 'सच्ची साधुता की 1 Second की भी स्पर्शनावाले मात्र 8ही भव चाहिए, उससे अवश्य मोक्ष होता ही हैं।'

पू. आ. महाबोधिसूरिजी ने यहाँ सामायिक मंडल की स्थापना की है, इसलिए 50 श्रावक तो सुबह को वाचना में किसी भी वक्ता को मिल ही जाते हैं। तकलीफ सिर्फ इतनी ही है कि इस शिवाजी चौक के वहाँ Traffic की आवाज बहुत.... इसलिए मेरे जैसे को तो प्रवचन देते-देते तम्मर चढ़ जाए....

अहमदाबाद के परिचित साध्वीजी भगवंत Special वंदन करने के लिए 50 कि.मी. से विहार कर पधारे थे। उन सभी को मिलना हुआ।

पहले यहाँ चातुर्मास करने की भावना थी। बारड़ोली में हमने पूछवाया भी था, परंतु अब लगा कि चातुर्मास नहीं किया वह अच्छा हुआ।

हालाँकि अब चातुर्मास की विनति वापस आई, परंतु अब चैन्नई तय हो चुका था। मैंने पू.राजरक्षित म.सा. के चातुर्मास के लिए उन्हें प्रयत्न करने को कहाँ, परन्तु वह शक्य नहीं हुआ।

आज सुबह ही बाकी के तीन साधु विहार करके पधारे। उन्होंने मुझे बताया ''गुरूजी! भिवंडी का Area चालु होने के बाद तो चलना मुश्कील हो गया। रास्तों के दोनों ओर माँस की दुकाने! मुर्गीओ की खाल उतारकर उन्हें लटकाया गया था। उस के अलावा बकरी विगेरे बड़े पशुओं की भी वहीं हालात! हम झटपट चलकर आ गए। परंतु इन मुसलमानों की निर्दयता अकल्पनीय हैं.....''

''मुस्लिमों की ही नहीं, मांसाहारीओं की! सिर्फ मुसलमान ही मांस नहीं खाते, जो जो माँस खाते है, वे सब ऐसे ही निर्दय हैं।'' मैंने स्पष्टता इसलिए की क्योंकि 'सिर्फ मुसलमान ही निष्ठुर हैं, और सभी मुसलमान निष्ठुर है' ऐसी गलतफेहमी वे न बांधे....

''म.सा.! मुझे पहचाना?'' एक भाई ने मुझे पूछा....

''नहीं....''

''मैं संजय! ललितवकील का भाई....शंखेश्वर में आपको मिला था।''

''हा! हा! अब याद आया....'' मैं दो साल पहले के उस प्रसंग में खो गया। जीवदया का कार्य करने वाले, मुस्लिमों के सामने Court में वकील के तौर पर Case लड़ने वाले ललितभाई का भिवंड़ी में ही भररास्ते पर दिनदहाड़े गोलीयाँ मारकर खून किया गया था.... यह सभी चीजें मेरे स्मृतिपथ पर अंकित हुई। उनकी श्राविका पुण्यवंती बहन (या भाग्यवंती

विहार दिन :

19

मृगशीर्ष सुदी ४ दिनांक :

15/12/2015

स्थान :

भिवंडी से

बहन) की महिमा याद आई। वे भी वहाँ साथ ही आएँ थे।

''म.सा.! मेरे घर पर पगलिएँ करोंगे? घर मंदीर भी हैं।'' उन्होंने विनती की।

''तुम विनंती नहीं करते, तो भी मैं सामने से आता। मुझे तुम्हारे भगवान देखने हैं। और जहाँ ऐसे शासन रत्न रहते थे, वह घर भी देखना हैं।''

मैंने हर्षोल्लास के साथ इजाजत दी और दो दिनों के पश्चात पगलिएँ तय किए।

शिवाजी चौक जैसे Traffic Jam वाले Area में भी सिर्फ 0.5 कि.मी. के दूरी पर ही बड़ी नीति की जगह भी मिल गई।

विहार दिन :

20

मृगशीर्ष सुद

५

दिनांक :

16.12.2015

स्थान :

भिवंड़ी

दुःख का सहारा

विहार दिन :

20

मृगशीर्ष सुदी ५ दिनांक :

16/12/2015

स्थान :
भिवंडी

आज मु. न्यायरत्न वि. को चालु ओली में (वर्धमान तप की) सुद पंचमी का उपवास था। जल्दी सवेरे वाचना तथा 9 बजे प्रवचन नित्यक्रमानुसार चालु ही थे।

भिवंड़ी में राजस्थानीयों की संख्या बड़े पैमाने में हैं और उनमें धार्मिकता का, श्रद्धा का स्तर बहुत अच्छा हैं। शायद ज्ञान कम होगा, परन्तु संयमी की भक्ति में तो वे पागल बन जाते हैं।

संवत्सरी के दिन वहाँ 950 पौषध हुए थे....

ढ़ेर सारे दीक्षार्थीओं की यह उत्पत्ति भूमि है....

एक बेहतरीन, बड़े पैमाने पर यहाँ पाठशाला चलती हैं। बहने यहाँ 'कम्मपयड़ी' तक का अभ्यास करने वाली है, संस्कृत पढ़ने वाली भी हैं। उन सभी में वसंतीबहन नाम के श्राविका का योगदान अपरंपार हैं। उनके सुपुत्र ने पू. आ. हेमरत्नसूरिजी के पास महर्षिरत्न के नाम से दीक्षा ली हैं। वे किसी भी प्रकार का वेतन - पगार लेकर पाठशाला में पढ़ानेवाले बहन नहीं हैं। वे स्वयं तो सुखी-सम्पन्न है, परन्तु ज्ञान के प्रति की तीव्र रूचि के कारण वे पढ़ा रहे हैं। पाठशाला में बहनों के ऊपर उनका वर्चस्व बहुत सराहनीय हैं।

मैंने उनका संपर्क किया। पाठशाला के विशिष्ट बहनों की एक Meeting की। 'वे अभी ज्यादा अच्छी तरह से पढ़े और साध्वीजी को पढ़ाने में सक्षम बने....'इस बात की प्रेरणा की। आगे के साल का चातुर्मास वहाँ पू.सा. श्री मंदिरनिधिश्रीजी का था और उनके Group में स्वाध्याय करानेवाले साध्वीजी भी हैं, इसलिए चातुर्मास में उनका अच्छा अभ्यास हो जाएँ, ऐसी मेरी भावना थी।

उस ही दिन एक बहन मिलने आए थे।

साधु-साध्वीजी दुःखी जीवों के लिए बड़ा आधार बनते है....दुःखी जीवों को निःस्वार्थी संयमीओं पर विश्वास जगता है, इसलिए वे दूसरे सभी को छोड़कर संयमी के पास खुद का हृदय हलका करते है तथा अमूल्य परमशांति को प्राप्त करते हैं।

23 साल के आस-पास की उम्रवाले उन बहन ने खुद की वेदना व्यक्त की, 'मेरा एक लड़के के साथ Love Affair था, परंतु उसके पप्पा की 'ना' होने से हमारी शादी हो नहीं पा रही थी। लड़का खुद के पिताजी के विरूद्ध चलने को तैयार नहीं था। दो साल से हमारा Contact टूट गया था, परन्तु मुझे अभी भी आशा थी कि 'हम दोनों की शादी होकर ही रहेगी।' परंतु मेरी आशा कल ही चकनाचुर होकर रह गई। अचानक समाचार मिले कि, 'उस लड़के की सगाई तय हो चुकी हैं।' और मैं खुद को संभाल न पाई। 0.5 घंटे तक रोती ही रही। मेरा दुःख किसके पास हलका करूँ? मैंने दीक्षा लेने का भी प्रयास किया था और Practice के लिए भी गई थी, परंतु भाव न आएँ और जैसे ही मैंने मुंबई में पदार्पण किया तो इस बात को सुनकर मुझे सख्त झटका लगा। दूसरी ओर यह समाचार मिले कि 'आप भिवंड़ी में विराजित हो।'

विहार दिन :

20

मृगशीर्ष सुदी ५ दिनांक :

16/12/2015

स्थान :

भिवंडी

इसलिए मन को खाली करने आई हूँ। आपके प्रवचन सुने थे, सामान्य परिचय था। कुछ आश्वासन प्राप्त होगा और मार्ग मिलेगा ऐसी अपेक्षा से आई हूँ।'

मैं तो एकतान होकर सुनता ही रहा। दूसरे का दुःख देख-सुनकर दुःख हो वह तो स्वाभाविक हैं, परंतु आश्चर्य नहीं हुआ। **संसार ऐसा ही हैं,** यह बात तो प्रभु कहके ही गए है, उसमें नया क्या हैं?

तो भी उपदेश देने की जवाबदारी(!) मैंने निभाई।

1. **'दुःखे दुःखाधिकं पश्य'** हम पर किसी भी प्रकार का दुःख आ पड़े, तो हमें हमारे से ज्यादा दुःखी को देखना चाहिए।

2. **'दुःख भगवान का तोहफा है'** [चंदनबालाजी अनाथ बने, चार रास्ते के बीच बेचे गए, दासी बने, बाल मुंडा दिए गए, हाथ-पैर में बेडीयाँ पडी, तीन दिन तक भूखे रहना पड़ा, अंततः खाने के लिए भैंस के योग्य वैसे उड़द के बाकुले मिले.... परंतु ये सभी दुःख मिले, तो ही वे भगवान को पारणा करा सके]

3. **जो होता हैं, वो अच्छे के लिए होता हैं....**

ऐसी-ऐसी चीजें समझाई और वे भिवंड़ी में ही खुद के रिश्तेदारों के वहाँ एक दिन ओर रूक गए।

मेरे तीनों शिष्य मुंबई के ही है, तो भी हम मुंबई में अंदर नहीं गए। हाईवे के रास्ते से बाहर से ही निकल गए। दीक्षा के पश्चात एक भी शिष्य मुंबई गए नहीं हैं। इसलिए उनकी इच्छा मुंबई में जाने की हो, उनके परिवार की इच्छा उन्हें मुंबई ले जाने की हो, वह स्वाभाविक हैं। परंतु मेरे लिए बहुत ही आनंद की बात हैं कि मेरे एक भी शिष्य ने कभी भी Directly या Indirectly मुंबई में जाने कि इच्छा व्यक्त नहीं की हैं। उनके व्यवहार में भी लेश भी उस ओर की इच्छा भी प्रदर्शित नहीं हुई हैं और प्रसन्नता में कभी खामी नहीं आई हैं।

सामान्यतः ऐसा होता हैं कि जहाँ पर सम्पूर्ण जिंदगी गुजारी हो, ढ़ेर सारे मित्र-स्वजन परिचित हो, वहाँ नूतनदीक्षितों को जाने का मन हो जाता है, परंतु मेरे शिष्यों के इस विषय के वैराग्य के कारणतः यह लिखते समय भी मुझे अपार आनंद हो रहा हैं। गौरव हो रहा हैं। मैं खुद जब नूतन दीक्षित होकर पहलीबार सुरत-धानेरा गया था, तब मेरे मन में स्वजन-राग, मित्रराग कैसा था, यह बात मुझे आज भी बराबर याद हैं। सभी को मिलने का, बाते करने का, उपदेश प्रदान करने का कैसा मन होता....उसका मुझे अनुभव हैं.... 'हाँ! पू. गुरूदेवश्री के डर से-वाचनाओं से तब मैं स्वाध्याय में ही रहा और इसलिए मेरे रिश्तेदार भी ऐसे ही बोलते है कि 'यह म.सा. हमारे साथ बोलते ही नहीं है....' परन्तु उन बिचारों को कहाँ मालुम है कि **बहारी दुनिया और भीतरी दुनिया में आसमान-जमीन का अंतर होता हैं।**

भिवंड़ी में यह हमारा दूसरा दिन था।

विहार दिन :

21

मृगशीर्ष सुद

६

दिनांक :

17.12.2015

स्थान :

भिवंडी

शुभ भावों की भव्यता

विहार दिन :

21

मृगशीर्ष सुदी ६ दिनांक :

17/12/2015

स्थान :

भिवंडी

आज का प्रभात मेरे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि आज के दिन बराबर 20 साल पहले मुझे मेरे पू. गुरूदेवश्री ने मुझमें विश्वास रखकर रजोहरण अर्पण किया था। मैं साधु बना था। मेरा दीक्षा-दिन था। आज मेरे 20 साल पूर्ण हो रहे थे, मैं पर्याय स्थविर बन चुका था।

आज पू.आ. पूर्णचन्द्रसागरजी पधारने वाले थे, इसलिए आज सुबह की वाचना हमने दूसरे उपाश्रय में रखीं थी और 9 बजे का प्रवचन मूलतवी रखा था।

आज सुबह की वाचना में ज्यादा लोग नजर आएँ। प्रायः 300 के आस-पास होंगे। सुबह की वाचना का विषय वैसे भी दीक्षा के महिमा पर था। और आज विषय पूर्ण करना था। इस वाचना में मन एकदम भावविभोर हो गया। मुझे अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई। और अंत में भावावेश में आकर मैंने कह भी दिया कि 'आज मैंने दीक्षा ली थी।'

योगानुयोग मेरे संसारी भाई-भाभी, मम्मी.... आदि सभी आएँ हुए ही थे। उनको भी यह सबकुछ सुनकर अति संतोष हुआ।

मुमुक्षु कलश की मम्मी भी वहाँ आई हुई थी। श्रीसंघ के सामने कलश को खड़ा कर उसके मम्मी के भी दर्शन करवाएँ। संघ भावविभोर बन गया। राजकुमार जैसे एक के एक बालक को ऐसे कठिन मार्ग पर भेजनेवाली माता सोनल बहन को देखकर संघ ने अश्रुधारा भी बहाई। अब तक कलश की दीक्षा का कोई निर्णय भी हुआ नहीं था, तो भी संघ ने जाहेर में उसका बहुमान किया। वो कल आएँ हुए दुःखी बहन भी यह नजारा देखकर आँसु बहा रहे थे। शायद उनके मन में भी हुआ होगा कि, 'संसार के राग के Track पर मैं तो दुःखी ही हुई, जबकि मेरे विरूद्ध यह बाल मुमुक्षु और उसकी माता तो धन्य बन गए है....'

प्रवचन के तुरन्त बाद शहीद ललितभाई वकील के भाई संजयभाई के घर पगलियाँ थे। उन्होंने जीद करके मेरे संसारी परिवार आदि सभी मेहमानों की नवकारसी खुद के घर तय करवाई।

वे सात-आठ मेहमान खुद की बड़ी(!) गाड़ी में संजयभाई के वहाँ पहुँचे, उसके पहले ही मैं चलते हुए पहुँच गया था। चलनेवालों को Traffic या छोटी गलीयाँ बाधा नहीं देती.... घर देखते ही विस्मृति की धूल उड़ गई '15 साल पहले पू. गुरूदेवजीश्री के साथ जल्दी सवेरे इसी घर में दर्शन हेतु पधारे थे।'

घर पर जाकर उनके संपूर्ण परिवार के समक्ष मैंने मांगलिक प्रवचन दिया। ललितभाई की और उनके श्राविका की सच्चे भाव से अनुमोदना की। पुण्यवंती बहन का लड़का C.A. बन रहा

विहार दिन :

21

मृगशीर्ष सुदी ६दिनांक :

17/12/2015

स्थान :
भिवंडी

है.... यह बात ज्ञात की। मैंने उस बहन को संयम के लिए प्रेरणा की। त्वरीत ही किसी ने कहाँ कि 'उनको तो भावना है ही। और उनके गुरूजी दिशांगनिधिश्रीजी का चातुर्मास भी यहाँ ही हैं।'

मैंने इस श्राविका बहन की संपूर्ण घटना विरतिदूत में लिखी ही हैं। इसलिए वापस लिख नहीं रहा हूँ। परंतु मेरे ध्यान में इतना सविशेष आया कि, 'संपूर्ण परिवार में सच्ची धार्मिकता, परस्पर की सहायक वृत्ति एकदम सहज थी।'

उपाश्रय में आने के बाद कलश के परिवार को इसी साल दीक्षा करने के लिए समझाया, परंतु वे तैयार नहीं हुए।

आज तो न्यायरत्न म.सा. के मम्मी -पापा, मुंबई के हमारे हनुमान जैसे कार्यकर हितेषभाई गाला (C.A.) ,दादर के सुश्रावक गुरूजी पारसभाई आदि बहुत लोग मिलने आए थे। इसमें ही बहुत समय बीत गया।

पू.आ. भगवंत मेरे पूर्वपरिचित थे, मेरे उपकारी भी थे.... उनके समीप बैठकर बाते करने का, उनके अनुभवों का पान करने का मन भी था, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हो पाया। हा! कुछ छंदपलों के लिए मुलाकात जरूर हुई। पूज्यश्री भी उपधान के वरघोड़े, माला आदि के Program में व्यस्त तो थे ही। तो भी मैं यदि समय निकालकर बैठा होता, तो वे समय देते ही। उनकी इस उदारता पर मुझे दृढ़ विश्वास तो है ही। क्योंकि 8-10 महिने पहले ही सुरत में उनके पास रश्मि भाई नाम के हमारी पाठशाला(वाडी पाठशाला - सुरत) के शिक्षक के लड़के जय की दीक्षा थी। तब मैं भी वहाँ उपस्थित था। तब दीक्षा में ओघे के प्रदान के समय उन्होंने सामने से मेरे जैसे छोटे साधु को, अन्य समुदाय के साधु को कहा कि ''इस पर वासक्षेप करो, हाथ लगाओ....''

रात के वक्त उनके शिष्य जय म.सा. (नाम विस्मृत हो गया है) मेरे समीप आएँ। वे हमारे पूर्वपरिचित थे, इसलिए उन्हें मिलने की इच्छा हो वह स्वभाविक थी। उनका आत्मा अत्यन्त गुणसभर था और हैं। त्रिदिवसीय दीक्षा महोत्सव के दौरान इनका उल्लास-आनंद बहुत ही कम मुमुक्षुओं में प्रतिबिंबित हो वैसा था। शांत स्वभाव, बोलना कम, अपार दृढ़ता, बेनमून वैराग्य.... अनुकरणीय ऐसे नूतन दीक्षित के साथ 15 मिनिट बैठना हुआ। साधर्मिक वात्सल्य का आनंद प्राप्त हुआ।

पू.आ.भ. आदि सभी ने वरघोड़े+माला के प्रसंग पर रूक जाने का भारपूर्वक और निखालस हृदय से आग्रह किया पर ज्यादातर मुझे ऐसे प्रसंगों में रूचि कम होने से मैं वहाँ से निकल जाने के निर्णय पर ही मक्कम रहा।

विहार दिन :

22

मृगशीर्ष सुद

७

दिनांक :

18.12.2015

स्थान :

भिवंड़ी

से कल्याण

12 कि.मी.

ब्रह्म

विहार दिन :

22

मृगशीर्ष सुदी ७ दिनांक :

18/12/2015

स्थान :
भिवंडी
से कल्याण
12 K.m.

सही समय पर तैयार होकर, दर्शनादि करकर हमने विहार गतिशील किया। V.S.G. के युवक हमारे साथ आधे रास्ते तक विहार में आने वाले थे, उसके बाद कल्याण वाले युवक जुड़ने वाले थे। इस ग्रुप की सेवा और व्यवस्था अत्यद्भुत और सराहणीय हैं।

''म.सा.! आप तो बहुत तेजी से चलते हो....'' एक युवक ने लगभग दौड़ते-दौड़ते मुझे कहाँ। मुझे आनंद हुआ क्योंकि उसने मेरी गति की अनुमोदना की थी।

''म.सा.! पू. महाबोधि म.सा. की गति भी इतनी ही हैं। उनके बाद इतनी गति वाले आप ही दिखने मिले हो....''उस युवक के इन शब्दों से मेरी प्रसन्नता कम हुई, क्योंकि श्रेष्ठ गति वाला मैं अकेला नहीं हूँ, दूसरे भी है....इस तरह मेरी अद्वितीयता रद हो रही थी।

साधु बनने के पश्चात भी आत्मा ऐसी अतितुच्छ बातों में कैसा फस जाता हैं। यह मैं मेरे भीतर ही देख रहा था। मुझे तब एकदम स्पष्ट ख्याल आया कि 'यह प्रसन्नता और यह दुःख.... दोनों चीजें अहंकार की पैदाश हैं। और 6 कि.मी. की Average से चलने में मैंने कोई वीरता का कार्य नहीं किया था, कोई चमत्कार नहीं किया था, ज्यादा तेज चलकर मैं मोक्ष में जल्दी पहुँचने वाला नहीं था, बल्कि उसमें तो ईर्यासमिति का उपयोग न होने से मोक्ष दूर होने वाला था।'

परंतु जब-जब जीव कषायवश होता है, तब-तब उसके पास सच्ची समझ होने के बावजूद भी वह सच्ची प्रवृत्ति कर नहीं पाता, और वह ही मेरे साथ भी घटित हुआ।

साथ चल रहे युवकों को मेरी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए मैं और तेज चलने लगा। मैं भूल गया कि, 'मुझे तो प्रभु को दिखाना है, युवकों को नहीं। उनकी प्रशंसा से मेरा कल्याण नहीं हैं, परंतु प्रभु की प्रसन्नता से मेरा कल्याण हैं।'

हालाँकि तब भी मनमें ऐसा विचार तो आ ही गया था कि 'यह अनुचित है, यह कषाय हैं। तेज चलना - ईर्यासमिति का पालन न करना वह दोष तो हैं ही, परंतु उससे भी ज्यादा खतरनाक यह कषाय नाम का दोष हैं।' परंतु मैंने कहा ना कि 'मैं कषाय के आधीन हो गया था।'

मैंने देखा कि,'भुवनभूषण म.सा. भी मेरी ही गति से मेरे पीछे-पीछे ही चल रहे थे।' मुझे यह भी पसंद नहीं आया। कोई व्यक्ति मेरे समान बन जाए, यह मेरे लिए असह्य बन गया। इसलिए उनसे अंतर बढ़ाने के लिए भी मैंने मेरी गति बढ़ाई।

यह सब चीजों को पढ़नेवाले को शायद ऐसा लगा होगा कि, 'इतनी छोटी-छोटी सी तुच्छ बातों का इतना लंबा-चौड़ा वर्णन किस लिए?' परंतु मेरी स्पष्ट समझ यही हैं कि कषायों की हानि-

विहार दिन :
22
मृगशीर्ष सुदी ७ दिनांक :
18/12/2015

स्थान :
भिवंड़ी
से कल्याण
12 K.m.

वृद्धि वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात हैं। इसलिए ऐसी बातों पर ज्यादा से ज्यादा लक्ष्य देना ही चाहिए। हमारे संसार और मोक्ष का पाया इन दो बातों पर ही निर्भर हैं।

बीच में एक बड़ा हाई-वे आया। वहाँ कल्याण के युवक खड़े थे। भिवंडी वाले युवकों ने विदाई ली और हम कल्याण वाले युवक नाम की दूसरी गाड़ी में चले।

वहाँ से कल्याण तक का रास्ता चौड़ा बनाने में आ रहा था। इसलिए वहाँ काम चल रहा था। आसपास की दुकानें-घरो को तोड़ दिया गया था। रास्ते पर जगह-जगह पर गटर का पानी या दूसरा पानी भरा हुआ था। रास्ते टूट गए थे, कंकड और पत्थर चुब रहे थे। Traffic भी बढ़ गया था। हमारा विहार मुश्कील हो गया। गति कम हो गई। प्रसन्नता घटने लगी। पानी में चलने की विराधना भी बहुत हुई। Traffic के कारण मन पर बोझ सा लगने लगा.... ऐसी परिस्थितिओं के बीच हम कल्याण पहुँचे।

शुरूआत में ही एक Society में जिन मंदीर था। वहाँ दर्शन किए। मेरा स्वभाव है कि, 'झोली-थेला जमीन पर नहीं रखना। उसमें कोई जीव-जंतु घुस जाए तो?' इसलिए ही मंदीरजी में चढ़ने के Steps के शुरूआत में जो Railing होती हैं,उसमें ही झोली और थेले को लटका देता हूँ। वह जमीन से ऊँचाई पर होने से उसमें जीवों की घुसने की संभावना नाबूद हो जाती हैं। वहाँ भी वैसा ही किया।

मंदीर जी में दर्शन करके मैं आगे बढ़ा। हमारा ठिकाना गाँव में था। 3-4 कि.मी. के बाद हम गाँव के मंदीर में पहुँचे। वहाँ भी दर्शन किए। तीन मंजिल का अद्‌भुत देरासर था। मैं परमात्मा का विशेष भक्त नहीं हूँ। देरासर में शांति से स्तुति बोलना, शांति से स्तवन ललकारना.... यह सब मेरे जीवन में अभी रहा नहीं हैं। बस विधि को पूर्ण करने के लिए ही सब क्रियाएँ करता हूँ। हाँ! उसमें मैं Bore हो जाता हूँ, ऐसा नहीं है परंतु उसमें उत्साह-उमंग हैं, ऐसा भी नहीं हैं। इसलिए ही 'नए-नए मंदिरों के दर्शन करने जाना और इस तरह सम्यग्‌दर्शन को पवित्र करना....' ऐसा उत्साह भी मेरे में नहीं हैं। यह मेरी गलती ही हैं। मैं यह लिख रहा हूँ, तब का.वद 9 का दिन हैं। आराधना भवन का (चैन्नई) चातुर्मास भी पूर्ण हो गया हैं। चंद्रप्रभदादा के सांनिध्य में चातुर्मास था, तो भी संपूर्ण चातुर्मास में ज्यादा से ज्यादा तीन बार ही मैंने चंद्रप्रभ दादा के दर्शन किए हैं। उसमें भी 5 मिनिट से ज्यादा में मंदीरजी में रहा हूँ ऐसा मुझे याद नहीं हैं। हा! जब संगीत के संग भक्ति हो तब मुझे बहुत भाव जगते है और तब में बैठता हूँ।

दर्शन करके बाहर निकला। समाचार मिले कि 'मुख्य उपाश्रय में साध्वीजी भगवंत विराजमान हैं।' वे हमारे समुदाय के ही थे। और दो साल पहले लक्ष्मीवर्धक में उनका चातुर्मास हमारे साथ ही था। वे वंदनादि करने के लिए ही Special एक

विहार दिन :

22

मृगशीर्ष सुदी ७ दिनांक :

18/12/2015

स्थान :
भिवंडी
से कल्याण
12 K.m.

दिन ज्यादा वहाँ रूके थे। मैंने उनको समाचार भेजे कि,'पोरिसी के बाद ही वंदन करने आना।' क्योंकि विहारों में भी एक भी दिन पाठ रह न जाएँ, उसका मैं संभवित प्रयास करता। विहार करके जैसे ही स्थान पर पहुँचता तो त्वरीत ही पहले न्याय म.सा. को निशीथका पाठ दे देता।

हमने स्थानक में रूकने का निर्णय लिया। स्थानक के Hall में पहुँचकर जैसे ही पाठ देने की शुरूआत कर रहा था कि उस ही समय नीचे से 'मत्थएण वंदामि' का शब्द गुंजित हुआ। मुमुक्षु ने कहाँ कि,''साध्वीजी भगवंत को Urgent काम है।'' मैं नीचे गया।

''साहेबजी! हम पोरिसी के बाद ही आते, पर आप जब लक्ष्मीवर्धक में थे, तब दिशा नाम की मुमुक्षु हमारे साथ थी। उसके दीक्षा के भाव दृढ़ न होने से उसने अब तक दीक्षा ली नहीं हैं। अब भी डोंबिवली में उसके भूआसा के वहाँ रहकर College की पढ़ाई कर रही हैं। आप पधारने वाले थे इसलिए Special उसको बुलाया हैं। और उसको वापस 9 बजे निकल जाना पड़े वैसे संयोग हैं। ''साध्वीजी ने जल्दी आने का कारण दर्शाया।

फलतः वहाँ ही, तब ही बातचीत कर ली। अंततः 'दीक्षा न ले सको, तो भी 6 कर्मग्रंथ तक पढ़ ही लेना....' ऐसा निर्णय करवाया। मुमुक्षुबहन खानदान, गुणभरपूर थे। सोच-समझकर खुद के जीवन का मोड़ तय करना चाहते थे। किसी के बहलाने से बहक जाए.... वैसे नहीं थे।

उसके पश्चात श्रावको का आवागमन शुरू हुआ।

''साहेबजी! आप ही गुणहंस म.सा. हो?'' एक बहन ने मुझसे प्रश्न किया। वे खुब उत्साहित नजर आ रहे थे।

''हा! पर आप मुझे कैसे पहचानते हो?''

''आपने भीनमाल में चातुर्मास किया था ना! वहाँ वसंतबालाश्रीजी और मुक्तिप्रज्ञाश्रीजी आपके साथ थे ना! पू. जयानंदसूरिजी म.सा. के शिष्य पू. वाचकविजयजी म.सा. के सग्गे बहन मेरे परममित्र हैं। इन सभी के पास से आपके लिए बहुत कुछ सुना हैं। और आपको पहले एकबार देखा भी हैं। आप मंदीरजी में दर्शन कर रहे थे, तब आपको देखते ही पहचान गई कि, 'ये वह ही म.सा. है....' ''

उस बहन का उत्साह, भक्तिभाव, निखालसता एकदम सच्ची थी। परंतु उसके साथ ही मेरे **पू. गुरूदेवश्री के मुखकमल से सालों पहले सुने हुए शब्दों का स्मरण हुआ।** मेरी दीक्षा के पूर्व की, शायद मेरे जन्म के पहले की वह घटना! पू. गुरूदेवश्री के 2 शिष्यों ने महाराष्ट्र में चातुर्मास करने का निर्णय किया था। तब पू.गुरूदेवश्री ने उनको सावचेत किया था कि, ''वहाँ इस तरह चातुर्मास मत करो। वहाँ कि बहने

विहार दिन :

22

मृगशीर्ष सुदी ७ दिनांक :

18/12/2015

स्थान :
भिवंडी
से कल्याण
12 K.m.

बहुत भावुक हैं। उनकी अतिभक्ति, अतिभावुकता कहीं साधुता का नाश न कर दे....'' परंतु पू. गुरूदेवश्री की आंतरिक इच्छा के बिना उन्होंने महाराष्ट्र में चातुर्मास किया था। और पू. गुरूदेवश्री की भविष्यवाणी सच्ची साबित हुई।

मुझे लगा कि 'ऐसी अतिभावुकता साधुकी साधुता के लिए भयावह तो है ही, **परंतु दोष उन बहनो का नहीं हैं, परंतु जीव के अनादि संस्कारों का हैं।** वे बहनें तो शुद्धभाववाले हैं। साधु को खुद के सग्गे भाई, सग्गे पिता, गुरू, भगवान मानते है, परंतु साधु उनको सग्गी बहन, सग्गी माँ, मात्र साधर्मिक (श्राविका) मान पाएँगा या नहीं?' वह भी देखना पड़ता हैं।

''आप कल्याण में ही रहते हो?'' मैंने पूछा।

''नहीं यहाँ तो मेरा पियर हैं। मैं कराड में रहती हूँ। अभी ही शादी हुई हैं।''

''शादी हो गई? साध्वीजीओ के संपर्क के बाद भी दीक्षा की भावना नहीं हुई?'' मैंने वापस पूछा।

''उन्होंने तो मुझे बहुत समझाया था। पू. वाचक विजयजी ने भी प्रेरणा की थी, परंतु मेरा मन तैयार नहीं हुआ। साहेबजी! आपने आज व्याख्यान तो नहीं रखा हैं, परंतु दुपहर को व्याख्यान रखो ना। भाई लोग भी आएँगे और हम 10-20 लोग तो आएँगे ही।''

पू. अक्षय विजयजी (पूज्य जयानंदसूरिजी के शिष्य) के पिताजी धनजीभाई आदि कल्याण में ही रहते थे। वे भी वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने भी दुपहर के व्याख्यान की बात का आग्रह किया।

सा. वात्सल्यनिधिश्रीजी ने लक्ष्मीवर्धक में बहनों को सम्यक्त्व के 67 बोल की सज्झायका बहुत ही सुंदर अभ्यास कराया था। वे भी वंदन करने के लिए आए थे। छोटे होने के बावजूद भी संघ-शासन के लिए अच्छा काम कर सके, वैसी उनकी प्रतिभा हैं।

दुपहर को व्याख्यान दिया। 5-7 भाई और 8-10 बहनें!

शाम को कुछ समय प्राप्त हुआ, इसलिए विरतिदूत के लिए लेख लिखने बैठा। अब तो थोड़ी देर ही हुई होगी और एक भाई आए। समीप में बैठ गए। मुझे अच्छा नहीं लगा। बड़ी मुश्कील से तो समय मिलता था और यह भाई यदि समय खा जाए तो? इसलिए मेरे स्वभाव से विपरित होकर थोड़े से कडवेवचन के साथ मैं बोल बैठा,''भाई! कुछ काम हैं? या ऐसे ही आए हो?''

मैं भूल गया था कि 'साधु के पास आने के लिए कोई काम होना जरूरी नहीं हैं। साधु के दर्शन, सत्संग, परिचय यह ही तो सामनेवाली आत्मा के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण काम हैं। दूसरे सभी कार्य तो गौण हैं।'

''नहीं साहेब! कोई कार्य तो नहीं हैं। सिर्फ आपके दर्शन-

विहार दिन :
22
मृगशीर्ष सुदी ७ दिनांक :
18/12/2015

स्थान :
भिवंडी
से कल्याण
12 K.m.

वंदन करने के लिए आया था।'' कुछ उदास-भाव से इतना कहकर वे खड़े हो रहे थे। और खड़े होते-होते ही उन्होंने अंतिम वाक्य कहाँ, ''पू. जयानंदसूरिजी म.सा. मेरे संसारी भाई हैं....''

और मेरी Ballpen अटक गई। मुझे झटका लगा। मुझे स्मरण हुआ की ,'पू. जयानंदसूरिजी राजस्थान छोडके कल्याण में Settle हुए थे। यहाँ से ही उन्होंने दीक्षा ग्रहण की थी। मैंने ही तो उनकी आत्मकथा में यह सब लिखा था। मैं आज उस ही पवित्रभूमि पर आया था। एक उत्तम आत्मा की यह कर्मभूमि थी।'

मुझे ज्यादा दुःख तो उस बात का था कि, 'मैंने उनके साथ अयोग्य व्यवहार किया था।' त्वरीत ही मेरा मन विचारशील हुआ कि,'अगर ये भाई जयानंदसूरिजी म.सा. के भाई न होते, तो भी मेरा बेढंगा व्यवहार तो अनुचित ही था। क्योंकि श्रावक तो हमारे पास भक्तिभाव से ही आता है ना? सद्भाव से ही आता है ना? उसे निषेध करना हो तो नम्रभाव से भी कह सकते हैं ना कि,''भाग्यशाली! आप बाद में आ सकोगे तो अच्छा होगा, अभी थोड़ा लिखना बाकी है ना....'' इत्यादि।

''आप उनके सग्गे भाई हो?'' Ballpen को टेबल पर रखकर मैंने अत्यंत उत्कंठा से पूछा।

''हाँ जी!'' भाई ने प्रत्युत्तर दिया।

''क्या बात कर रहे हो? भाग्यशाली हो। ऐसे उत्तम आचार्य भगवंत के भाई बनने का सौभाग्य किसको प्राप्त होता हैं?'' मेरे मुख में से सहजता से ही शब्द बह गए।

''सौभाग्य तो क्या? महापुरूष के भाई बनने मात्र से ही मेरा कल्याण थोड़ी ना होने वाला हैं? परंतु 'वे मेरे भाई है,' इस बात का गौरव बहुत हैं,'' वे भाई फिर से बैठे और नम्रतापूर्वक बोले। (भाई का नाम भूल गया हूँ।)

वहाँ तो धनजीभाई भी आएँ।''म.सा.! सुरेशभाई बाफना अभी आप के दर्शन करने आ रहे हैं।''

''भले आवे'' मैंने जवाब दिया। सुरेशभाई बाफना ने ही भिनमाल में हमारा चातुर्मास करवाया था। पू. जयानंदसूरिजी म.सा. के परमभक्त वो श्रावक आचार-विचार के विषय में बहुत ही चुस्त हैं। अबजो की मिलकत के मालिक! परंतु स्वाध्याय का रस भी बहुत अच्छा! 125 गाथा का स्तवन कंठस्थ किया और 350 गाथा का स्तवन गोख रहे हैं। वर्धमान तप की ओलीयाँ भी करते हैं। किसी भी प्रकार का पक्षराग नहीं। सब जगह जाते हैं। जहाँ अच्छा मिले, वहाँ पहुँच जाते हैं। स्वभाव से एकदम स्पष्ट! सच्ची बात किसी के मुँह पर कहने में भी उन्हें शरम-संकोच होता नहीं हैं। अलबत, उनकी थोड़ी Polishing बाकि है.... ऐसा मुझे लगता हैं।

थोड़े ही समय में वे आ पहुँचे। ''म.सा.! आज सुबह ही

विहार दिन :

22

मृगशीर्ष सुदी ७ दिनांक :

18/12/2015

स्थान :

भिवंडी

से कल्याण

12 K.m.

मुंबई से यहाँ नजदीक में ही राजेन्द्रसूरिजी म.सा. के गुरूमंदीर के दर्शन के लिए आया था।'' (यह भाई Mumbai-VanKhede-Stadium के पास रहते हैं। वहाँ से लगभग 50 कि.मी. से भी ज्यादा कल्याण का यह स्थान होता हैं।) मुझे पता नहीं था कि 'आप यहाँ विराजीत हो।' घर पहुँचने के पश्चात धनजीभाई का Phone आया...., इसलिए वापस आया। बाद में आप दूर चले जाओगे, तो दर्शन-वंदन का अवसर प्राप्त नहीं होगा।''

उसके बाद तो बात-बात में हमारे बीच दो मुख्य विषयों पर चर्चा चली।

1. संयमीओं के विहार में उपयोग में आती व्हीलचेयर, डोली के विषय पर.... उसमें खर्चे आदि में होती तकलीफें के विषय में....

2. संयमीओं के परिवार की आर्थिक असंतुलनता....

लगभग 2-3 घंटे इन सभी चर्चाओं में व्यतीत हुए।

धनजीभाई आदि सभी ने अपूर्व उल्लास प्रदर्शित किया। इस विषय पर कुछ मजबूत निर्णय लेने का भी विचार दर्शाया। (हालाँकि, 'उसके बाद क्या नतीजा आया?' यह तो मेरे ध्यान में नहीं हैं और मैंने पूछवाया भी नहीं हैं, परंतु वे खुद से ही इन विषयों में कुछ न कुछ कार्य करते ही रहते हैं।)

अंत में प्रतिकम्रण कर हम निंद्रा देवी की शरण में खो गए।

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष सुद

८

दिनांक :

19.12.2015

स्थान :

कल्याण से

बदलापूर

15 कि.मी.

उत्तर पारणा

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :

19/12/2015

स्थान :

कल्याण टू

बदलापूर

15 कि.मी.

जल्दी सवेरे हमने विहार शुरू किया। वो कराडवाले बहन कल हमको कहके ही गए थे कि, ''आप कराड तो आने वाले नहीं हो, इसलिए कल सवेरे मैं आपको वंदन करने आऊँगी।'' मुझे लगा ही था कि, 'वे आएँ बिना नहीं रहेंगे।' परंतु हमने विहार किया तब तक तो वे नजर नहीं आए।

मैं सुर्योदय के बाद ही विहार करता हूँ, या उजाला होने के बाद ही विहार करता हूँ, ऐसा नहीं हैं। परंतु सामान्यतः से तो इतना निर्णय किया है कि 'सुर्योदय से 45 मिनिट पहले विहार किया जाएँ।' इसका फायदा यह होता है कि 'हम समयानुसार पहुँच जाते हैं और ज्यादा देर अंधेरे में विहार भी नहीं करना पड़ता।' लगभग सुर्योदय से 30 मिनिट पहले तो अच्छा उजाला हो जाता हैं।

हम निकले.... धनजीभाई आदि साथ में हमे अलविदा करने आएँ ही थे। लगभग 0.5 कि.मी. आगे बढ़ा, वहाँ तो पीछे से Activa पर वे बहन आ गए। जल्दी से Activa Park कर दौड़ते-दौड़ते मेरे आगे आ पहुँचे, ''म.सा.! वंदन करूं?'' अनोखा उत्साह, जबरदस्त सद्भाव, अवर्णनीय भक्तिभाव....

रास्ते के बीच 'खुद के कपड़े बिगड़ेगे' ऐसा तुच्छ विचार किए बिना व्यवस्थित वंदन कर, 'शातामें रहना, भविष्य में कराड पधारना' ऐसी विनती कर उन्होंने विदाई ली।

मैं इस घटना को जानबुझकर बराबर आलेख रहा हूँ।

श्रावक हमारी उत्तमोत्तम द्रव्य से भक्ति करे, **यह उनका कर्त्तव्य है,** परंतु हम उस भक्ति के फंदे में फंस न जाएँ, उसमें आसक्त न हो जाएँ, **यह हमारा कर्त्तव्य हैं।**

इस तरह से भोले-भद्रिक बहने उत्कृष्ट भक्ति करे, यह उनके लिए तो कल्याणकारी है, परंतु संयमीओं को, उनमें भी साधुओं को खुद के वैराग्य भाव को एकदम अकबंध रखना हैं....

उस बहन को ससुराल में दुःख नहीं है....

उस बहन की आर्थिक परिस्थिति एकदम हरीभरी है....

उस बहन का मेरे साथ किसी प्रकार का परिचय नहीं है....

उस बहन को मेरे से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं है....

तो भी उनके आत्मा की भावुकता, निर्मलता उनको ऐसी प्रवृत्ति करने के लिए प्रेरणा देती हैं। जल्दी सुबह उठ जाना, म.सा. निकल गए हो तो भी Activa लेकर पीछे आना, रास्ते में ढूँढ लेना और वंदन कर लेना.... यह सब उनके भक्तिभाव का सूचन हैं।

परंतु यह सब कुछ यदि साधु को अच्छा लगने लगे, साधु परिचय को टिकाने-बढ़ाने का प्रयास करें, **तो आगे जाकर**

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :

19/12/2015

स्थान :

कल्याण टू

बदलापूर

15 कि.मी.

उसका अधःपतन होगा, यह निःसंदेह समझ लेना चाहिए।

अच्छे से अच्छा साधु भी पतनाभिमुख हो जाएँ, वैसी लोभावनी-सोहावानी यह नागिनों की दुनिया हैं। **वे बहने नागिन नहीं है, परंतु उनके प्रति उत्पन्न होता हमारा नाजुक लगाव नागिन है....** यह अच्छी तरह ध्यान में लेने जैसा हैं।

मैं बदलापुर पहुँचा, वहाँ तो हमारे मुमुक्षुओं ने समाचार दिए कि ''यहाँ तो 8-10 साध्वीजी भगवंत आए हुए है, तथा वे मंदीरजी के नीचे उपाश्रय में ठहरे हैं। इसलिए हमें Flat में रूकना पड़ेगा। साध्वीजी भगवंत अपने ही समुदाय के हैं। पुने में पू.आ. जिनसुंदरसूरि म.सा. के साथ चातुर्मास था। वे कह रहे थे कि,''हम गुणहंस म.सा. को पहचानते हैं....''''

हमको मुख्य उपाश्रय नहीं मिला इसलिए मुमुक्षुओं को थोड़ा दुःख हुआ है, ऐसा मुझे लगा। मैंने तुरंत ही सूचन किया, ''हमसे ज्यादा जरूरत साध्वीजीओ को होती हैं। आपको मालूम ही तो हैं, कि बारडोली में हमने साधु के लिए बनाया गया बड़ा उपाश्रय 19 साध्वीजी को भगवंतो को दिया था और साध्वीजी के लिए बनाए गए छोटे उपाश्रय में ही तो हम ठहरे थे।''

उनके मन में तुरंत ही बात बैठ गई।

साध्वीजी भगवंत वंदन करने के लिए आएँ। 1-2 साध्वीजी भगवंत तो सूरत के ही थे। वे मुझे विरतिदूत से पहचानते थे, बाकी मिलना तो प्रथमबार ही हुआ था। उन्होंने पू.आ. जिनसुंदरसूरिजी म.सा. के प्रवचन-संयम-स्वभाव-लगाव आदि की भरपेट अनुमोदना की। मैंने भी कहाँ ''वे तो हमारे **पू.गुरूदेवश्री के गौतमस्वामि जैसे हैं।** और मेरी दीक्षा में सबसे प्रथमबार मुझे वस्त्र पहनानेवाले भी वे ही थे।''

साध्वीजीओ ने कहाँ, ''विहार करने के पहले जब हम अंतिमबार वंदन करने गए थे ना, तब एक माँ कि तरह हमको हितशिक्षा दी थी। विहार में संभाल के चलना, बाएँ ओर चलना, साथ में परंतु आगे-पीछे चलना.... और बहुत कुछ....''

पू.सा. भ. संवेगरत्नाश्रीजी और सा.भ. विरतिरत्नाश्रीजी का यह Group संयमी-तपस्वी-स्वध्यायी ज्ञात हुआ। उसमें प्रधानमंत्री मोदी जी की भूमिका पू.सा. विरतिरत्नाश्रीजी अदा कर रहे हो वैसा लगा। उनकी शक्ति अच्छी हैं। अंग्रेजी में बोल सकते है, लिख सकते है.... शिविर कर सकते हैं।

आज मु. न्यायरत्न वि. का अंतिम पारणा था। कल से वे बड़ी ओली चालु करने वाले थे। गोचरी वापरने के पश्चात मुझे उस बात का ख्याल आया। वे तो अब भी वापर रहे थे। उनको गोचरी मंगानी बाकी थी। दूसरे सब भी वापर ही रहे थे। 'मुझे यह अंतिम पारणा करवाने का लाभ मिलेगा' ऐसा सोचकर बहुत खुशी हुई। बाजु के ही Flat में गोचरी जाना बाकी था। मैं वहाँ गया, पारणें के लिए रोटी-सब्जी लेने की भावना नहीं थी। और

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :

19/12/2015

स्थान :

कल्याण टू

बदलापूर

15 कि.मी.

वैसे भी पूछताछ करने पर लगा कि, 'साधु-साध्वीजी ज्यादा होने से और हम बाजु में ही होने से उन्होंने रसोई ज्यादा बनाई थी।'

मैंने सामान्य समझ दी कि, ''यह हमारे लिए दोषित गिना जाता है, हमको नहीं चलता। दूसरा क्या हैं?''

तब उनका दिमाग चला और वे बोले, ''म.सा.! लड्डु हैं।'' (शर्द ऋतु होने की वजह से मेथी के, गुंद के लड्डु सब जगह होते हैं, परंतु उनको दुपहर को उस चीज की विनति करने की समझ नहीं थी।)

मुझे उसका ही खप था। उन्होंने 3 लड्डु वहोराए। मैंने बहुत उल्लास से न्याय म.सा. को अंतिम उत्तर पारणा कराया। ऐसा लाभ तो बहुत ही कम मिलता है ना?

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष

८

दिनांक :

19.12.2015

स्थान :

बदलापुर से
Midway House
8 कि.मी.

भाग्य का चमत्कार

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :

19/12/2015

स्थान :

बदलापुर से

Midway House

8 कि.मी.

शाम को हमारा विहार था। जब हम भिवंडी या कल्याण में थे, तब मुंबई से एक साध्वीजी भगवंत ने हमको बड़ी थैली भरकर अलग-अलग प्रकार की उपधि भेजी थी। वे मुझे मिले भी नहीं हैं, परंतु वे पू. गुरूदेवश्री को बहुत उपकारी मानते है और मैं उनका शिष्य इसलिए और विरतिदूत के हिसाब से भी मुझ पर विशेष भाव.... इसलिए उन्होंने उपधि भेजी थी।

उनके भाव तो अच्छे थे, परंतु यह उचित नहीं था। साधु-साध्वीजीओ के बीच में ऐसा उपधि का व्यवहार शास्त्र -मान्य नहीं हैं। शास्त्र के अनुसार तो साधु को (साध्वीगणाधिपति को) साध्वीजीओ की सभी उपधि की व्यवस्था करनी होती हैं। उसके विपरीत तो अब उल्टी गंगा बह रही हैं। तथा हमको जरूरत भी नहीं थी, मंगाई भी नहीं थी।

यह सब उपधि मैं भिवंडी में ही वैयावच्चखाते में दे सकता था, परंतु यदि मैं ऐसा करता हूँ और साध्वीजी ऐसा मान ले कि,'म.सा. ने सब उपधि रख ली हैं और वापर रहे हैं।' तो भविष्य में वापस नई उपधि भेजेंगे। उसके बदले यदि उनके हाथ में ही यह उपधि पहुँच जाएँ, तो अगली बार भेजेंगे ही नहीं।

वह उपधि मुमुक्षुओं के सामान के साथ बदलापुर आई थी। मैंने नम्रभाव से चिट्ठी लिखकर वहाँ नीचे रहे हुए साध्वीजी को उपधि+चिट्ठी देकर कहाँ, ''यह सब कुछ इस Address पर भेजना हैं। यहाँ से किसी भी श्रावक का साथ मिल जाएँगा। हमको अभी ही विहार करना हैं।'' ओर हमने वहाँ से प्रयाण किया।

मेरी Fits कि गोली खाली होने आई थी। अब रास्ते में पुना तक कोई बड़ा Center आने की शक्यता कम थी। इसलिए यहाँ से ही गोलीयाँ लेनी जरूरी थी। हमारे साधु अब दवा की दुकान से ही दवा लेकर आने की प्रक्रिया में कुशल हो गए हैं। एक जैन की दुकान मिल गई। वहाँ से दवा लेकर हम आगे बढ़े। मुमुक्षुओं के सामान को आगे पहुँचाने की कोई व्यवस्था हुई नहीं थी। सामान बहुत होने से मुमुक्षु उस सभी सामान को उठाकर विहार करने में असमर्थ थे। दवाई की दुकान वाले जैनभाई को ही वह कार्य (जवाबदारी) सौपकर हमने विहार गतिशील किया।

रास्ते में Police Station आया। उनकी सम्मति लेकर अंदर बैठके हमने पानी पीया। पहले तो Police हमको संदिग्ध-विचित्र नजर से देख रहे थे, परंतु हमारी मुखाकृति-व्यवहार को देखके उनको लगा कि, 'यह सभी साधु बड़े परिवार के, खानदान घर के हैं।' उसके बाद उन्होंने बहुत अच्छा सत्कार किया।

जैन साधु बहुत अजब-गजब प्रकार के भिक्षु हैं। वे भिक्षा

विहार दिन :

23

मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :

19/12/2015

स्थान :

बदलापुर से

Midway House

8 कि.मी.

मांगते है....' दीन बनकर नहीं, परंतु एक प्रकार की खुमारी से। **उनके पास सब कुछ हैं, तो भी कुछ नहीं हैं।** अथवा ऐसा कहो कि **कुछ भी नहीं है, तो भी सब कुछ हैं।**

ठंड़ी में जीव को Blanket की आवश्यकता होती है, परंतु उसके पास ना हो तो एक प्रकार के अभाव का महसूस होता हैं। परंतु गर्मी में Blanket तो क्या, कंबल की भी अपेक्षा नहीं होती। तब जीव को कंबल आदि नहीं होने की कमी का ऐहसास होता नहीं। इसलिए तब कुछ भी न होने के बावजूद भी वह दुःखी है, ऐसा कोई मानता नहीं हैं।

सार यह आया की चीज चाहिए, और न मिले तो दुःख! परंतु यदि चीज चाहिए ही नहीं, तो वह मिले या नहीं मिले.... दुःख गिना ही नहीं जाता।

सच्चे साधुओं को हजारों-लाखों-करोड़ों चीजों में ऐसा है कि उनको वह चाहिए ही नहीं, और इसलिए उनको वह न मिले तो भी वे सुखी हैं। जबकि बिचारे अज्ञानी संसारीओ को अनेकानेक चीजे चाहिए। तीव्र इच्छा होती है और इसलिए वह प्राप्त न हो तो वे दुःखी होते हैं।

परस्पृहा = पर व्यक्ति+चीजों की इच्छा वह ही दुःख!

निःस्पृहता वह ही सुख!

यह व्याख्या महामहोपाध्याय यशोविजयजी ने **ज्ञानसार** मे बताई हैं। पंचसूत्रकार ने भी 'अविक्खा अणाणंदे'= अपेक्षा, वह ही दुःख.... ऐसा बताया हैं। यह सब कुछ अब बराबर पल्ले पड़ता हैं।

यदि आप यह पदार्थ सही तरीके से सोचोंगे, तो दानांतराय-भोगांतराय-लाभांतराय आदि का अर्थ आपकी आँखों के सामने नाचने लगेगा।

दान देने की इच्छा हो, तो भी किसी भी कारण के वश से वह न दे सके और जीव को दान में विघ्न आने की अनुभूति हो ता वह **दानांतराय!**

केवलज्ञानी तीर्थंकरों को तो दान देने की इच्छा ही नहीं हैं, इसलिए उनको दान देने में विघ्न आने का अनुभव होता ही नहीं हैं, इसलिए दानान्तराय नहीं हैं।

यह पदार्थ हम कभी शांति से सोचेंगे। भाई! अब आगे बढ़ते हैं।

हम आगे बढ़े.... परंतु समयानुसार बहुत Late हो जाने की वजह से इच्छित जगह पर पहुँचना हमारे लिए असंभवित था। वैसे भी शाम को विहार में हमारी रूकने की जगह अनिश्चित ही होती हैं। जहाँ जो जगह मिल जाएँ, वह ही हमारा उपाश्रय!

रास्ते के Right Side पर मेरा दृष्टिसंचार हुआ। वहाँ नई बड़ी Building बनने के लिए Foundation बनाने का कार्य

विहार दिन :
23
मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :
19/12/2015

स्थान :
बदलापुर से
Midway House
8 कि.मी.

चल रहा था। और इस जगह पर कैसे Flat बनेंगे उसे दर्शाने के लिए एक Sample Flat रास्ते से नजदीक में बना हुआ था। मुझे उस क्षण ही ऐसा हुआ कि, ''यहाँ ही ठहर जाएँ।'' हम काम करनेवाले मुकादाम के पास गए। उनको बात की, परंतु वहाँ के मुख्य व्यक्ति ने कहाँ कि, ''सेठ तो निकल गए है, चाबी मेरे पास नहीं हैं।''

मुझे पता चल गया कि, 'चाबी तो है, पर चाबी देने की इच्छा नहीं हैं।' इसलिए सेठ को पूछने की तैयारी भी नहीं हैं। हमने देखा की वहाँ से ही Cross रास्ते से नजदीक के गाँव में कच्चे रास्ते से जाना शक्य था, परंतु वहाँ घासादि की विराधना होने से हम वापस Main Road पर आकर 100-150 कदम आगे बढ़े। वहाँ से गाँव में जाने का कच्चा रास्ता था। गाँव 1/2-3/4 कि.मी. अंदर था। वहाँ किसी अजैन मराठी भाई के घर में रूकना पड़े, वैसा था। आने-जाने का 1.5 कि.मी. बढ़ रहा था.... वसति संसक्त थी.... इन सभी के कारण मेरा मन नहीं माना। मन में वह ही विचार घुमराता रहा कि, 'उस Sample Flat में रूकने को मिले तो अच्छा।'

शास्त्र में कहाँ है कि **'मणसा देवाणं, वयसा रायाणं'**.... देवों को तो इच्छा मात्र से ही इच्छित वस्तु मिलती हैं। राजा को बोलना पड़ता हैं और उसे इच्छित वस्तु मिलती हैं।

आज मैं देव के तुल्य बना, क्योंकि मैं इसी विचार में आरूढ था, और वहाँ ही कल्याण की ओर जाती हुई एक Skoda Car रास्ते पर ही खड़ी रही। एक नौजवान नीचे उतरा। हम Main Road से थोडे अंदर कच्चे रास्ते पर थे। और उसने ड्राइव चलाते-चलाते भी हमें देख लिया था। तुरंत ही हमारे पास आकर कहाँ, ''म.सा.! मत्थएण वंदामि! म.सा. मैं जैन हूँ। क्या काम है?''(वे भाई हिन्दी बोल रहे थे। अब आगे गुजराती भाषा हमारे लिए दुर्लभ बनने लगी थी।)

''हमको सिर्फ आज रात रूकने के लिए जगह चाहिए। इस गांव में 3/4 कि.मी. जाना और सुबह वापस आना.... उसके बजाय तो यह आगे Road के पास ही Flat बन रहे हैं वहाँ 1 Sample Flat हैं, तो क्या वे रहने कि सम्मति नहीं दे सकते।''

''अरे! म.सा.! इस Project का मालिक मेरा दोस्त हैं। भले वह अजैन हो, पर यह तो एक मिनिट का काम है.... आप चलीए।''युवक जबरदस्त उत्साह-दृढ़ता से बोला। और हमारे साथ ही चलने लगा। चलते-चलते एक Phone कर लिया, मालिक के साथ बात कर ली। वहाँ के मुख्य मुकादम को हाथ में फोन दिया....10-15 Second में ही उस मुकादम ने हमको आवकार दिया, त्वरीत ही Flat खोल कर दे दिया।

हा! कैसी दुनिया हैं? **पैसे और पहचान इन दो चीजों से सब कुछ होता है....**

विहार दिन :
23
मृगशीर्ष सुदी ८ दिनांक :
19/12/2015

स्थान :
बदलापुर से
Midway House
8 कि.मी.

''कल म.सा.! आप कहाँ रूकने वाले हो? नेरल में ना? वहाँ हमारे समाज का Function हैं।'' सुट-बुट में सज्ज उस युवक का साधु भगवंतों के प्रति का अहोभाव बहता हुआ दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था कि **'भले ही भोगवाद बड़ी मात्रा में दुनिया में व्याप्त हो चुका हैं.... परंतु वह त्यागवाद के सामने हारता ही है, झुकता ही है, शरण में आता ही है....'**

हमारी सब व्यवस्था कर के उस युवक ने विदाई ली।

हमको उस FlatU की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, परंतु पुण्यप्रभाव से 'जंगल में मंगल' कैसे होता है, उसको दर्शाने के लिए बता रहा हूँ कि सुरत-मुंबई में Posh Area मे आलिशान Furniture और नई प्रकार की Tiles वाला Flat कैसा होता है? वैसा ही आलिशान और Ready Flat और वो भी एक ही Flat, घोर जंगल जैसे स्थान में रहा हुआ फ्लेट हम 5 साधु+3 मुमुक्षुओं को रात्रि विश्राम के लिए मिला। संपूर्ण Pack होने से पर्वतों के बीच में रहने के बावजूद ठंडी की चिंता भी हमें रहीं नहीं। जमीन पर रहा हुआ जाने कि एक Square रेल्वे का डब्बा न हो, वैसा ही वह Flat था।

मेरी जिंदगी मे बारबार मैंने अनुभव किया है कि जब संयमपालन करने का सच्चा भाव उछलता हो और तब आवश्यक स्वरूप में कोई इच्छा हो आवे, तो कुदरत हमको नहीं सोची हुई मदद भेजती हैं। जिसको हम **'पवित्रभावों से पुण्य तत्काल ही उदय में आया'** ऐसा कह सकते हैं।

उस Flat में पार्श्वनाथ का बड़ा Photo भी था। मुझे पता चल गया कि 'जैन मित्रों के परिचय की वजह से यह अजैन मालिक भी प्रभु पार्श्व के प्रति थोड़ा बहुत श्रद्धावान बना होगा।'

Road से सिर्फ 10-15 कदमों कि दूरी पर ही Flat था। चारों ओर खुली जमीन! सुबह या रात को स्थंडील-मात्रु जाना हो तो भी कोई चिंता नहीं। साधुओं ने Road के पास की जमीन मात्रु परठने के लिए ढूँढ़ ली। उसके पश्चात प्रतिक्रमण आदि करके हम मीठी निंद के वश हो गए।

विहार दिन :

24

मृगशीर्ष सुद
१०

दिनांक :
20.12.2015

स्थान :

Midway House
से नेरल
11 कि.मी

चेतो धनवान !

विहार दिन :

24

मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :

20/12/2015

स्थान :

Midway House
से नेरल
11 कि.मी

मृगशीर्ष सुद 9 का क्षय था। सवेरे यथासमय तैयार होकर हमने विहार शुरू किया। आज का विहार सोचा था उससे कम निकला। नेरल Railway Track को हमने Cross किया, तब वहाँ ही शरीर में एक Electric Shock जैसा अनुभव हुआ। Road के आसपास माँस-मच्छी की दुकानें.... जीते जी चमडी उतारने के बाद मरे हुए और लटकाने में आए मुर्गे.... बहने दूधी-केले को समारते हो उसी तरह सरलता से और Speed से मुर्गे के टुकड़े करता हुआ वह क्रुर आदमी.... परमाधामी का और नरक की यादें ताजी कर दे वैसा हेवान.... लकड़े के साधन और बड़े खंजर के परस्पर टकराने से आती हुई ठक-ठक आवाज.... आवाज जाने के मरे हुए मुर्गे चीख नहीं रहे हो वैसी.... ऐसा वहाँ वातावरण उत्पन्न हुआ था।

चाहे उतना संसाररागी मानव भी कंप उठे, वैसे वे भयानक दृश्यों को देखने के बावजूद भी उस परिस्थिति में कुछ भी करने में लाचार हम तुरंत ही नजर हटाकर जल्दी-जल्दी आगे चलने लगें। परंतु मन में विचारों का घमासान भी तेज गति से चलने लगा।

'शास्त्रों में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश आदि स्थानों को 'अनार्य देश' नाम से संबोधित किया गया हैं। संप्रति महाराजा के बाद इन सभी स्थानों में धर्मप्रचार हुआ। परंतु आज भी इस हिंसकता को देखकर लग रहा है कि **100% पूर्वकाल में यह अनार्यदेश होगा ही।'**

विचार और आगे बढ़े....

'शायद ऐसा ही होता होगा कि 'ये मुर्गे दूसरे कोई नहीं, परंतु पूर्वभव के कसाई की होंगे। कसाई के भव में उन्होंने मुर्गों को काटने का पाप किया होगा, इसलिए इस भव में वे भी कसाईयों के हाथ से कट जाने के दुःख को भुगत रहे हैं।

हा! परंतु इस चीज को सोचकर हमें उनपर करूणा बंध नहीं करनी हैं। सभी नरक के जीव पूर्वभव में पापी ही थे ना, इसलिए तो नरक में उत्पन्न हुए है, तो भी नारकीओ पर तो हमे करूणा भाव ही रखना हैं।'

'कसाई पापी है, पाप मुक्त बने, यह हमारी भावना वह **भाव करूणा।'**

'मुर्गीयाँ दुःखी है, वह दुःखमुक्त बने, यह हमारी भावना वह **द्रव्य करूणा।'**

विचारों ही विचारों में हम थोड़े आगे निकल गए। बाद में किसी को उपाश्रय-मंदीर के बारे में पूछकर वापस पीछे फिरे। बगीचे के तालाब के छोटे Shortcut रास्ते से मंदीर पहुँचे। दर्शन करके उपाश्रय पहुँचे। दोरी बांधने का मेरा प्रिय कार्य संपूर्ण

विहार दिन :
24
मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :
20/12/2015

स्थान :
Midway House
से नेरल
11 कि.मी

कर में सीधा स्वाध्याय में मशगुल हो गया। न्याय म.सा. आएँ और हमारा निशीथ का पाठ चालु हुआ।

'मत्थएण वंदामि', पोरिसी के आसपास मैंने आवाज सुनकर दरवाजे की ओर देखा और आश्चर्यचकित हो गया। ''स्नेहल!(नाम बदल के लिखा है) तूं यहाँ कहाँ से?''

वह मेरा संसारी अवस्था का परममित्र था। एक दिन वो था जब वह मेरे साथ दीक्षा लेनेवाला था। परंतु कुछ कारणसर वह दीक्षा न ले पाया। मम्मी-पापा का एक का एक ही लड़का और सिर पर परिवार की, दो बहनों की जवाबदारी थी। बचपन में हर साल, एक बार उसे Hospital में जाना ही पड़ता। उस बात का मैं गवाह था। उस समय वह मेरे शिष्य जैसा था, परंतु मेरी दीक्षा के बाद 20 सालो में सिर्फ 2 बार ही मिलना हुआ था। आज तीसरी या चौथी बार वह मिल रहा था। उसके प्रति के लगाव के कारण मुझे आनंद भी हुआ और ऐसे नेरल जैसे स्थान में मिलने आया हुआ देखकर आश्चर्य भी हुआ।

भले मैं साधु था और वह संसारी था, परंतु 20 साल पहले तो हम दोनों कल्याण मित्र ही थे। और बहुत सालों के बाद मिल रहे दोस्त कैसे बात करते हैं?

मुझे इतना पता था कि वह अब सुरत छोड़कर मुंबई रहता था। शादी हो गई थी, नालासोपारा या मलाड के आसपास रहेवास था।

''क्यों आज अचानक ,और वह भी इतने दूर? मिलना ही था तो भिवंडी आ जाना था ना! नजदीक पड़ता....''

''वहाँ ही आने की इच्छा थी....'' बैठते हुए वह बोला। ''परंतु तब छुट्टी का दिन नहीं था, और चालु दिनों मे ऑफिस जाना जरूरी हैं। नहीं तो पगार कटती हैं।'' उसके शब्दों से मुझे बहुत कुछ समझ में आ गया। वह परममित्र मुझे 20 साल में 2-3 बार ही क्यों मिला? वह भी समझ में आ गया। **संसार की अपार चिंताओं से लिप्त हृदय में तीव्र इच्छा हो तो भी वह खुद की मरजी से क्या कर सकते हैं।**

''आज रविवार था, ऑफिस में छुट्टी थी। और मुंबई Local का अंतिम स्टेशन है यह नेरल! आगे के स्टेशन पर आने के लिए मुझे Local नहीं मिलती और मुझे दूसरी व्यवस्था करनी पड़ती। और आप तो इतने दूर चले जानेवाले हो कि वहाँ तक आना हमारे लिए लगभग नामुमकीन-सा हैं।'' उसने बहुत सारे कारण एक साथ बता दिए।

''तू अब भी भाड़े के घर में ही रहता हैं?'' मैंने वितर्क किया। सालों पहले जब वह मिलने आया था, तब उसने बात की थी कि, ''मुंबई में भाड़े के घर में रहता हूँ। मालिक हर 11 महिने में घर खाली करवाता हैं, नहीं तो भाड़े पर रहने वाला 'दादा' बन जाता है.... इस तरह हर 11 महिने-महिने में घर बदलकर थक गया हूँ। परंतु दूसरा कोई उपाय नहीं है....''

विहार दिन :

24

मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :

20/12/2015

स्थान :

Midway House से नेरल

11 कि.मी

इस बात का मुझे आज सालों बाद स्मरण हुआ। एक साधु के तौर पर मुझे इस सांसारिक बात में रूचि नहीं लेनी चाहिए, परंतु उस समय की उसके मुख पर की वेदना और आँख के अश्रु आज भी मुझे याद आएँ। और , वह मेरा साधर्मिक हैं। यदि खुद की आवश्यकताएँ भी पूर्ण ना कर सके, तो वह धर्म हारने ही वाला हैं। उस विचार से मैं उसे पूछे बिना नहीं रह सका।

''अभी ही Loan पर घर लिया हैं। सालों तक Loan भरना पड़ेगा। परंतु हर 11 महिने में घर बदलने के Tension से मैं मुक्त हुआ हूँ। मंदीर के नजदीक में ही मिल गया हैं। Area भी अच्छा हैं।'' उसने संतोषजनक प्रत्युत्तर दिया।

''तेरी एक बहन ने तो दीक्षा ली है ना?''

''हा! बड़ी बहन ने ली हैं। छोटी बहन की शादी हो गई हैं। दोनों का खर्च निकालने में भी बहुत मेहनत पड़ी। परंतु सबकुछ पूर्ण हो गया। थोड़ी बहुत रकम इकट्ठा की थी, वह सब साफ हो गई। इसलिए ही यह खुद का घर लेने में देर लगी।'' थोड़े पीड़ाजनक शब्द उसने निकाले। उसकी आँखे जमीन पर गढ़ी हुई थी, मुख पर गंभीरता छाई हुई थी।

''मम्मी-पापा साथ में ही हैं?''

''नहीं, वे सुरत में ही उस पूराने छोटे घर में रहते हैं। मुंबई के छोटे घर में उनको रखना संभवित नहीं हैं। उनको जमता भी नहीं हैं। सुरत में सालों से Set हो गए है, इसलिए उनको वहाँ ही आराधना जमती हैं।''

''उनकी व्यवस्था?''

''पापा के पास थोड़ी रकम हैं। उसका ब्याज आता हैं। उसके अलावा मैं भी भेजता हूँ। संसार की गाड़ी चलाना बहुत कठिन हैं म.सा.! परंतु क्या करें?'' उसके शब्दों में वेदना बढ़ती ही जा रही थी।

''बहन म.सा. को साल मे 1-2 बार तो मिलने जाते हो ना?'' मैंने बात को बदलने के लिए धार्मिक बात का प्रारंभ किया। परंतु मुझे पता नहीं था कि मेरा यह प्रश्न उसे और मुझे आँसु की धारा बहाने में निमित्त बननेवाला होगा।

''इस चातुर्मास में ही दीवाली पर मिलने जाने वाला था, परिवार के साथ! राजस्थान में उनका चातुर्मास था। आने-जाने के लिए 7 हजार रूपये बचा के रखे थे। परंतु म.सा.! मेरा दुर्भाग्य!'' वह बोला और उसकी आँखें धीरे-धीरे नम होने लगी। मैं मौन रहा, उसे बोलने दिया।

''म.सा.! आप तो जानते ही हो की बचपन से ही हर साल मुझे बिमारी का सामना करता पड़ता हैं। लगभग Hospital में ही जाना पड़ता हैं। म.सा.! बहन म.सा. को मिलने की बहुत चाहना थी, परिवार में भी उत्साह था। बहन म.सा. का पत्र भी आया था।

विहार दिन :
24
मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :
20/12/2015
स्थान :
Midway House
से नेरल
11 कि.मी

परंतु दीवाली के एक महीने पहले ही मुझे एक बिमारी का सामना करना पड़ा। बोलते हुए शरम आ रही है, तो भी आपके सामने शरम को छोड़कर बोल रहा हूँ। पेशाब करने का जो hole होता है, वह मेरा संकुचित हो जाने कि वजह से पेशाब करने में बहुत पीड़ा होती। थोड़े समय पहले Operation करवाया था। उस Hole में बड़ी सुई को वे अंदर तक पहुँचाते हैं, उस तरह Hole बड़ा करते हैं। उस हिस्से को वे बेहोश भी नहीं कर सकते। म.सा.! उस समय जो दर्द पीड़ा होती है, वह नरक की याद दिलावाती हैं। परंतु सहन किए बिना दूसरा कोई चारा भी नहीं.... दीवाली के 1 महिने पहले ही फिर से वैसी तकलीफ खड़ी हुई। Treatment करवानी पड़ी। उसमें वे 7 हजार पानी हो गए। इसलिए अंततः भारी मन से राजस्थान बहन म.सा. को मिलना मुलतवी रखा। वहाँ कहला दिया कि, 'हम नहीं आ सकेंगे।' बहन म.सा. भी सबकुछ समझ ही गए होंगे, इसलिए उन्होंने ज्यादा आग्रह नहीं किया।''

वह बोलता रहा और आँसुओं की नदीयाँ बहाता रहा।

'क्या बोलना? क्या आश्वासन देना?' यह मेरे लिए सबसे बड़ा सवाल हो गया। एक सग्गा भाई एक सग्गी बहन म.सा. के पास वंदन करने के लिए नहीं जा पा रहा है, क्योंकि 'उसके पास पैसो की तंगी हैं।' **क्या यह हमारे धनवान जैनों के लिए शरमदायक नहीं हैं?** क्या वे धनवान जैन(सच में तो गरीब) नामना की कामना को छोड़कर और इसलिए ही तकतीयों के पीछे की दौड़ को छोड़कर, उसके लिए किए जानेवाले झगड़ों को छोड़कर अनामी बनके ऐसे कार्य नहीं कर सकते? हालाँकि बहुत से लोग कर रहे हैं, सचमुच कर रहे हैं.... परंतु आवश्यकता बहुत बड़ी हैं। सागर में बुँद जितना वह कार्य हैं। दूसरे सभी कार्य जिस तादाद में हो रहे है, उसकी तुलना में यह कार्य बहुत कम हो रहा हैं। कभी-कभी ऐसे भी विचार आते हैं कि 'जैनों के पास जो पैसा बढ़ा है, वह अनीति का ज्यादा हैं।'

धंधे में घोर हिंसा, नोकरों का खुन चुसना, चालबाजी-बेईमानी, देशद्रोह.... न जाने कितनी ही अनीतियों को करके प्राप्त किया हुआ धन बुद्धि को भ्रष्ट करता ही हैं। **पापानुबंधि पुण्य से मिला हुआ पैसा सद्‌बुद्धि का सर्वनाश करता ही हैं।** इसलिए ही जहाँ वाह-वाह होती है, वहाँ ही पैसेवालो को बड़े चढ़ावे बोलने अच्छे लगते हैं। जहाँ तकती में नाम अमर(!) हो जाए, वहाँ उन धनवानों को पैसे लगाने अच्छे लगते हैं। जहाँ समाज उन्हें 'बड़े सेठ' के रूप में देखे, वहाँ उन्हें आगे आना पसंद आता है.... परंतु जहाँ यह सब कुछ ठाठ-ठठारा नहीं है, वहाँ उन्हें लेश भी रूचि नहीं हैं। अरे! कहीं-कहीं तो साधर्मिको की भक्ति करने के बहाने से खुद को 'दानवीर, करूणाशील' घोषित करने की भी गंदी मनोवृत्ति देखने मिलती हैं। **क्या होगा**

विहार दिन :

24

मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :

20/12/2015

स्थान :

Midway House

से नेरल

11 कि.मी

इन बेचारे सद्बुद्धि से गरीब धनवानों का?

''देख स्नेहल! तेरी बहन ने दीक्षा ली है, इसलिए तेरा परिवार संयमी का परिवार कहाँ जाता हैं। और हम संयमी परिवार के लिए व्यवस्था करते हैं। हमारे पास बड़ा Fund नहीं है, परंतु संभव हो उतना करते है....''

''म.सा.!'' उसके आँसु अटक गए, शब्द कडक हो गए। ''मैं आपके पास इसलिए नहीं आया हूँ। आपके प्रति लगाव है इसलिए आया हूँ। 2-3 Train बदलते-बदलते आया हूँ। कितने ही दिनों से आपको मिलने के सपने देख रहा था। बहन म.सा. को नहीं मिल सका, तो मित्र म.सा. को तो मिल लूँ.... इसलिए ऐसी बात मेरे समक्ष मत करना....''

मैं उसकी धबकती हुई खुमारी को देखता रहा।

''शायद तुझे कम-ज्यादा पैसो की जरूरत होगी, पर मम्मी-पापा के पास थोड़ी ज्यादा रकम हो, तो वे दो पैसे ज्यादा खर्च कर सकते हैं। इसलिए तू मेरे लिए नहीं, परंतु मम्मी-पापा के लिए भी मेरी बात स्वीकार।''

वह विचारों में खो गया। ''विचार करके बताता हूँ'' ऐसा उसने मुझसे कहाँ। भोजन का समय हो जाने से उसे वहाँ ही समाज के Function में भोजन करने के लिए भेजा और हम गोचरी वापरने बैठे।

शीलगुण म.सा. उस Function में ही गोचरी वहोरने गए थे। परंतु वह जगह 1.5 कि.मी. दूर निकली। अधूरे में पूरा वहाँ जाने के लिए ढलाण के रास्ते से नीचे उतरना था। वहाँ Resort में Function रखा गया था। जैनो के Function में अभक्ष्य Item न हो तो ही आश्चर्य! तो भी जो कुछ भक्ष्य Item थी, उसे वहोरकर ढलाण को चढ़कर, थोड़े हाँफते-हाँफते वापस 1.5 कि.मी. चलकर वे उपाश्रय में आएँ थे।

इस तरह हमारी गोचरी तो 5-स्हड्डह हो गई, परंतु न्याय म.सा. को आयंबिल था। और गाँव के लगभग सभी जैन Function में पेटपूजा करनेवाले होने से घरों में से भात जैसी चीज भी नहीं मिली। Function में भात थे, परंतु उसमें घी-तेल-जीरा डाला हुआ था।

तो भी न्याय म.सा. ने कभी भी गोचरी की चिंता की ही नहीं हैं। वे नेरल गाँव में फिरे, थोड़े जैनों के घरों में से भात मिले, चने मिले, अजैनों के घरों में भी आयंबिल के योग्य जो कुछ गोचरी मिली, उस 100% निर्दोष गोचरी के साथ धन्नाजी ने आयंबिल किया। हमे तो पुण्य(!) प्रताप से मीठाईवाली गोचरी मिली ही थी।

उस ही दिन भुवनभूषण म.सा. के संसारी अवस्था के परिचित ठाणे शहर के रमेशभाई मिलने आएँ। उन्होंने कहाँ कि, ''मुझे मेरी दोनों लड़कीयों को धार्मिक अभ्यास उच्चस्तर का

विहार दिन :

24

मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :

20/12/2015

स्थान :

Midway House
से नेरल
11 कि.मी

करवाना हैं। छोटी तो College में पढ़ रही हैं। वह थोड़े महीनों के बाद जुड़ेगी, परंतु बड़ी अश्विनी तो चाहे तब पढ़ना चालु कर सके वैसा हैं।''

हमनें कहाँ कि, ''आप उनको एकबार लेकर आईए, बाद में कौन से साध्वीजी के पास पढ़ना? विगैरह का हम सोच-विचार कर लेगें।''

सूर्यास्त हो गया। उजाला मिला तब तक लेखन-पठन करकर मैंने Note बंद की। मुँह उपर किया तो शीलगुण म.सा. खिड़की के पास खड़े थे और उस खिड़की के सामनेवाले मैदान में किसी अजैन की शादी थी, और उसकी तैयारी चल रही थी।

मुझे लगा कि, 'शीलगुण म.सा. उस शादी की तैयारीयाँ देख रहे हैं।' परंतु तुरंत ही विचार आया कि, 'शीलगुण म.सा. ऐसा करे वैसी संभावना ही नहीं हैं।' उपरांततः 'आँख धोखा है' का अनुभव मैंने बहुत बार कर ही लिया था। इसलिए मुझे गुस्सा नहीं आया, सच्ची छानबीन करने के पश्चात ही कुछ भी कहने का निर्णय किया।

''शीलगुण म.सा.!'' मैंने आवाज लगाई और उन्होंने खिड़की से उपाश्रय की ओर मुख फेरा.... उसके साथ ही उनका हाथ और उसमें रही हुई पुस्तक भी दिखाई दी। मैं त्वरीत ही समझ गया कि, 'वे शादी नहीं देख रहे, परंतु पुस्तक पढ़ रहे हैं।'

तो भी मैंने पूछा, ''वहाँ क्युँ खड़े हो?''

''पश्चिम दिशा इस ओर है, इसलिए यहाँ स्हुह्यह्ल तक उजाला ज्यादा रहता है, इसलिए पढ़ने के लिए खड़ा था।''(बैठे-बैठे पढ़े, तो भींत की छाया का अँधेरा बाधक हो रहा था, इसलिए खड़े-खड़े पढ़ रहे थे।) वे चतुर होने से समझ गए कि 'गुरूजी को शादीदर्शन की शंका हुई होगी,' इसलिए उन्होंने भी व्यवस्थित विस्तृत जवाब दिया।

शिष्यों मे छोटे-मोटे दोषों का प्रवेश न हो जाएँ, इसलिए संभव हो उतनी सुरक्षा करने का मेरा फर्ज मैंने अदा किया।

हा! एक और विशेष बात! यह नेरल माथेरान नाम के Hillstation के भूमितल पर रहा हुआ गाँव हैं। मुमुक्षुओं को सुबह इच्छा हुई थी कि 'माथेरान जाना हैं।' मैंने ना नहीं कहीं, परंतु Last मे उन्होने किसी कारणवशात् माथेरान की Hill यात्रा(!) बंध रखी।

रात को ठंडी की वजह से एक बंध रूम में संथारा करने का विचार किया, परंतु वहाँ काले रंग की कोई चीज(क्या था? यह याद नहीं हैं।) इस तरह से लटक रहीं थी कि जाने साँप ही देख लो। ऐसे भी मुझे छिपकली-साँप आदि उरपरिसर्पो का डर बहुत लगता हैं।स्पष्ट पता चल भी गया की वह साप नहीं है, इसलिए अब तो डरने की बात ही नहीं थी, परंतु यदि मैं रात को जागु और वह देखकर डर जाऊँ तो? इस विचार कि वजह से मैंने

विहार दिन :
24
मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :
20/12/2015
स्थान :
Midway House
से नेरल
11 कि.मी

बहार बड़े Hall में ही संथारा किया। 'निर्भयता अष्टकका' बहुतबार पाठ करनेवाला मैं कैसे तुच्छकोटि के डर का भोग बना वह दीपक कि तरह एकदम स्पष्ट दिख रहा था।

बाकी के चार साधु तो सच्चे साँप से भी बहुत कम या बिल्कुल डरने वाले नहीं थे, इसलिए उनको तो चिंता ही नहीं थी। मु. न्याय म.सा. ने ठंडी से बचने के लिए कभी भी बंध रूम ढूँढ़ा हो, वैसी जगह पंसद की हो.... ऐसा मुझे स्मरण नहीं हो रहा। मेरे आदेश से उन्होंने अंदर संथारा किया। बाहर के Hall में चारों ओर Sliding वाली काँच की खिड़कीयाँ थी। इसलिए स्वाभाविकता से ठण्ड ज्यादा ही लगने वाली थी, परंतु सात्त्विक आत्मा को ऐसी सभी बातें तो घास के तुल्य होती हैं। मेरे पास तो कम्बल (Blanket) भी था। उनके पास या किसी भी दूसरे साधु के पास Blanket भी नहीं थे। Blanket तो थे, परंतु वे उपयोग नहीं करते थे।

वह उपाश्रय थोड़ा पूराना और टूटा हुआ-सा था। दिवाल पर रहा Colour उखड़ गया था, Tiles भी उसी प्रकार की थी.... मुझे ऐसे उपाश्रय में जल्दी मन नहीं लगता। भले बाहर से शिकायत न करूँ, तो भी मन में अरूचि तो उत्पन्न हो ही जाती हैं। हा! वह अरूचि तीव्र नहीं होती, परंतु अरूचि मतलब अरूचि! इसलिए ऐसा कह सकते हैं कि शय्या परिषह में मैं बहुत पीछे था। संयमी को तो अच्छे या खराब कोई भी उपाश्रय के लिए समान दृष्टि ही रखनी चाहिए। यदि संयमी ऊँचे-नीचे होंगे तो यह धरती भी कहेगी कि, 'मुझे भी ऊँचे-नीचे होने की छुट दीजिए।' यदि समुद्र खुद की मर्यादा को पार नहीं करता, तो संयमी खुद की समता-सहनशीलता नाम की मर्यादा को कैसे पार कर सकता हैं? शायद संज्वलनकषाय की वजह से अरूचि जगती है, तो इतना तो अवश्य करना चाहिए कि, 'शब्दों के द्वारा निंदा-टीका नहीं करना।'

मतलब यह की ऐसा नहीं बोलना कि 'यहाँ तो हवा ही नहीं है.... उपाश्रय अंधकारमय है.... बहुत छोटा है.... अटपटा-विचित्र है.... बनानेवाले की बुद्धि बुठ्ठी है....' इत्यादि। चूप रहना चाहिए, सहन करना चाहिए। **उत्तराध्ययनसूत्र की परिषह अध्ययन की शय्या संबंधी दो गाँथाएँ बराबर याद करनी चाहिए।**

'इस उपाश्रय में मुझे कहाँ संपूर्ण जिंदगी रहना हैं। आज-कल में तो वापस नया उपाश्रय.... तो फिर अरूचि करके पाप क्यूँ बांधना?'

यहाँ साध्वीजी भी प्रायः दो ठाणे आए हुए थे। वे दक्षिण भारत की ओर ही विहार करनेवाले थे। उन्होंने कुछ जानकारी मंगाई थी, हमने भिजवाई थी। और उनको हूँफ भी दी की ''कुछ भी चिंता मत करना। कुछ भी काम हो तो निःसंकोच

विहार दिन :

24

मृगशीर्ष सुदी १० दिनांक :

20/12/2015

स्थान :

Midway House

से नेरल

11 कि.मी

बताना। हम संभवित हो उतनी, संपूर्ण मदद करेंगे।'' प्रायः दोनों साध्वीजी वृद्ध थे या प्रौढ़ थे और दोनों व्हीलचेयर में थे। इसलिए ऐसे आश्वासन से उनको बहुत संतोष हुआ होगा, ऐसा मुझे लगता हैं।

और एक बात! शाम को शादी के मैदान तथा आजुबाजु में से भी Tube Light का प्रकाश, Focus का प्रकाश अंदर आ रहा था। तब हमारी चर्चा हुई थी कि 'यह प्रकाश अचित है या सचित?' वैज्ञानिक और शास्त्रीय दृष्टिकोण से सबने अलग-अलग अभिप्राय दिए। अंततः हमने पू.आ. अभयशेखर म.सा. और पू.आ. जयसुंदर म.सा. को पूछवाया? इस तरह हमारा नरेल का दिन व रात पूरी हुई। **काल को कौन अटका सकता हैं?**

विहार दिन :

25

मृगशीर्ष सुद

११

दिनांक :

21.12.2015

स्थान :

नेरल से

करजत

14 कि.मी.

मौन और विवेक

विहार दिन :

25

मृगशीर्ष सुद ११ दिनांक :

21/12/2015

स्थान :

नेरल से करजत

14 कि.मी.

150 कल्याणकवाला मौन एकादशी का आज दिन था। आज विहार करके हम करजत पहुँचनेवाले थे। समयानुसार तैयार होकर हमारा दक्षिणगमन शुरू हुआ। मुझे बहुत बार वह शब्द याद आते, **'है अगर दूर मंजिल तो क्या? रास्ता भी हो मुश्कील तो क्या? चांद-तारे अगर ना मिले तो दिल का दीपक जलाना पड़ेगा।'**

अभी 1200 कि.मी जितना बाकी था। और सच्चा विहार तो अब ही चालु हुआ था। अभी तो A.P., कर्नाटक, तमिलनाडु जैसे तीन मांसाहार प्रचुर राज्यों को पार करना बाकी था। गोचरी का क्या? यह सभी प्रश्न चिंताजनक थे ही। हालाँकि स्वभाव में साहसिकता होने से ऐसी परिस्थितियों में आनंद भी बहुत आता। 'क्या होगा?' उसकी उत्तेजना भी रहती और प्रभु की अमित कृपा से अच्छा ही हुआ हैं।

संपूर्ण विहार के अंत में हमने रेलवे की पटरी को पार कर करजत में प्रवेश किया। मंदीर भव्य, बड़ा, सुंदर, प्रभुजी तो उससे भी मनोहर.... भक्त भी बहुत.... तो भी मैं तो फटाफट प्रदक्षिणा देकर चैत्यवंदन करके उपाश्रय में आ गया। मंदीर के पीछे की जमीन कुछ झगड़े में फँसी हुई थी। प्रायः वहाँ ही नया उपाश्रय अब बननेवाला था, ऐसा थोड़ा-थोड़ा स्मरण हो रहा हैं।

हम जिस दूसरे उपाश्रय में रूके थे, वह नया जैसा ही था, व्यवस्थित था.... परंतु मात्रु परठने की व्यवस्था नहीं थी। **'श्रावकों में साधुचर्या का अज्ञान साधुजीवन की शिथिलताओं का बहुत बड़ा कारण है'** इसकी स्पष्ट अनुभूति हुई।

यदि श्रावकों ने उपाश्रय को थोड़ा छोटा बनाकर भी थोड़ी जगह स्थंडील-मात्रु के लिए अलग रखी होती, तो साधुओ में Toilet आदि का वपराश नहीं होता....

श्रावकों को यदि मालूम होता कि, **'Mobile आदि Electric चीजें संयम के महाघातक तत्त्व है,'** तो श्रावक साधुओं को वो लाकर नहीं देते, और फिर साधुओं में Mobile का दूषण और उसके कारण उत्पन्न होनेवाले मेरू जैसे दूसरे बड़े दूषण साधु में प्रवेशते नहीं।

श्राविकाओं को यदि पता होता कि, 'साधु बहनों का परिचय नहीं कर सकते, अथवा उसमें बहुत सारी मर्यादाएँ होती हैं। बहन साधु को एकान्त में कभी नहीं मिल सकती, कभी भी अकेले नहीं जा सकती' और यदि इस तरह श्राविकाएँ आचारचुस्त होती, **तो Newspaper-Magazine में आने वाली जैनधर्म की नाक काटनेवाली घटनाएँ कभी न होती।**

विहार दिन :
25
मृगशीर्ष सुद ११ दिनांक :
21/12/2015
स्थान :
नेरल से
करजत
14 कि.मी.

परंतु हमारी इस भोली गृहस्थ प्रजा को सच्ची राह कौन दिखाएँ?

उपाश्रय के बाहर सामने की ओर मात्रु परठना पड़ता। साधु भगवंत सावधानी से वह काम करते। उपाश्रय में पहुँचकर, दोरी बाँधने का कार्य संपूर्ण कर एक Table लेकर मैं तो पहले-दूसरे मंजिल के Passage में ही बैठ गया।

सामान्यतः जो मुख्य साधु होता है, वह ऐसे स्थान में ही बैठता है कि जहाँ वंदनादि के लिए आनेवाले श्रावकों की पहली नजर उन पर ही पड़े और उनके पास ही वे आवे। परंतु ऐसा मुझे कभी जमा नहीं हैं।

उसका कारण मैं आपको संपूर्ण निखालसता से कहता हूँ, अतिशयोक्ति मत मानना....

1. मुझे अब तक मैं बड़ा-मुख्य हूँ, ऐसा लगा नहीं है....

2. दिन के वक्त के दौरान श्रावकों को Personally मिलना मुझे कम जचता हैं। बहुत ही महत्त्व का कार्य हो तो बात अलग हैं।

3. मुख्य बात स्वभाव की हैं। स्वाध्याय में थोड़ा भी खलेल नहीं जमता। कोई वंदन करने के लिए आएँ, इच्छकारादि सूत्र बोले, पच्चक्खान मांगे, शाता पूछे, गोचरी आदि की विनति करे 'कहाँ से पधारे? कहाँ प्रयाण हैं? कौनसे समुदाय के....?' आदि प्रश्नों की झड़ी चले.... यह सब श्रावकों के उचित आचार में होने के बावजूद भी मेरे लिए तो बारबार स्वाध्याय की एकाग्रता को तोड़नेवाले बनते हैं। इसलिए जैसे छोटे साधु कोने में बैठते है, अनजाने स्थान में बैठते है.... वैसे ही मैं भी 20 साल के पश्चात भी ऐसे स्थान को ढूँढ़कर बैठ जाता हूँ। हा! प्रवचन करना हो तब, तथा कोई निर्णय लेना हो तब मैं किसी को भी मुख्य बनने नहीं देता, यह भी हकीकत हैं।

हमारे Group में तकलीफ यह है कि हम पाँचों को कोणे में बैठना पसंद हैं। इसलिए वंदनादि के लिए आनेवाले को पहले तो ऐसा ही लगता है कि, 'उपाश्रय में साधु है कि नहीं?'

हमारा एक दोष यह हैं कि, ' पच्चक्खान प्रदान करना हो या 'करेमि' उच्चारना हो, तो भी सभी को कम रूचता हैं। स्वाध्यायादि में विघ्नभूत लगता हैं।' यह भूल ही हैं।

मैंने साधुओं को कहाँ है कि, ''यह बराबर नहीं हैं। बातचीत न करे वह उचित है, परंतु वे विरति मांगते है, तो हमें विरति उल्लाससे देनी चाहिए, तो ही हमें भविष्य में वापस विरति मिलेगी। नहीं तो सर्वविरति भी जाएगी और देशविरति भी अलभ्य हो जाएँगी। क्योंकि श्रावकों की देशविरति की आराधना में हमने हमारी जवाबदारी के अनुसार मदद नहीं की।''

न्याय म.सा. आएँ और बीच के Passage में हमारा निशीथ का पाठ पूर्ण हुआ। पोरिसी के बाद उपदेशमाला का पाठ

विहार दिन :

25

मृगशीर्ष सुद ११ दिनांक :

21/12/2015

स्थान :

नेरल से करजत 14 कि.मी.

दिया(नूतन साधुओं को)....

मौन एकादशी होने से तथा घर बहुत होने से मेरी इच्छा व्याख्यान करने की थी, परंतु प्रत्युत्तर मिला कि, ''भाईओं में तो कोई नहीं आएँगा, दो-चार आएँ तो भी ठीक!'' मुझे दुःख हुआ....

80-100 घर, इतना बड़ा दिन, तो भी एक घंटे के लिए भी जिन प्रवचन की तैयारी नहीं। **मंदीर में आनेवाले 300-500 होंगे, गुरूवंदन के लिए आनेवाले 30 भी नहीं।** देशनाश्रवण तो स्वप्न ही हो गया।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति का उत्तम कारण ऐसी जिनप्रतिमा और जिनप्रतिमा की विधि अनुसार पूजा को छोड़ के स्थानकवासी आदि ने जैसे एक भूल की है.... वैसे इन दो चीजों में आवश्यकता से ज्यादा भार देकर, अतिरेक करके उसके सामने जिनवचन की बहुत उपेक्षा करके, मूर्तिपूजक भी एक भूल कर रहे हैं।

अतिरेक दोनों ही स्थानों में अनुचित है,

जहाँ जहाँ मूर्तिपूजक हैं, वहाँ वहाँ प्रवचनों में संख्या कम....

जहाँ जहाँ स्थानकवासी है, वहाँ वहाँ प्रवचनों में संख्या ज्यादा....

ऐसा अनुभव मुझे विहार में अलग-अलग स्थानों पर हुआ।

हालाँकि सब जगह ऐसा नहीं हैं, तो भी यदि ऐसा हो तो सुधारने की जरूरत तो है ही।

मौन एकादशी के दिन 80-100 घरवाले करजत में और विशाल जिनालयवाले स्थान में प्रवचन नहीं हुआ और दूपहर का समय हो गया।

(शायद ऐसा भी हो सकता है कि हम बहुत अनजाने हो इसलिए लोगो को उत्साह न जगा हो.... या तो हमारे समाचार ही उन्हें मिले न हो, कम मिले हो... इसलिए ऐसा हुआ होगा, इतना बचाव कर सकते हैं।)

हमारी शाही गोचरी(राजस्थानीयों के घर होने से और शरद ऋतु होने से) और न्याय म.सा. की गरीब गोचरी(आयंबिल की) पूर्ण हुई। गोचरी वहोराने आदि में तो लोगों के भाव अनन्य कोटि के थे, राजस्थानीयों में गुरूभक्ति के विषय में लगभग देखना नहीं पड़ता। जो हो वह खाली करते हैं।

न्याय म.सा. की गोचरी देखकर आगमों के वचन याद आ जाते है.... **'जे तयक्खाया ते सारक्खाया....'** जो लुखा-सुखा खाते है, वे ही सच में पौष्टिक खाते हैं, क्योंकि आत्मा का पोषण तो ऐसे ही भोजन से होता हैं। और पुष्ट बना हुआ आत्मा कर्मशत्रु को छिन्न-भिन्न कर देता हैं।

विहार दिन :

25

मृगशीर्ष सुद ११ दिनांक :

21/12/2015

स्थान :

नेरल से

करजत

14 कि.मी.

हमारी गोचरी देखकर भी आगमों के वचन याद आ जाते है.... **'जे सारक्खाया ते तयक्खाया....'** जो दूध-दही-मीठाई-विगई आदि पौष्टिक वस्तुओं को खाते है, वे सचमुच तो तुच्छ वस्तु खाते है, क्योंकि यह सब खाने से भले ही शरीर का पोषण हो, परंतु आत्मा तो बिचारा अशक्त-असमर्थ-कायर ही बनता है और अशक्त बना हुआ आत्मा कर्मशत्रु को मार सकता नहीं हैं।

हमारी गोचरी निर्दोष थी, परंतु आसक्ति वह भी एक बड़ा दोष ही है ना? हमें उससे बचना हैं।

सुबह खोपोली जाना था। विहार तेड़ा-मेड़ा था। युवकों ने कहाँ कि, ''हम आपको रास्ता दिखाने आएँगे।'' हम वैसे तो ना ही बोलते, परंतु जब रास्ता भूलभूलईयाँ जैसा हो, तब Guide जरूरी बन जाता हैं। इसलिए हमने हाँ कहीं।

और इस तरह हमारे आयुष्य में से एक दिन और बीत गया। Positive सोचे तो, मोक्ष की प्राप्ति में हम एक दिन आगे बढ़े।

विहार दिन :

26

मृगशीर्ष सुद

१२

दिनांक :

22.12.2015

स्थान :

करजत से

खोपोली

11 कि.मी.

New Generation

के भाव

विहार दिन :
26
मृगशीर्ष सुद१२ दिनांक :
22/12/2015
स्थान :
करजत से
खोपोली
11 कि.मी.

हमारे सुबह के Routine में कोई भी बदलाव नहीं हुआ। साधुभगवंत तैयार होते हो, तब मैं तैयार हो-बैठा होता, क्योंकि वे मेरे वस्त्रादि का पड़िलेहन करके फिर खुद का करते ना?

मुझे तो सिर्फ आदेश माँगना और ओघे को बाँधने का काम रहता। अब तक तो मैं मेरा ओघा बांधता हूँ, झोली उठाता हूँ, मातृ का प्याला और दंडासन भी उठाता हूँ। थेले में खुद के Paper-Books भी उठाता हूँ । गाँधीजी की तरह स्वावलंबता मुझे प्रिय हैं। साधुओं को इस बात पर मैंने कभी मचक नहीं दी हैं। हा! संथारा- मच्छरदानी-उत्तरपट्टा.... यह तीन चीजें ही एक-एक साधुभगवंतों को दी हैं। मेरे पास इससे ज्यादा कोई उपाधि ही नहीं हैं।

शरद में Blanket वापरता हूँ। उसका दोष मुझे 1-2 महीने तक सेवन करना पड़ता है, परंतु ठंडी की कंबल रखी नहीं हैं, जिसको 10 महिने तक कोई जगह पर रखनी पड़े और इसलिए ही परिग्रह करना पड़े। मुझे वह दोष ज्यादा बड़ा लगता है, उसके सामने जब जरूरत हो, तब कंबल का उपयोग कर लेने का दोष छोटा लगता हैं।

मैं यदि जल्दी तैयार हो जाऊँ, तो सबसे पहला कार्य दोरी छोड़ने का करता हूँ। तो भी यदि साधु तैयार हुए न हो, तो मैं उनके दंडे में दंडासन बाँधता हूँ और प्याला भी बाँध देता हूँ। **यह सब कुछ करने का आनंद अनेरा होता हैं।**

और एक सच बात कहुँ?

दीक्षा के बाद अब तक मैं दोरी बाँधने का कार्य टालता था। उसके दो कारण....

1. दोरी भीत पर रही हुई खील्ली के समीप या खिड़की में रही जाली के समीप बाँधनी पड़ती है और वहाँ चिपकली का डर मुझे रहता था। मुझे बारबार उस तरह चिपकली का अनुभव होता ही रहा हैं। 20 साल में अनेकानेक बार चिपकली ने मुझे डराया हैं। 'अरे! चिपकली होगी तो?' ऐसी मनघडत कल्पना से भी मैं बहुत बार डरा हूँ।

2.दोरी बाँधते वक्त गाँठ लगाना मुझे कम जमता हैं। समय ज्यादा लगता हैं। मैंने दोरी बाँधी हो, तो दूसरे दिन विहार के वक्त मुझे ही छोड़नी पड़ती हैं। इस तरह जवाबदारी बढ़ती है, समय बढ़ता है।

परंतु इस विहार में मुझे दोरी बाँधना बहुत ही जच गया था। और चमत्कार गिनों तो चमत्कार! परंतु यह मैं लिख रहा हूँ, तब तो चातुर्मास पूर्ण हो गया है, और इसलिए मेरा अनुभव व्यक्त कर रहा हूँ कि **133 दिन के विहार के दौरान एक बार भी दोरी बाँधते वक्त या खोलते वक्त मुझे चिपकली के दर्शन**

विहार दिन :
26
मृगशीर्ष सुद१२ दिनांक :
22/12/2015
स्थान :
करजत से
खोपोली
11 कि.मी.

हुए नहीं हैं। मुझे उससे लगता हुआ डर भी स्वभाविकता से ही कम हो गया हैं। जाने कि वैयावच्च करने के मेरे भाव ने मेरे भय मोहनीय कर्म का क्षयोपशम न किया हो, मेरे अशातावेदनीय को दूर न किया हो, ऐसा लगता हैं।

ऐसा तो है ही नहीं कि, 'दक्षिण भारत की ओर चिपकली कम है....' परंतु ऐसा तो मैं 100% कह सकता हूँ कि मेरे शुभभावजन्य पुण्य के प्रभाव से उन चिपकलीयों ने मुझे परेशान न करने का निर्णय तो 100% कर ही लिया था। हा! जिस दिन मैं वापस स्वार्थी बनुँगा, झुठी-झुठी शंका करूँगा, उस दिन वापस चिपकली मेरा पीछा करेगी। फिर क्युँ न मैं हिन्दुस्तान के कोई भी कोणे में रहूँ....

विहार चालु हुआ। साथ में चल रहे युवक के Mobile में रत्नाकर पच्चीसी बज रही थी। 25 साल पहले मैं संसारी अवस्था में Cassete के द्वारा जो सुनता था, वह ही स्वर और वह ही संगीत बज रहा था। मेरा मन उसमें लीन हो गया। मैंने उनको कहाँ नहीं था, परंतु उन्होंने पीछे से मुझे बताया था कि ''मैं हररोज Morning-Walk करता हूँ, और उसमें भक्तामर+रत्नाकर पच्चीसी Mobile पर सुनता हूँ। आज आपके साथ Walk कर रहा हूँ।''

मेरा मन सुनने में तल्लीन था, इसलिए ही

1. कोई आगे-पीछे बातें करे, **तो मुझे अच्छा नहीं लग रहा था....**

2. आवागमन कर रहे गाडीयों की आवाज हो, **तो मुझे अच्छा नहीं लग रहा था....**

3. उस भाई पर किसी का Phone आएँ और बीच में रत्नाकर पच्चीसी को रोककर वह Phone पर बातें करे, **तों मुझे अच्छा नहीं लग रहा था....**

एक बात तो सतत दृढ़ हो रही थी कि **बाहर के साधनों के आधीन सुख अंततः दुःख ही लाता हैं।** भले मुझे उस संगीत को सुनके भाववृद्धि हो रही थी, परंतु भाववृद्धि के लिए मुझे ऐसे आलंबन की जरूरत पड़े, वह तो मेरी कमजोरी ही है ना?

देखने के लिए चश्में की जरूरत पड़े, वह आँखों की कमजोरी....

चलने के लिए लकड़ी की जरूरत पड़े, वह शरीर की कमजोरी....

शुभ भावों के लिए, आलंबन की जरूरत पड़े, वह आत्मा की कमजोरी....

आलंबन से निरालंबन को पाने के लिए हजारों-लाखों बार सालंबन योग का सेवन आवश्यक हैं। इसलिए वह खराब नहीं

विहार दिन :

26

मृगशीर्ष सूद १२ दिनांक :
22/12/2015

स्थान :
करजत से
खोपोली
11 कि.मी.

हैं, परंतु वह कमजोर है इतना स्वीकारे बिना दूसरा कोई चारा नहीं हैं।

अटपटे रास्ते से हम Main-Road पर आ गए। बाद में हमने Guides को विदाई दी और खोपोली के रास्ते पर अग्रेसर हुए। यह विहार थोड़ा लंबा, थोड़ा कठिन लगा। बीच में कच्चा रास्ता भी आया। उसके बाद रेल की पटरी के समांतर रास्ते पर भी चलना पड़ा। अंत में खोपोली नजदीक आ गया। तब एक Shortcut और पतले रास्ते से हमारा निकलना हुआ। वह रास्ता रोजिंदे उपयोगवाला नहीं था। इसलिए आवागमन कम था। उसमें एक बुढ्ढी औरत लकड़े का भार माथें पर रखकर बीचों-बीच बैठी थी। आते जाते हुए लोग और रिक्शावाले उसे गालियाँ दे रहे थे। ''ऐ बुढ्ढी! बीच में क्युँ बैठी हैं। बाजु पे हठ। सबको तकलीफ हो रही हैं।'' सभी को स्पष्ट पता ही चल जाए की बुढ्ढी माँ बीच में किसी को परेशान करने नहीं बैठी हैं, परंतु लकडीयाँ उठाकर जाती होगी और अतिसख्त थकावट के कारण उठाने के लिए असमर्थ बनी होगी। और इसलिए लकड़ीयाँ बीच में ही गिर गई होगीं, इसलिए वह उन्हें लेने के लिए नीचे बैठी होगी, माथे पर वापस जमाई होगी और अब खड़े होने के लिए प्रयत्न कर रही होगी। परंतु लोग जितने उतावलेपन की अपेक्षा रखते होंगे, उतनी झडपता से उठने की शक्ति बिचारी उस वृद्ध औरत के पास नहीं होगी।

वहाँ तो Jeans-T-Shirt में Activa के उपर एक Collegian लड़की वहाँ से पसार हो रही थी। जिसको हम नास्तिक कहते है वैसी New Generation की वह व्यक्ति Side में Activa Park करके वृद्धा के पास आई, उसको लकडीयाँ बराबर इकट्ठा करके दी। टेका देकर उसे खड़ा किया, और टेका देकर ही उसके साथ चलने लगी....

मैं तो स्तब्ध रह गया! कमाल है ना इस New Generation की गुणवत्ता को! यह तो मार्गानुसारिता का गुण! भविष्य में मोक्ष की प्राप्ति अवश्य करवाएगा, ऐसा यह गुण!

प्रसन्न होकर मैं आगे बढ़ा। थोडी देर में ही खोपोली के मंदीर में पहुँचे। दर्शन करके उपाश्रय में जाकर, वह ही दोरी बांधने का कार्य समाप्त कर फटाफट पढ़ने के लिए बैठ गया। न्याय म.सा. आएँ, इसलिए निशीथ का पाठ चालु किया। आज वे Late आएँ होने से, पाठ भी Late चालु हुआ। नीचे भोजनशाला का Board पढकर साधु भगवंत को सूचना की कि ''शायद दाल बन गई हो, तो न्याय म.सा. के लिए लेकर आना....'', परंतु प्राय: वहाँ से कुछ प्राप्त नहीं हुआ।

पाठ पूर्ण होने के बाद गोचरी का वक्त हो गया था, इसलिए न्याय म.सा. तुरंत ही गोचरी वहोरने गए। साडे बारह को वापस आएँ, उसके बाद दर्शन करने गए। देववंदनादि कर 1:15 बजे गोचरी वापरने बैठे। तब तक तो हमारी गोचरी पूर्ण होने को आई

विहार दिन :
26
मृगशीर्ष सूद १२ दिनांक :
22/12/2015
स्थान :
करजत से
खोपोली
11 कि.मी.

थी। लगभग उनका हमारे साथ गोचरी वापरना बहुत कम होता हैं। मुझे यह पंसद नहीं हैं। गोचरी माण्डली में सभी को साथ में वापरने बैठना चाहिए, कभी कभार आगे-पीछे हो तो बराबर है, परंतु रोज-रोज संपूर्ण मांडली की गोचरी 50%-75% पूर्ण हो जाए और फिर न्याय म.सा. बैठे यह मुझे अच्छा नहीं लगता। परंतु **सबकुछ हमें अच्छा लगे वैसा ही हो, तो यह संसार दुःखमय कैसे कहलाएगा?**

पहले बहुत बार सुचना दे दी है और इसलिए अब इस बात की मैं उपेक्षा ही करता हूँ। अलबत दोष बहुत छोटा है, कोई ज्यादा किंमत नहीं है, परंतु शिस्तभंग के जैसा मुझे पक्का लगता हैं। गोचरी के बाद ठाणेवाले रमेशभाई और उनकी लड़की अश्विनी बहन से मिलना हुआ। उनको घाटकोपर में रहे हुए पू.सा. दिशांगनिधिश्रीजी के पास पढ़ने की मैंने सूचना की। दूसरी भी बहुत बातें रमेशभाई ने की, परंतु अनवसर होने से यहाँ लिख नहीं रहा।

वहाँ के किसी श्रावक या श्राविका ने (पक्का याद नहीं) मुझे कहाँ कि, ''म.सा. यहाँ गतवर्ष दौरान आपके समुदाय के साधुभंगवत जगतशेखर म.सा. आएँ थे। धुम्मस की वजह से उनको आगे के गाँव से Late विहार करना पड़ा था, इसलिए यहाँ भी Late ही पहुँचे थे। लगभग 1 बजे के आस-पास.... परंतु सभी को एकासणा और आयंबिल! और आने के बाद वो म.सा. तो फिर से निर्दोष गोचरी के लिए दूर-सुदूर वहोरने गए। लगभग 2-2:30 बजे के आसपास आएँ और गोचरी वापरी। म.सा. क्या उनका जबरदस्त संयम....''

वह भाग्यशाली प्रशंसा करते हुए थक नहीं रहा था। मेरे जैसे के अंहकार के टुकड़े-टुकड़े करने के लिए ऐसे शब्द बहुत उपयोगी थे। **'शेर के सिर पर सवाशेर होता ही है,'** यह कहावत एकदम सच्ची साबित हो रही थी।

हमने भले ही इतना लंबा विहार स्वीकारा था, परंतु हमें चेन्नई पहुँचने की कोई जल्दी थी नहीं। हमने लगभग नक्की किया था कि, 'हो सके तब तक शाम का विहार टाला जाएँ। जिससे सुबह 8-8:30 बजे पहुँचने के पश्चात संपूर्ण दिन स्वाध्याय का गुंजन हो सके। अजैनो के घरों कि गोचरी की भी तैयारी होने से गोचरी के लिए भी सुबह-शाम विहार करके जैनों के गाँव को पकड़े रखना हमारे लिए आवश्यक नहीं था। कोई जगह करना पड़े तो ही शाम का विहार करने की तैयारी थी।

लगभग हम चेन्नई पहुँचे, वहाँ तक यदि Average निकालने में आवे, तो दिन के 12 कि.मी. हम चले ऐसा कहा जा सकता हैं।'

वापस हमारी धर्ममय जिंदगी का एक दिन अस्त हुआ।

विहार दिन :

27

मृगशीर्ष सुद

१३

दिनांक :

23.12.2015

स्थान :

खोपोली से

लोनावला

15 कि.मी.

योग स्थान

विहार दिन :

27

मृगशीर्ष सुद 13 दिनांक :

23/12/2015

स्थान :

खोपोली से लोनावला 15 कि.मी.

घुमने-फिरने के शौकिन लोगों में एक नाम बहुत प्रसिद्ध है, 'लोना....वला....!'

यहाँ कि तरह-तरह की चीक्कीयाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। गुजरात से घुमने आया हुआ आदमी यहाँ की चीक्की खाएँ बिना घर नहीं जाता। आज हम उसी लोनावला में पहुँचे।

परंतु आश्चर्य तो इस बात का था कि जो स्थान लोगो के लिए **भोगस्थान** के तौर पर प्रसिद्ध था, वह ही स्थान हमारे लिए **योगस्थान** के जैसा था। और वह हमें लोनावला पहुँचने के बाद पता चला। लोनावला गाँव का मंदीर, और उसके प्रभुजी अतिप्राचीन थे। यह एक पवित्र तीर्थभूमि थी। (कितने प्राचीन? यह अब याद नहीं हैं।)

हमने विहार शुरू किया, परंतु आज का विहार कुछ अलग तरह का ही था। ऐसे तो 15 कि.मी. के आसपास होगा, परंतु शुरूआत के 5-6 कि.मी. तो सिर्फ चढ़ाण ही थे। सापँ कि रेखा की तरह संपूर्ण रास्ता पर्वत में ही बनाया गया था। चढ़ते-उतरते गाडीयों की रफ्तार धीरी थी, चढ़नेवालों की अतिधीरी.... हम चढ़ने लगे, परंतु थोड़ी देर में हाँफ चढ़ने लगा। रोज की 6 कि.मी. की झड़पता से विहार करना यहाँ शक्य ही नहीं थी। शायद 4 या 5 की गति से मैं चढ़ रहा था।

साथ में खोपोली के विहारवाले युवक भी थे। हमने थोडे अँधेरे में ही विहार किया था, इसलिए आधे घंटे के बाद थोड़ी नीचे की ओर दृष्टि गई, तो भूमितल पर रहे हुए, गाँव-शहर Light से चमकते हुए दिखाई दिए, ऊपर की ओर की नीचे की ओर की गाड़ीयों की Light से पहाड़ का Area भी चमकता दिख रहा था। वह दृश्य अवर्णनीय था।

मुमुक्षु आज बहुत खुश हो गए। आँखें भर-भरके सब कुछ देख रहे थे। संसारी भतीजा भव्य भी मेरे साथ ही था। वह बार-बार बोल रहा था कि, ''Wow! Wow! कितना अच्छा है....''

''आप पहले लोनावला नहीं आए हो?'' मैंने पूछा।

''दो-तीन बार आएँ है, परंतु तब तो Car में होते है, इसलिए बाहर का दृश्य देखने को नहीं मिलता.... ऐसा तो पहली बार देख रहे....'' भव्य ने कहाँ और वह Mobile Camera से Photo लेने लगा। हालाँकि उसमें विनय बहुत था, इसलिए Photo लेने से पहले उसने मुझसे पूछा भी सही। सावद्य चीजों में 'हाँ' तो कैसे बोल सकते है, इसलिए मैं मोन रहा और उसने अवसर देखकर कार्य कर लिया।

जब हम सबसे ऊपर शिखर जैसे हिस्से पर पहुँचे, तब तो बहुत अच्छा उजाला हो गया था, सूर्योदय होने को आया था.... वहाँ से नीचे का दृश्य देखकर तो मुमुक्षु एकदम हर्ष में आ गए। कुदरत ने बनाई हुई लीला को देखने का आनंद उनके मन में

विहार दिन :
27
मृगशीर्ष सुद 13 दिनांक :
23/12/2015
स्थान :
खोपोली से
लोनावला 15
कि.मी.

समा नहीं रहा था। उन बिचारों को कहाँ पता था कि, 'जैसे माँसाहारीयों को पता नहीं हैं कि उनके माँसभक्षण के आंनद के पीछे पशुओं की जिंदगी तबाह होती हैं.... वैसे, लोगों के कुदरती दृश्यों के दर्शन के आनंद के पीछे वे वनस्पतिकायादि जीव ही कारण है, और वे बिचारे स्थावरकाय की दुनिया में पीड़ा ही भुगत रहे हैं। यह Road बना है असंख्य पृथिवीकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकायकी हत्या करके.... इसमें आनंद माननेवाले बिचारे खुद स्थावर का आयुष्य बांध न दे, तो ही आश्चर्य!'

परंतु अब इस उपदेश का अवसर नहीं था। अरे! हम जैसों को भी सुहावना लग जाएँ वैसे वातावरण में नई पेढ़ी को तो क्या कहना? उपरांततः यह आनंद तो वैसी क्रुरता से भरा हुआ भी नही था ना?

उपर इतनी सख्त हवा सामने से आ रही थी कि चलने में मुश्कील हो रही थी, परंतु हम तो वैसे ही चलते रहे। कलश कुमार को तो थकावट के कारण से बीच में ही कोई गाड़ी में (Tempo में) बिठा दिया गया। वे धीरे चलते थे इसलिए हमारे में सबसे धीरे चलनेवाले हेमगुण म.सा. के साथ ही वे चलते और उन्होंने ही यह व्यवस्था कर दी थी। यह व्यवस्था कितने कि.मी. चलने के बाद की वह याद नहीं हैं।

बीच में दो अलग-अलग रास्ते आ रहे थे। वहाँ भुवनभूषण म.सा. रास्ता बताने के लिए खड़े थे। आज न्याय म.सा. भी आगे निकल गए थे।

रास्ते में Bollywood में जिसका नाम अतिप्रसिद्ध है वैसा खंडाला गाँव आया। एक पहाड़ चढ़ो, थोड़ा उतरो, चढ़ो, उतरो.... ऐसा ही चल रहा था।

खंडाला का नाम Tourist Spot के तौर पर प्रसिद्ध हैं। मुंबईवाले सोमवार से शनिवार तक पैसा कमाते है और रविवार को ऐसे स्थानों में पाप कमाते है.... ऐसी जाने के व्यवस्था ही हो गई थी।

खंडाला गाँव को छूकर ही आगे बढ़ते हुए रास्ते में सुंदर मंदीर दिखाई दिया। आनंद हुआ.... अंदर जाकर दर्शन किए, बाहर निकला वहाँ तो न्याय म.सा. आ गए। ''अरे! तुम तो आगे थे ना?''

''हा! पर यहाँ एक दुकानवाले ने 'मत्थएण वंदामि' कहाँ, इसलिए वह जैन होगा ऐसा पता लगने पर मैंने पूछा कि, ''यहाँ पर जैन रहते हैं?'' उसने कहाँ कि, ''हाँ! लगभग 30 घर हैं।'' मैंने पूछा कि, ''किसी के घर पर उबला हुआ पानी प्राप्त होगा?''

उसने मुझे गली बताई, वहाँ जाकर निर्दोष पानी वहोर लाया।'' उनका घड़ा देखकर मुझे पता चला कि निर्दोष पानी की उनकी झंखना सफल हो गई थी। संयम पालन के लिए यदि दृढ़

विहार दिन :

27

मृगशीर्ष सुद 13 दिनांक :
23/12/2015

स्थान :
खोपोली से
लोनावला 15
कि.मी.

संकल्प हो, 'नहीं मिलेगा, तो सहन करूँगा' ऐसी दृढ़ता हो, तो मुझे लगता हैं कि **कुदरत उस महात्मा के अनुकूल हो ही जाती हैं।**

बारडोली से चैन्नई तक एक भी जगह पर न्याय म.सा. ने पानी भी दोषित वापरा नहीं हैं। यह बात पढ़ने वाले के गले नहीं उतरेगी, मजाक समझेंगे, असत्य मानेंगे....तो भी मैं कह रहा हूँ कि, 'यह सत्य हैं।'

पू. तीर्थरत्न वि., पू. जगतशेखर वि., पू. ख्यातदर्शन म.सा. .... यह तीन महात्माओं का मुझे पता है कि जो पानी के बिना भी चला लेते है, ठाम चौविहार कर लेते हैं। गोचरी वापरने के बाद मुँह को शुद्ध करने जितना भी पानी नहीं मिला होने से 48 मिनिट वहाँ ही बैठकर, इस तरह मुख में आते थुँक के द्वारा मुँख शुद्धि गिनने के व्यवहार की अनुचरित कर लेते है.... परंतु दोषित पानी तो नहीं ही पीते .... और तो भी 360 दिनों में ऐसे दिन शायद ही 2-4 आएँ होंगे के जिसमें उनको पानी न मिला हो।

'जहाँ चाह है, वहाँ राह है' यह बात भूलने जैसी नहीं हैं।

हम साथ में ही आगे चले। सूर्य माथे पर आ गया था, इसलिए अब थकान भी लग रही थी। लोनावला अब भी 4-5 कि.मी. था। अब तो रास्ता सीधा था। अचानक रास्ते के बीच ही कलश और श्रीपाल दिखाई दिए।

''तुम यहाँ कहाँ से?''

''Tempo में बैठ गए थे, Tempo वाले ने यहाँ उतार दिया, आपकी राह देख रहे थे।'' हमेशा के लिए हँसते कलश ने अब भी सदाबहार मुस्कान के साथ बालक की भाषा में जवाब दिया। श्रीपाल को Tempo में बैठना नहीं था, परंतु कलश के लिए श्रीपाल ने भोग दिया था।

अंततः हम लोनावला के गाँव के प्राचीन मंदीर में पहुँचे। पीछे के उपाश्रय में रूके। दोरी-काजा समाप्त कर त्वरीत ही पढ़ने बैठा। मालूम नहीं है कि हमारा कितना भोगावली कर्म बाकी होगा, क्योंकि आज भी नीचे कोई जैन के घर का सगाई आदि के निमित्त से रसोड़ा था। वे भक्तिभाव पूर्वक मुमुक्षुओं को ले गए। इतनी थकान के बाद गरमागरम South Indian खाकर सब Fresh होकर वापस आए। और हमारे महात्मा भी उसमें से यथायोग्य चीजें वहोरकर लाएँ। नीचे तीनों Time रसोड़ा था। हालाँकि उसमें सभी चीजे भक्ष्य नहीं होती, परंतु जो भक्ष्य होती है हम उसे वहोर लेते हैं।

अब ऐसा भी देखने मिलता है कि, 'थोड़े संघों में सामाजिक कार्यक्रमों के लिए उपाश्रय के नीचे का Hall खाने-पीने आदि Function के लिए भाड़े पे देने में आते हैं। उसमें अभक्ष्य वस्तु पर निषेध नहीं होता, मतलब की बर्फ, Icecream आदि चीजें भी खुल्लेआम उसमें लाई जाती हैं। कही तो रात्रीभोजन के उपर

विहार दिन :
27
मृगशीर्ष सुद 13 दिनांक :
23/12/2015
स्थान :
खोपोली से
लोनावला 15
कि.मी.

भी प्रतिबंध नहीं होता।'

'उपाश्रय जैसे पवित्र स्थानों में शादी-सगाई-जन्मदिन आदि के भोजन कैसे चलते हैं?' इस प्रश्न का उत्तर ऐसा दिया जाता है कि

1. संघ को साधारण खाते की आवक होती हैं।

2. बहार तो Hall आदि के भाडे के पैसे बहुत लगते हैं। उपाश्रय में कम पैसे लगने से जैनों के पैसे बचते हैं, मध्यम परिवारवालों को राहत होती हैं।

इस बात में मेरा तो ऐसा मानना हैं कि, 'उपाश्रय अतिपवित्र स्थान हैं। उसमें आराधना ही हो तो ही उसकी पवित्रता कायम रह सकती हैं। इसलिए वहाँ स्वामीवात्सल्य हो, वो तो समझे.... परंतु सामाजिक गतिविधियाँ कतिपय उचित नहीं लगती....?'

हाँ! उसका बचाव भी हो सकता है कि, 'नीचे का Hall उसके लिए ही रखा हुआ हैं। वह उपाश्रय के रूप में नहीं हैं। उपाश्रय की योजना बनाते वक्त ही इस तरह तय किया गया था। तो फिर क्या दिक्कत हैं? आराधना तो ऊपर के Hall में ही होती हैं।' मेरी समझ ऐसी हैं कि

'नीचे के Hall मे कोलाहल....?'

'खाने-पीने की Items की सुगंध....?'

'आनेवाले लोगो के मन में अशुभ-सांसारिक विचार....'

इन सभी से वातावरण प्रदूषित होता हैं, उससे आराधक की भावधारा मे Negative असर पड़ती हैं। परंतु यह सब तो भावों की किंमत समझनेवालो को ही समझ में आएगा। बाकी तो भेंस के भागवत जैसी स्थिति हैं।

अंततः तो गीतार्थ गुरूभगवंत इस बात में जो उचित निर्णय ले वह ही प्रमाण!

आज मुंबई-अहमदाबाद-सुरत के लोग वंदन करने आएँ थे। प्रतीकभाई, पीनलभाई, महेंद्राबहन, बिजलबहन.... उनके साथ अलक-मलक बातें हुई। वे अगले दिन शाम को निकलने वाले थे।

भुवनभूषण म.सा. को पैर के दर्द के कारण विहार मुश्कील होने लगे थे। एडी के अन्दरूनी हिस्से की ओर सख्त पीडा हो रही थी। कारण हाथ नहीं लग रहा था। आराम वह ही उपाय था, जो अवसरानुसार मुश्कील था। विहार तो छोटे-छोटे ही थे, तो भी ज्यादा आराम की जरूरत लग रही थी।

यहाँ भी 50 आसपास मूर्तिपूजकों के और उतने ही स्थानकवासीयों के घर थे। भावों की बात का तो वर्णन ही क्या करना?

आज हमारा परेशान होने का दिन था। क्योंकि गोचरी वापरने के पश्चात भी इतनी सारी गोचरी बढ़ी कि दूसरे दिन का भी लगभग सभी का एकासना हो जाए। ऐसी गरबड क्युँ हुई? यह

विहार दिन :
27
मृगशीर्ष सुद 13 दिनांक :
23/12/2015
स्थान :
खोपोली से
लोनावला 15
कि.मी.

पता नही लगा। परंतु मुझे मालूम है कि न्याय म.सा. का हाथ भारी हैं। भक्तिभाव की वजह से वे बहुत बार अच्छी चीजे ज्यादा प्रमाण में ले आते हैं। और तो भी अब तक उनको ऐसा ही लगता है कि, 'मैं ज्यादा नहीं लाता, और लेकर आता भी हूँ, तो भी दूसरे साधुओं की गोचरी ज्यादा लाने में मेरी जितनी ही भूल हैं।'

उनको अब तक यह पता नहीं चल रहा कि, 'दूसरे साधुओं की गोचरी लाने में उनके जितनी भूल नहीं है, और शायद हो भी, तो भी उन्हें तो खुद की ही भूल देखनी हैं। दूसरों की भूलों के साथ तुलना करके खुद की भूल को कम मानने की भूल और इसलिए ही वह भूल सुधारने के लिए दृढ़ प्रयत्न नहीं करने की भूल उनको नहीं करनी हैं।'

परंतु हमारा यह खट्टा-मीठा निजी झगडा चलता ही रहता हैं और आज आपको भी बता रहा हूँ। बढ़ी हुई गोचरी को शाम को दो महात्माओं ने माटी में एकमेक कर, उसे मिट्टी के लड्डु जैसी बनाकर, उस गोचरी के 10-12 बड़े-बड़े लड्डु बनाएँ। उसके बाद भुवनभूषण म.सा. ने योग्यस्थान पर उन लड्डुओं को परठ दिया। 'गोचरी कितनी बढ़ी होगी?' उसकी कल्पना के लिए इतना वर्णन काफी हैं।

यह बात दर्शाने का एक हेतु यह भी है कि संयमीओ की सामान्यतः एक मान्यता है कि, 'दक्षिण भारत में तो गोचरी मिलती ही नहीं हैं, विहार में तो बहुत तकलीफ पड़ती हैं।' हम परंतु चैन्नई पहुँचे, तब तक कुल 132 दिन हुए। एक भी दिन हमें आधाकर्मी या Tiffin की गोचरी लेनी नहीं पड़ी हैं। निर्दोष गोचरी ही मिली हैं, और उसमें भी कुल 48 दिन तो ऐसा हुआ है कि जिसमें या तो मुठ्सी करके शाम को वापरना पड़ा हैं, या तो बढ़ी हुई गोचरी परठनी पड़ी हैं। 'गोचरी कम मिलेगी' ऐसे भाव से अजैनों के गाँव में महात्मा ज्यादा वहोर लेते थे। इसलिए ऐसी घटनाएँ घटित होती।

शाम को हम प्रतिक्रमण करने बैठे और मुमुक्षु मेहमानों के साथ Museum देखने गए। आने के बाद बात की कि 'वहाँ एक ऐसा कारीगर है जो किसी का भी Statue मीन से बनाकर देता हैं। आबेहुब लगता है, परंतु महंगा बहुत हैं। हा! Antique Piece लगता हैं। ऐसी चीज कहीं भी देखने नहीं मिलती....'

मुझे त्वरीत ही विचार आया कि, 'मेरे पू. गुरूदेवश्री का ऐसा लाक्ष का Statue बना दूँ, परंतु तुरंत ही विचार को छोड़ दिया। वे हृदय में रहे, तो भी मेरे लिए बहुत हैं। हाँ! उनके भक्त ऐसा कुछ कार्य करे तो खुशी ही हैं।'

श्मशान प्राप्ति के बाकी दिनों में से मेरा एक दिन कम हुआ।

विहार दिन :

28

मृगशीर्ष सुद
१४

दिनांक :
24.12.2015

स्थान :
लोनावला से
कामसेट
19 कि.मी.

What is
वैराग्य?

विहार दिन :

28

मृगशीर्ष सुद १४ दिनांक :
24/12/2015

स्थान :
लोनावला से
कामसेट
19 कि.मी.

कामसेट के युवक जबरदस्त थे। वहाँ थोड़े सालों पहले एक साध्वीजी का Accident हुआ। उसके बाद जगे हुए युवको ने विहार ग्रुप बनाया। हाथ में लकड़ी, मुख में Police रखे वैसी सीटी.... सशक्त होने से जाने कि सैनिक न हो वैसे दिखनेवाले वे युवक आज हमारी ना के बावजूद भी हमारी रक्षा के लिए विहार में साथ थे।

उसमें एक युवक लंबा और सशक्त शरीरधारी था। जाने कि Army Officer ही देख लों। तथा एक युवक था वह Infosys Company में Software Engineer के तौर पर काम करता था। सभी पढ़े-लिखे थे।

हम रास्ते के दाएँ ओर चल रहे थे। हमारे आगे वे युवक चल रहे थे। और सामने से आती हुई गाडीयों को सीटी और लकड़ी के सहारे से इशारा कर रहे थे कि, 'तुम्हारी गाड़ी इस ओर आने मत देना।' Four Track रास्ता था, बीच में Divider था। इसलिए पीछे से आनेवाली गाडीयों का डर नहींवत् था।

''तुमने तो जबरदस्त ग्रुप बनाया हैं।'' मेरे स्वभाव के अनुसार मैंने प्रशंसा की, जो सच्चे मन से थी। भरयुवानी में जिंदगी जीनेवाले इन लोगो को ऐसे काम अच्छे लगना, जल्दी सवेरे नींद बिगाडना, 2-3 घंटे चलने का परिश्रम करना उसके बदले में 1 रू. भी नहीं मिलना, घर जाकर आराम किए बिना ही नोकरी-धंधे पर लग जाना, खुद के निर्वाह की चिंता करनी.... क्या यह सब आश्चर्य नहीं हैं? उन पू.आ. महाबोधि म.सा. को भी लाखों धन्यवाद हैं। गुजरात में और मुबंई में उन्होंने ऐसे हजारों युवकों को श्रमणसुरक्षा की भावना में रममाण कर दिया हैं।

''यह तो कुछ भी नहीं हैं, म.सा.!'' एक युवक उत्साह के साथ बोला। ''साध्वीजी के Accident के बाद हमने जब यह ग्रुप बनाया था, तब तो Army= सेना के जवान के जैसा ही पहेरवेश हमनें बनाया। माथे पर टोपी भी वैसी ही.... यह सब देखकर गाड़ी चलानेवाले सभी हमारे इशारे के अनुसार ही करते।

परंतु पीछे से पता चला कि, 'Army का पहेरवेश पहनना वह कानूनी गुन्हा हैं। यदि पकड़े जाते है तो सजा भी भुगतनी पड़ती हैं,' इसलिए वह पहेरवेश रद्द किया। सीटी-लकड़ी ही रखी।''

युवक एक Car में आए थे। Car आगे जाकर खड़ी रहती, वापस आगे चलती। बीच बीच में युवक भी बदलते रहते। परंतु मैंने देखा कि सामने की ओर रास्ते पर Car लगभग Road के अंदर की ओर घास पर ही खड़ी रखने में आती.... मुझे लगा कि,

विहार दिन :

28

मृगशीर्ष सुद १४ दिनांक :
24/12/2015

स्थान :
लोनावला से
कामसेट
19 कि.मी.

'यह तो हमारे निमित्त से कितनी सारी हिंसा हो रही हैं। इसलिए तो हमने ना कहीं थी। परंतु युवक माने नहीं।'

अंततः कामसेट गाँव के अंदर जाने का रास्ता आ गया। रास्ता Cross करके हम उस ओर गए। Traffic वाले, डरवाले, आवाजवाले, हाई-वे को छोड़ हम सब उसके साथ चल रहे अंदर के रास्ते में जब चले, तो नीरवशांति की अनुभूति हुई, जाने कि स्वर्ग में आ गए हो।

1-1.5 कि.मी. वहाँ चले और कामसेट गाँव आ गया। शुरूआत में ही उपाश्रय था। अच्छा-खासा बड़ा, Square.... पीछे धर्मशाला, आयंबिल खाता, बड़ा Hall.... बडे संघ में शोभे वैसा उपाश्रय था....

थोडे आगे सुंदर देवविमान के जैसा नयनरमणीय मंदीर था। वहाँ दर्शन करने गया, वापस उपाश्रय मे आया। विहार लंबा होने से प्यास लगी थी, इसलिए साथ में रहे महात्मा द्वारा वहोरकर लाया गया पानी मैंने पीया....

न्याय म.सा. के आने के बाद पाठ शुरू किया। आज सुद चौदस होने से उनका उपवास था। ऐसे विहार में भी उनकी दैनिक आराधना में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं आया हैं। उन्होंने कभी भी किसी भी तरह की चिंता की नहीं हैं। उनके लिए हमें हमारे विहार कम करने पड़े या रद्द करने पड़े हो ऐसा लगभग हुआ नहीं हैं।

प्रतिकभाई आदि यहाँ भी मिलने आएँ। नास्ता करके आए थे। **राजस्थानी आनेवाले मेहमानों की साधर्मिक भक्ति चुके, तो वे राजस्थानी ही किसके कहलाएँ?**

गतदिन को गोचरी बहुत परठी होने से कड़क सूचना के साथ गोचरी लेने भेजे थे। न्याय म.सा. गए नहीं थे, इसलिए आज गोचरी पूर्ण होने के बाद लगा कि 'अब भी थोड़ी भूख हैं।' चौदस की वजह से आयंबिल भी बहुत थे। हमारी तो किसी भी तरह की गिनती की ही नहीं थी। इसलिए न्याय म.सा. को आयंबिल के ढोकले-बेसन वहोरने भेजा। अंतका कुछ बचा था, वह वापरा। चालु गोचरी वापरने के बाद आयंबिल की गोचरी वापरनी अच्छी लगती है, स्वाद बदल जाता हैं ना!

इसलिए ही 'आयंबिल का पंसद आता है, इसलिए मैं वैरागी।' ऐसी भ्रमणा में नहीं रहा जा सकता। आयंबिल का कब पसंद आता हैं? यह देखना पड़ता हैं। **तीखा-तीखा खाने के बाद, मीठा-मीठा खाने के बाद आयंबिल की नमक के बिना की तुवेरदाल भी भाती है....** क्योंकि वह स्वाद पोषक ही हैं। दूसरी ओर यदि हररोज आयंबिल करने हो, और फिर वह चीज अच्छी लगनी बंद हो जाए, तो मानना ही पड़े की वैराग्य सच्चा नहीं हैं। नित्य आयंबिल में भी इन सब चीजों को वापरने में अरूचि न हो, तो समझना चाहिए कि अनासक्ति सच्ची हैं।

विहार दिन :
28
मृगशीर्ष सुद १४ दिनांक :
24/12/2015
स्थान :
लोनावला से
कामसेट
19 कि.मी.

पुना में भव्य को वापस रखने के लिए आने का नहीं माँगा हुआ वचन देकर प्रतिकभाई आदि भव्य को साथ लेकर विदाय हुए। चौदस होने से नक्की किया हुआ विहार रद्द किया। उपाश्रय के एक कबाट में संघवालो ने वैयावच्च के लिए बहुत सारी उपधि रखी थी।

''मत्थएण वंदामि'' कहकर दो-तीन युवको ने प्रवेश किया।

''अरे! तुम सब यहाँ कहाँ से?'' अहमदाबाद तपोवन के उन युवकों को देखकर ही मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे ऐसा लगा था कि विहार में ऐसे-ऐसे गाँवों में तो मुझे शांति मिलेगी ही।

कोई मिलने न आएँ, वह ही शांति!

परंतु, भाग्य कैसे-कैसे खेल खेलता है.... वह देख लो।

''पूना में पू.आ. जिनसुंदरसूरि म.सा. की निश्रा में शिविर हैं। हम इस साल यहाँ पर्युषण कराने आए थे। शिविर में आने के लिए लड़कों को प्रेरणा करने के लिए हम यहाँ आए हैं। पता चला कि आप यहाँ आएँ हो, इसलिए वंदन करने आए है....'' युवको ने स्पष्टता की।

उनके द्वारा समाचार मिले कि, 'पुना में कात्रज तीर्थ से लगभग 3 कि.मी. दूर शत्रुंजयधाम में शिविर हैं। मेरे उपकारी पू.आ. भगवंत, मेरे दूसरे उपकारी पू.पं. राजरक्षित म.सा., और मेरे विद्या शिष्य.... वे सभी वहाँ साथ ही हैं।'

मेरी भावना तो थी ही कि उनको वंदन कर, मिलकर ही आगे बढ़ना, परंतु कि.मी. न बढ़े वह मुझे देखना था।

प्रतिक्रमण के बाद हमने गिनती की, तो पता चला कि '5 कि.मी. बढ़ेगे।' मैंने उस बात को स्वीकार लिया। उसमें मेरा एक स्वार्थ भी था। जब हम कल्याण में थे, तब आहोरवाले धनजी भाई ने मुझे कहाँ था कि, ''म.सा.! फलाने तारीख के रविवार को कात्रज में हमारा महाराष्ट्र में रहे हुए आहोरसमाज का मिलन हैं। 1000 लोग इकट्ठे होंगे। यदि आपकी निश्रा मिले, तो बहुत अच्छा। एक-दो घंटे व्याख्यान भी रख सकते हैं।''

मुझे यह अवसर सफल बनाने जैसा लगा। मैंने तब उनको कहाँ था कि, ''अब तो पक्का कह नहीं सकता, परंतु प्रयत्न करूँगा, शक्य होगा तो उस ही समय प्रवचनादि आयोजित कर लेंगे।'' प्रवचन के बिना किसी भी Program में मुझे उपस्थिति देने की इच्छा नहीं होती।

अब कात्रज जानेवाले थे, तो वहाँ से शत्रुंजयधाम नजदीक ही था। इसलिए सबकुछ बराबर Link हो गया। अधूरे में पूरा.... भुवनभूषण म.सा. के संसारी बहन का घर भी शत्रुंजयधाम के नजदीक ही था।

इस तरह हमारी हरी-भरी मृगशीर्ष सुद 14 भी पूर्ण हुई। 'भगवान जाने वह दिन कब आएगा? जब हम चैन्नई में कोई तिथि पसार कर रहे होंगे?' इस विचार के साथ में स्वापशरण हो

विहार दिन :

29

मृगशीर्ष सुद

१५

दिनांक :

25.12.2015

स्थान :

कामसेट से
पार्श्वप्रज्ञालय
15 कि.मी.

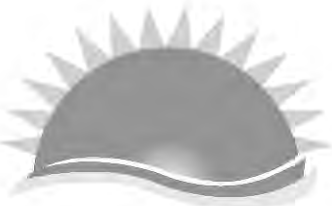

समभाव

विहार दिन :
29
मृगशीर्ष सुद १५ दिनांक :
25/12/2015
स्थान :
कामसेट से
पार्श्वप्रज्ञा 15
कि.मी.

विहार दिन - 29, स्थान - कामशेट से पार्श्वप्रज्ञालय 15 कि.मी. दिनांक - मृगशीर्ष सूद 15, 25/12/2015, समय - सुबह सूर्य

पू. आ. भ. विश्वकल्याणसूरिजी द्वारा प्रेरित पार्श्व-प्रज्ञालय तीर्थ में हम रूकनेवाले थे। रविवार नहीं था, इसलिए यात्रीयों की संभावना कम थी, तो फिर निर्दोष गोचरी कैसे मिलेगी? यह प्रश्न हमें हुआ तो सही, परंतु जवाब भी मिल गया कि

* पूनम होने से दर्शनार्थी आते है....

* वहाँ बच्चों की Hostel भी हैं। 100-150 बालक है, उनके रसोड़े से मिल जाएँगी। इसलिए निःशंक होकर हमने वहाँ जाने का निर्णय किया।

आज विहारमें पहली बार ही हेमगुण वि. मेरे साथ लय से लय मिलाकर चल रहे थे। रास्ते के दोनों ओर Military Training Center देखने मिले। बड़े पहाड़ों पर उनका नाम स्पष्ट रीत से लिखे हुए दिख रहे थे।

तीर्थ के जिनालय की विशेषता यह थी कि वह बहुत ऊँचाई पर बनाया गया था। 52 देरियाँ थी।(या 72?) और जगह जबरदस्त विराट.... बीच में रमणीय प्रतिमा.... दर्शन करते करते मन प्रफुल्लित हो गया। आज मुझे काजा लेना नहीं था। हेमगुण म.सा. आ गए थे।

दर्शन करके नीचे उतरा। वहाँ देखा तो यात्रीयों की Buses, Cars का आवागमन बहुत था। Staff की संख्या भी 50 के आसपास मालूम हुई। उपाश्रय में पहुँचा.... वहाँ न्याय म.सा. ने धडाका किया कि, ''बच्चों की Hostel में से गोचरी वहोरने की 'ना' कही हैं।''

''क्युँ?''

''पहले साधुभगवंत वहोरने जाते होगे। इसलिए वहाँ बच्चों को कम-ज्यादा पड़ता। वे सबकुछ माप-माप कर बनाते हैं। इसलिए निर्णय किया गया है कि, 'यहाँ भोजनालय तो है ही, इसलिए भोजनशाला में से ही वहोरे।' Hostel मे से यहाँ पेढ़ी पर Phone भी आ गया हैं। है सब कुछ एक ही ट्रस्ट मे, परंतु बच्चों के Routineमें किसी भी प्रकार की दखलगिरी न हो, इसलिए ऐसा निर्णय लिया हैं।''न्याय म.सा. ने कहाँ।

''कोई तकलीफ नहीं हैं। यहाँ आज बहुत यात्रिक हैं। उन बिचारों को साधु की निर्दोष चर्या का क्या ध्यान होता हैं? वे तो युँ ही समझते है कि साधुओं को गोचरी चाहिए तो वह कैसे भी चल सकती हैं। उसमें दोष क्या? और गुण क्या? तुम एक काम करो, जल्दी भोजनशाला में जाओ.... दुपहर के लिए दाल और कठोल बन गए हो और बघार बाकी हो, तो तुमको आयंबिल में काम आएँगा और उसके साथ चालु में भी कुछ मिल जाएँ, तो लेकर आना। शीलगुण म.सा. जल्दी वापरने बैठ जाएँगे, ऐसी

विहार दिन :
29
मृगशीर्ष सुद १५ दिनांक :
25/12/2015
स्थान :
कामसेट से
पार्श्वप्रज्ञा 15
कि.मी.

संभावना हैं।''

और न्याय म.सा. गए, परंतु खाली हाथ वापस आएँ, ''चालु की गोचरी तो मिली है, परंतु दुपहर के लिए दाल-कठोल बफा नहीं हैं।''

थोड़ी देर के बाद वापस गए, परंतु खाली हाथ वापस आए, ''नहीं हुआ हैं।''

तीसरी बार गए और खाली हाथ वापस आएँ।

''अब भी नहीं हुआ हैं?'' मैंने पूछा।

''हो गया, परंतु बघार भी हो गया'' मुख के ऊपर शिकायत की रेखा का अंश भी दिखाई नहीं दिया और मात्र वास्तविकता का वर्णन उन्होंने कर दिया।

महात्मा ने खुद के आयंबिल के लिए दाल-कठोल लेने के लिए 3-3 धक्के(!) खाएँ, इसलिए सहजता से यह प्रतीत होता हैं कि 'उनको उस चीज की तीव्र इच्छा होगी, और इसलिए ही जब उन्हें वह चीज न मिले, तब उन्हें आर्त्तध्यान होने की संभावना भी पक्की ही रहती हैं।

परंतु यहाँ ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया, तो फिर क्या समझा जाएँ?

मुझे ऐसा लगता है कि **'अलाभुत्ति न सोइज्जा, तवुत्ति अहिआसए।'** यह सूत्र उन्होंने आत्मसात कर लिया होगा। 'मुझे नहीं मिला' उसका शोक नहीं करना, बल्कि ऐसा सोचकर सहन करना की, 'नहीं मिला, इसलिए मुझे तप करने का मौका मिला....'

मिले तो संयम-स्वाध्याय की वृद्धि....

न मिले तो तप की वृद्धि....

यह एकदम सीधा गणित ....!

शीलगुण म.सा. ने शाम के विहार में पेटदर्द की तकलीफ होने से आज जल्दी गोचरी वापर ली। आज भी भुवनभूषण म.सा. अति थक गए थे। आने के साथ ही वे संथारावश हो गए। अच्छा खासा आराम करने के पश्चात उठे और गोचरी वापरने बैठे।

दुपहर की गोचरी में गड़बड़ यह हुई कि भोजनशाला में लीली सब्जी गोबी की थी, जो हमें चलती नहीं हैं। (समूह में एक-एक पत्तियों को अलग कर, उन्हें देखकर सब्जी बनाने की जयणा का पालन नहीं होता, इसलिए।) और दूसरी सुखी सब्जी तुवेर या ऐसी ही किसी की थी, जो मेरे जैसे को अनुकूल नहीं थी। मीठाई आदि तो मिलती ही थी। अंततः किसी भी तरह एकासना पूर्ण किया। (सभी को एकासना ही था, किसी ने जल्दी कर दिया....)

गोचरी के बाद अचानक पता चला कि उपधि आदि के

विहार दिन :

29

मृगशीर्ष सुद १५ दिनांक :

25/12/2015

स्थान :

कामसेट से

पार्श्वप्रज्ञा 15

कि.मी.

आसपास सेंकड़ो कीडीयोका उपद्रव चालु हो गया था। मैंने थोड़े पात्रें बाहर धूप में रखे, जिससे कीडीयाँ चली जाएँ। न्याय म.सा. की जयणा की भावना बहुत उच्चस्तरीय! उन्होंने उपधि से कीडीयों की जयणा करने में लगभग 1 घंटा बिगाडा(!) होगा।

दो महात्माओं की हालत के अनुसार शाम को विहार करना उचित नहीं था, परंतु आगे व्यवस्थित जगह मिल जाए इसलिए शाम का विहार आवश्यक लगा। मैंने दोंनो को पूछ लिया, उन्होंने भी परिस्थिति का आकलन कर सम्मति दी।।

विहार दिन :

29

मृगशीर्ष सुद

१५

दिनांक :

25.12.2015

स्थान :

पार्श्व प्रज्ञालय से

देहू रोड

7 कि.मी.

ब्रह्मचर्य को

Danger

विहार दिन :

29

मृगशीर्ष सुद १५ दिनांक :

25/12/2015

स्थान :

पार्श्वप्रज्ञालय से देहू रोड 7 कि.मी.

और शाम को फिर विहारयात्रा शुरू हो गई। विहार थोड़ा लंबा होने से हम थोड़े जल्दी निकले। उपाश्रय के पीछे के दरवाजे से चलने लगे। सामने ही आधा कि.मी. दूर मुंबई-पुना हाई-वे नजर आ रहा था।

हमारे दो-तीन साहसिक साधु Cross में कच्चे रास्ते की ओर से हाई-वे की ओर आगे चले, जबकि काँटो से डरता मैं तो Road के अनुसार ही सीधा जाकर हाई-वे पे अग्रेसर हुआ।

हमारे बीच पहुँचने के समय में कोई फरक नहीं पड़ा। मुझे ज्यादा भले ही चलना पड़ा, परंतु मुझे थकान का अनुभव नहीं हुआ, क्योंकि मुझे तो Road पे ही चलना था। और मुझे घासादि की विराधना का दोष भी नहीं लगा। जबकि कच्चे रास्ते से आनेवालो को काँटे आदि की तकलीफ हुई, पत्थरीला रास्ता होने से पत्थर भी चुबे और थोडी-थोडी वनस्पतिविराधना भी हुई।

ईर्यासमिति की व्याख्या में स्पष्ट लिखा गया है कि, **'जिस रास्ते पें लोगों का आवागमन हो, वैसे प्रचलित मार्ग पे ही चलना चाहिए।'** इर्यासमिति की इस व्याख्या की उपेक्षा कर कच्चे रास्तें को, अनाकृष्ट रास्ते को पकड़नेवाले संयमी आत्मविराधना-संयमविराधना के भोग बनते ही रहते हैं और तो भी उस रास्ते का मोह मेरे जैसे को अब भी छुटता नहीं हैं।

हमारा यह विहार अति-चिंताजनक साबित हुआ, क्योंकि Traffic बहुत था। रास्ता दो Track का और उसमें बीच में Divider जैसा कुछ भी नहीं। और दोनों ओर से भरपूर आवागमन चालु ही था। पल-पल सावधान होकर चलना पड़े वैसी हालत! 'आज इतना भारी Traffic क्युँ होगा?' इस सवाल के जवाब से मैं वंछित रहा।

'आज शाम विहार नहीं किया होता तो अच्छा होता....' ऐसे विचार करते करते, गाडीयों से खुद को बचाते, **'प्रभु! जीवंत पहुँचा, तो तेरा उपकार....'** ऐसी बीच-बीच में प्रार्थना करते-करते, सुर्यास्त के समय महामुश्कील से Road के अंदर की ओर पानी को चुकाकर बढ़ते हुए Traffic को देख-देखकर और ज्यादा चिंतित हुआ। आगे बढ़ते-बढ़ते अंततः जिस गाँव में शाम को हमको पहुँचना था, हाई-वे के समांतर रहे उस गाँव के रास्ते के पास हम पहुँचे।

ज्यादातर ऐसा होता है कि गाँव में Traffic न हो, इसलिए बड़ा हाई-वे गाँव के अंदर से नहीं निकलता, परंतु गाँव के बाहर से ही निकल जाता हैं। जिसे By-Pass कहाँ जाता हैं।

गाँव जाने का रास्ता डाई ओर था, और वहाँ बहुत पोलिस भी खड़े थे। इसलिए हमको लगा कि, 'यह Traffic हररोज का नहीं हैं। आज कोई Politician आया होगा या यहाँ कोई बड़ा त्यौहार होगा, इसलिए यह Traffic लग रहा हैं।'

विहार दिन :
29
मृगशीर्ष सुद १५दिनांक :
25/12/2015
स्थान :
पार्श्वप्रज्ञालय से
देहू रोड
7 कि.मी.

रास्ते को Cross कर मैं सामने की ओर गया और पोलिस को ही देहू रोड गाँव के बारे में पूछकर पक्का कर लिया और उस ही वक्त मैंने देखा कि Car मे से उतरकर एक युवान बहन ने भी पोलिस को कुछ पूछा और पोलिस ने एकदम नम्रता से उसका जवाब दिया। मुझे हँसना आया।

बड़े गुनहगारों के समक्ष कठोरतम बननेवाले ये ही पोलिस के पास स्त्रीयों के सामने एकदम नरम हो जाने की कैसी अद्‌भुत कला हैं ना! ना रे ना! यह कोई कला नहीं है, यह सब कुछ वे सीखे नहीं है.... **ये तो अनादिकाल के संस्कारों** ने उन्हें सब कुछ सीखा दिया हैं।

रामायण का पू. गुरूदेवश्रीजी के मुखकमल से सुना हुआ श्लोक....

''अग्निकुण्डसमा नारी, घृतकुम्भसमः पुमान्।
तस्मादग्निं घृतं चैव, नैकत्र स्थापयेद् बुधः।''

स्त्री अग्नि का कुण्ड है, पुरूष घी का कुंभ(घी का घट) हैं। इसलिए समझदार व्यक्ति इस आग और घी को एक स्थान पर इकट्ठा नहीं करता, नहीं तो थीजा हुआ कठिन मजबुत घी भी पिघल जाता हैं। आग के आगे घी का कुछ नहीं चलता।

मैंने सुनी हुई और अनुभवित की हुई बात.... साधुओं के पास 'साधर्मिक' के तौर पर सहाय माँगने के लिए अब भाईओ की जगह बहने ज्यादा आ रही हैं। उनके पति भी अनुभवों से पुख्त हो गए है कि 'संसार में दूसरे सभी क्षेत्रों में भी स्त्री के द्वारा कार्य जल्दी पूर्ण हो जाता हैं, तो साधु के पास भी स्त्री के द्वारा कार्य जल्दी पूर्ण हो जाएगा।' मोहराज की कमाल तो देखो!

यदि किसी साधु को भी साधर्मिक भाई की मदद करने की इच्छा जल्दी न होती हो, परंतु साधर्मिक बहन को रोती देखकर साधु करूणा (!) ग्रस्त होकर मदद के लिए तत्पर होता हो,

स्त्रीओं में भी वृद्‌ध या प्रौढ़ स्त्रीओं की मदद करने में जो तत्परता हो, उससे ज्यादा तत्परता युवान स्त्रीयों की मदद करने में हो,

युवान स्त्रीयों में भी बेहूदे रूप-रंगवाली स्त्रीयों से रूपवान युवान स्त्रीयों को ज्यादा मदद करने में ज्यादा करूणा उछलती हो,

तो मोहराज करूणा के नाम से उस साधु का तागड़ धिन्ना तो नहीं करवा रहा ना? यह बात को खोजना अत्यावश्यक हैं।

मुझे तो ऐसा कहने का मन हो रहा है कि, 'स्त्री का देखकर या स्त्री के साथ बात करने के अवसर पर जो पुरूष नरम बिल्ली जैसा बन जाता हो, वह भावनात्मक दृष्टि से **नपुंसकतुल्य** ही जानने योग्य हैं।' आयंबिल खातों में, शिविरों में, तपके रसोड़ों में, स्वामिवात्सल्यादि में युवको को लड़को को स्त्रीओ की Line में परोसने का उत्साह बहुत होता है.... **क्या ऐसा देखने को**

विहार दिन :
29
मृगशीर्ष सुद १५दिनांक :
25/12/2015
स्थान :
पार्श्वप्रज्ञालय से
देहू रोड
7 कि.मी.

मिलता हैं? तो उसका मतलब क्या निकलता हैं?

बड़ी उमरवाले आदमीयों को भी तपके Pass, उपधानादि के Form देने में खुद के समयादि का भोग देने की इच्छा होती हो(क्योंकि वे Pass-Form लेनेवाले लगभग बहनें ही होती हैं।).... क्या ऐसा घटित हो रहा हैं? तो उसका मतलब क्या?

स्त्रीओं के ओर रखा गया Soft Corner वह पतन का पाया हैं.... यह भूलना नहीं चाहिए।

इसमें मेरे जैसे भी दोषयुक्त हो, तो उसमें आश्चर्य नहीं हैं।

पू. नेमिसूरिजी, पू. लब्धिसूरिजी, पू. प्रेमसूरिजी आदि जैसे विरल पुरूष बहुत ही कम!

मुझे लगा था कि अंदरूनी रास्ते की ओर Traffic नहीं होगा, परंतु मेरा यह अंदाजा भी गलत साबित हुआ....

जब हम देहू गाँव के बाहरी हिस्से की ओर पहुँचे, तो डाई ओर एक विराट मेला जमा हुआ दिखाई दिया। बाबासाहेब आंबेडकर को माननेवाले, 'जय भीम' बोलने वाले, बौद्धमत के अनुयायी हजारों लोगो का वह मेला था। प्रायः कोई नेता (रामदास आठवले) भी वहाँ भाषण देने के लिए आएँ हुए थे। यह सब कुछ देखकर ज्ञात हुआ की 'आज इतना Traffic क्युँ था?'

भारी भीड में जगह करते-करते हुए हम आगे बढ़े, और मन में विचार भी आगे बढ़ने लगे कि, 'भीमराव आंबेडकर एक बार जैनधर्म का स्वीकार लाखों अनुयायीयों के साथ करनेवाला था, परंतु ऐसे लोगो को जैनधर्म में प्रवेश देने की बात पे जैनों में ही मतभेद खड़ा हो गया, और आपसी संघर्ष की वजह से तब वह कार्य स्थंभित हो गया, और अंत में ऐसा हुआ कि भीमराव ने बौद्धधर्म का अंगीकार किया। आज की तारीख में 'जय भीम' के अनुयायी लाखों की संख्या में हैं। 'हमने भूल की? या अच्छा किया?' यह तो गीतार्थ ही तय करे....

पुस्तकों में पढ़ी हुई बातों को स्मरण करते-करते हम आगे पहुँचे। ऐसे गाँव में भी चारों ओर संपूर्ण मुस्लिम बस्ति के बीच में सुंदर मंदीर और उपाश्रय था। तकरीबन 8-10 घर ही थे। अब भी उजाला था और इसलिए मैं उजाले का सदुपयोग करने के लिए लिखने बैठ गया।

मेरा शरीर उस हिसाब से बहुत तंदरूस्त हैं। मुझे लंबे विहार अच्छे नहीं लगते, बस इतना ही हैं। मेरे शरीर की शक्ति तो है ही। 18-20 कि.मी. विहार करके भी उपाश्रय में पहुँचने के बाद तुरंत ही स्वाध्यायमग्न हो जाने की संपूर्ण स्वस्थता मेरे पास होती हैं। और मैं उसका सदुपयोग भी कर लेता हूँ। और उसमें भी लिखना मुझे बहुत अच्छा लगता हैं। मेरे लिए लिखना-पढ़ना-प्रवचन देना ये तीन योग अत्यंत शुभ हैं।

अँधेरा होने को आया, इसलिए हम कल के विहार की चर्चा

विहार दिन :

29

मृगशीर्ष सुद १५दिनांक :
25/12/2015

स्थान :
पार्श्वप्रज्ञालय से
देहू रोड
7 कि.मी.

करने लगे। आपको याद दिला दूँ कि, हमारे साथ साबरमती का अर्हम नाम का युवक भी था। हमारे मुनि परमतेज का सग्गा भाई। अब Mobile पर Google-Map के सहारे हरेक स्थान के पक्के कि.मी. और वहाँ जाने के रास्ते का लगभग पक्का अंदाजा आ जाता हैं। लोगों को पूछते है, परंतु उनके कि.मी. का गणित बहुतबार झूठा साबित होता हैं। और उसमें हमें परेशान होना पड़ता हैं।

हालाँकि अब तक इस तरह ही चला हैं और चल भी सकता है, परंतु इस वक्त हम लंबे विहारों की वजह से अर्हम के द्वारा Google का उपयोग करवाकर, कि.मी. नक्की करते और फिर विहार करते।

परंतु, ऐसे कार्यों में मुझे Interest नहीं है, इसलिए ज्यादातर ऐसे कार्यो में मैं दखल करता ही नहीं। शीलगुण वि. को ही यह कार्य सुपरत किया था और कब विहार करना, कहाँ करना, कितना करना.... आदि वे ही तय करते। परंतु इतना पालन मजबुताई के साथ करते कि

1. **Mobile में नजर करनी नहीं,** कुछ भी देखना नहीं....

2. अर्हम Mobile में देखे, उसे पूछते रहना और फिर निर्णय करना....

आज हेमगुण वि. भी विहार की चर्चा में भाग ले रहे थे। मुझे वह उचित नहीं लगा। ऐसी चर्चा में एक ही व्यक्ति समय दे, वह बस था। दूसरे को उसमें Time बिगाड़ने की जरूरत ही नहीं थी। ऐसे भी वे नूतन दीक्षित थे, उनको ऐसी पंचायती में क्या काम था? हा! कोई एक जन को भोग देना जरूरी था, वह ठीक! बाकी मैं भी उस चर्चा में भाग नहीं लेता। शील म.सा. का आदेश शिष्य बनकर स्वीकारता था।

उस शाम को ही मैंने दो काम किए....

1.हेमगुण म.सा. को सूचना कर दी की ''इन चर्चाओं में तुमें समय का फिजुल व्यय नहीं करना हैं। तुमे तो स्वाध्याय में लीन रहना, आराधना में तत्पर रहना है....''

2. शीलगुण म.सा. को सूचना कर दी कि, ''विहार के लिए अर्हम के साथ चर्चा-विचारणा तुमें एकांत में ही करनी। दूसरा कोई सुन न पाए, उस तरह ही करनी, जिससे दूसरे के मन मे उन चीजों के विचार ही न आए।''

उसके बाद उन दोनों सूचनाओं का बराबर पालन शुरू हो गया था। भुवनभूषण म.सा. की थकान बढ़ते ही जा रही थी। मैं देखने के अलावा, शाता पूछने के अलावा, दूसरा कुछ भी करने में असमर्थ था।

बहुत-सी विचारणाओं के बाद ऐसा निर्णय किया कि, ''अगले दिन कहाँ जाना,उसका पक्का अंदाजा आ नहीं रहा,

विहार दिन :

29

मृगशीर्ष सुद १५दिनांक :

25/12/2015

स्थान :

पार्श्वप्रज्ञालय से

देहू रोड

7 कि.मी.

परंतु औंध नाम के पुना के ही एक बहार के Area में जैन मंदिर और घर है.... ऐसा पता लगा हैं, तो हमें वहाँ ही जाना चाहिए। कि.मी. कितने होगे? उसका अंदाजा नहीं लग पा रहा है, परंतु अनिश्चितता से निकल रहे हैं।''

और 'पुना' की आशा में थकान को सहन करके, विहार की शक्ति इकट्ठा करके भुवनभूषण म.सा. सहित हम सब Christmas की रात्री में घूल गए।

विहार दिन :

30

मृगशीर्ष वद

१

दिनांक :

26.12.2015

स्थान :

देहू रोड से

औंध

16 कि.मी.

भवितव्यता

विहार दिन :

30

मृगशीर्ष वद १ दिनांक :
26/12/2015

स्थान :
देहू रोड से
औंध
16 कि.मी.

गाँव में से 1.5-2 कि.मी. चलने के बाद आगे By-Pass हाई-वे से हम मिल गए। वहाँ अब पूछने के अनुसार हम औंध के रास्ते पें गतिशील हुए।

मैंने देखा कि, 'अब भी वह विकासशील Area था, इसलिए गाडीयों का आवागमन अल्प था। तथा वहाँ विशाल Road बनाएँ गए थे। बीच में पुना City की Bus ही चल सके, इसलिए 2 Track जितना चौड़ा रास्ता था। उसमें दूसरा कोई प्रवेश कर सकता नहीं था। उसके बाजु में वापस 2 Track का रास्ता बाकी की गाडीयों के लिए था। उसके बाद दोनों ओर चलने के लिए Footpath !'

सब मिलाकर 6 Track और दो Footpath जितने चौड़े रास्ते से हम आगे बढ़े। बीच के रास्ते में Bus कभी कभार ही आती थी, और दूसरी गाड़ीयाँ तो बिलकुल नहीं, इसलिए उस रास्ते से निर्भयता से हम आगे बढ़ सकते थे, इसलिए हम तीन तो उस ही रास्ते से आगे बढ़े। 2 नूतन पीछे आ रहे थे।

2-4 कि.मी. चलने के बाद उस बीच के रास्ते में चलने से हमको पोलिस ने रोका, स्पष्ट 'ना' कहीं। अंततः हमें उस रास्ते को छोड़ कर उसके आजुबाजु के रास्ते से ही आगे बढ़ना पड़ा।

ऐसे देखने जाएँ तो हमने चोरी की ही थी। क्योंकि उस रास्ते की मालिकी सरकार की या तो Bus Company की थी। और उस रास्ते पर Bus के अलावा, उनकी Special Bus के अलावा दूसरे किसी का भी प्रवेश स्पष्ट निषिद्ध था। और यह बात हम सबको पता होने के बावजूद भी हम उस ही रास्ते से गए, **यह एक अदत्तादान ही था ना?** जो रास्ता हमें चलने के लिए अदत्त हैं, दिया नहीं गया हैं, उस रास्ते से हम चले। इस तरह महाव्रत में हमें अतिचार लगा। स्वामि अदत्त के हम आभागी हुए।

हम गृहस्थों को तो नीतिका उपदेश देते हैं, परंतु ऐसी बातों में हमारी नीति-प्रामाणिकता कितनी? हम यदि हमारी नीतिओं का बराबर आचरण न करे, **तो हमारा उपदेश सफल न हो,** उसमें आश्चर्य भी क्या?

रास्ते में वृक्ष के नीचे बैठना हो, कोई उस जगह का मालिक न हो, तो भी **'अणुजाणह जस्सुग्गहो'**बोलकर उस क्षेत्र के देवतादि की इजाजत लेकर बैठना होता है, तो जिस चीज का मालिक जीवित है, हमें पता है कि 'मालिक ने इस रास्ते पर आवागमन करने का निषेध किया हैं', तो भी जल्दी सवेरे 'कोई भी रोकने-टोकनेवाला नहीं है' ऐसा सोचकर उस रास्ते से जाना वह अनीति-अप्रामाणिकता कहलाई जाती है या नहीं?

तो महाव्रतपालन करने की हमारी टेक कहाँ गई?

विहार दिन :

30

मृगशीर्ष वद १ दिनांक :

26/12/2015

स्थान :

देहू रोड से औंध

16 कि.मी.

जीवों को नहीं मारना वह ही थोड़ी ना हमारा एकमेव महाव्रत हैं?

परंतु तब तो यह सभी सच्ची समझ पर अज्ञान का-मोह का बादल छा गया था। पोलिस की स्पष्ट मनाई के बाद हमने अनिच्छा से उस रास्ते को त्यजा था।

पू. गच्छाधिपतीश्रीजी ने हमारे पू.गुरूदेवश्री के प्रिय मुनिवर शीलरक्षित वि. को 5 महाव्रत की 25 भावनाओं पर योगशास्त्र के आधार से चिंतन करने के लिए कहाँ था, वह कितना उपयोगी है? यह अब पता चल रहा हैं। बहुत दुःखमयी स्थिति है कि बहुत कम संयमी इन 25 भावनाओं के ज्ञानवाले होंगे।

आज का विहार अतिलंबा निकला। औंध में अंदर मुड़ने का रास्ता आया उसके बाद भी 2.5-3 कि.मी. या उससे भी ज्यादा अंदर चलना पड़ा। अंततः पूछते-पूछते हम मुश्कील से हमारे रूकने के स्थान पर पहुँच सके।

एक बड़ी Hospital थीं हमारी उतरने की जगह....

नीचे ही Garage जैसे स्थान में होता हैं वैसा या बिल्डिंग के Underground में होता हैं उस तरीके का छोटा, तो भी सुंदर मंदीर था। Hospital के भूगर्भ में हमारा रहेठाण था। मंदीर के नजदीक ही नीचे उतरने का ढळाव था.... दर्शन करके मैं नीचे पहुँचा और त्वरीत ही पढ़ने बैठ गया। आज 16-17 कि.मी. का विहार हुआ होगा। लगभग 9 के ऊपर बज गए थे।

न्याय म.सा. के साथ पाठ शुरू हुआ। चालु पाठ में एक युवान बहन वंदन करने के लिए आए। देदार से लगे कि 'सुखी घर के और बहुत पढ़े-लिखे होंगे....' नई पेढ़ी के होने के बावजूद भी बहुत भाविक लगे। वंदन के बाद गोचरी की विनंति की। ''मेरा घर 2 कि.मी. दूर है, परंतु मैं सब कुछ यहाँ वहोराने ले आऊँ....'' उन्होंने अब तक के अनुभव के अनुसार हमें विनंति की, हमने नम्रता से निषेध किया।

''सा. पुण्यनिधिश्रीजी हमारे Relation में लगते है और उनका चातुर्मास वापी के पास उमरगाँव मे है....'' उन्होंने खुद का परिचय करवाया। मुंबई में पालित-पोषित होने से वे बराबर गुजराती बोल नहीं पा रहे थे। हमने उनको थोड़ी पुस्तके पढ़ने की प्रेरणा की। उनका उल्लास जबरदस्त था, शायद खुश्बु बहन उनका नाम! **पुना में Education का Level बहुत उच्चस्तरीय हैं। ऐसे लोगों में भी गजब कोटि की श्रद्धा-भक्ति आश्चर्य चकीत कर दे वैसी थी।**

ऐसे एकदम अनजाने स्थान में अचानक एक तपोवनी युवक वंदन करने के लिए आ चढ़ा।

''म.सा.! मैं तपोवन में पढ़ा हूँ। हम अभी यहाँ ही रहते हैं। हमको लाभ दीजिए। और मुमुक्षुओं को हमारे वहाँ ही नवकारसी के लिए भेजीए।''

विहार दिन :

30

मृगशीर्ष वद १ दिनांक :

26/12/2015

स्थान :

देहू रोड से औंध 16 कि.मी.

हमारे मुमुक्षुओं का काम तो हो गया। भवितव्यता कहो, ऋणानुबंध कहो.... जो कहना हैं वो कहो, परंतु **कौन, कहाँ, कब, कैसे मिल जाता है और मन में खुद की जगह छोड़ जाता है**.... वह पता ही नहीं चलता। मैंने जहाँ-जहाँ संपूर्ण एकांत की अपेक्षा रखी थी, वहाँ-वहाँ स्थानिक या बाहर गाँव से कोई न कोई मिलने आ जाता था। और लंबे वक्त तक बातें भी चलती।

दो नूतन अब तक आएँ न थे, उनके कल के श्रम की मुझे चिंता थी ही। अर्हम को जाँच करने के लिए भेजा। अंततः पता चला की वे गलत रास्ते पे चढ़ गये थे, इसलिए उनके दो-तीन कि.मी. बढ़े थे। दुष्काल में अधिकमास हुआ था। लगभग 18-19 कि.मी. के लंबे विहार के बाद 10 बजे भुवनभूषण म.सा. पहुँचे। दर्शन करके जब वे नीचे आएँ, तो उनके चेहरे पर अपार थकान की रेखाएँ छाई हुई थी।

तब मार्गभ्रष्ट होने की चर्चा करके घाव पर नमक छिड़कने का कार्य नहीं करना चाहिए....

तब आश्वासन देने की हिम्मत का मुझ में ही संचार नहीं हुआ....

चुपचाप उनकी उपधि लेकर एक ओर रख दी....

''वापरने बैठना हैं?''

''नहीं आराम कर लेना हैं।'' कहकर इरियावहीया करके वे तुरंत संथारावश हो गए। मैंने उनकी झोली का प्रतिलेखन कर दिया। विहार में इस तरह उस-उस अवसर पर उन-उन महात्माओं का लाभ मुझे मिला है, मैंने लिया है, उत्साहपूर्वक लिया हैं। गुरू-शिष्य का संबंध मेरे व्यवहार में कम झलकता हैं। **सहायता के संबंध को अनुभवने का आनंद ज्यादा हैं।**

थोड़ी ही देर में हेमगुण म.सा. आएँ, उनके मुख पर सदाबाहर स्मित था। आने के बाद तुरंत पानी वहोरने भी निकल गए। तपोवनी के घर से पानी तथा मुमुक्षुओ की नवकारसी आदि होने से मुंग-पौंअे-लड्डु आदि भी वहोर लाएँ। आराम करके उठे हुए भुवनभूषण म.सा. को मैंने तुरंत ही वापरने के लिए बिठा दिया। अब उनको शाता अच्छी थी।

यदि गोचरी दोषित लेनी हो, तो गोचरी एकदम सुलभ थी, ऐसे भक्तिभाव वाला वह क्षेत्र था। यदि गोचरी निर्दोष लेनी हो तो गोचरी अतिदुर्लभ थी, ऐसे छुटे-छवाएँ कम और दूर-दूर रहे हुए घरवाला वह क्षेत्र था। हमको तो निर्दोष ही एकमेव विकल्प था, इसलिए दुर्लभता की तैयारी के साथ दोंनो महात्मा निकले।

दूर-दूर जाकर, जैनेतरो में भी जाकर गोचरी लाई। न्याय म.सा. को तो Light चालु करना-Bell मारनी-पानी की बाल्टी सरकाना.... आदि विराधनाओं की वजह से दो-चार बड़े घर ही छुट गए। तो भी प्रसन्नचित्त से अजैनों में फिरकर उन्होंने निर्दोष

विहार दिन :
30
मृगशीर्ष वद १ दिनांक :
26/12/2015
स्थान :
देहू रोड से
आँध
16 कि.मी.

गोचरी लाई।

आज भी गोचरी अतिरिक्त हुई। न्याय म.सा. को खपाने के लिए देनी पड़ी।

M.P. रतलाम से भुवनभूषण म.सा. के संसारी मित्र परिवार के साथ पुना आएँ थे। अत्यधिक छान-बिन करने के बाद अंततः दुपहर को ऐसे अनजाने स्थान पर वे आ चढ़े और मित्रमुनि को बहुत भावपूर्वक मिले।

मेरा लेखन सतत गतिशील था, परंतु लिखने के लिए Table हरेक जगह पर अच्छा मिले ही कैसे? इसलिए कहीं पर लकड़े का पाटीयाँ, कहीं बाल्टी पे थाली रखकर, कहीं बड़ा तपेला उल्टा कर, कहीं परात.... ऐसी अलग-अलग चीजों को Table के रूप में बनाकर मुझे लिखना पड़ता। आज भी वैसे ही करना पड़ रहा था। किन्तु, उसमें तकलीफ बहुत होती हैं। रोज-रोज Table छोटा-बड़ा, अलग-अलग लंबाई-चौड़ाई वाला, ऊँचा-नीचा मिलता, इसलिए लिखने की पद्धति में भी बार-बार बदलाव आता। बहुत बार तो लिखने का Mood ही नहीं आता.... परंतु यह सब कुछ चला लेना पड़ता।

नीचे के Hall में दर्दीओ के लिए 10-12 पंलग भी थे। सभी एकदम गद्दी-तकिये के साथ तैयार थे। जब ऊपर आवश्यकता होती तो Lift में उन पलंगो को ऊपर ले जाया जाता। जगह विशाल थी, परंतु भूगर्भ होने से अँधेरा भी विशाल था।

लगभग 4-5 बजे एक 50 के आसपास की बहन दर्शन करने के लिए आए थे। भूगर्भ में से अंदर की सीड़ीयों के रास्ते Hospital में जाया जाता था। में Reception Counter और Lobby के बीच के Passage में बैठे-बैठे लिख रहा था। (आधे माले पे बैठा था वैसा समझो।) क्योंकि वहाँ नीरव शांति थी और लिखने के लिए सीड़ीयों का टेका मिल रहा था। मतलब की सीड़ीयों पर Paper रख कर लिखा जा सकता था।

Hospital में आवागमन कम, परंतु जो लोग अंदर प्रवेश करते, Reception Counter के समीप खड़े रहते, नीचे जाते हुए सीड़ीयों की ओर नजर करते, वे मुझे वहाँ देखकर आश्चर्यचकित हो जाते। मैं मेरे कार्य में मशगुल था। ऐसी जगह पर वे बहन वंदन करने आए थे।

श्रीमंत, प्रतिष्ठित, जानेमाने वे बहन लगे, साथ में भावुक तो सही ही....

''मैं सुबह आ नहीं सकी, खुशबु ने मुझे खबर दी थी। इसलिए अभी आई हूँ। म.सा.! यहाँ से थोड़ी दूरी पर अब शिखरबंधी मंदीर+उपाश्रय+जैनों के लिए Flat का बड़ा Project चल रहा हैं। उसके बाद नजदीक मे ही सभी जैनो को घर मिल जाएँगे। आपके वड़ील गुरूभ्राता पू.आ. चन्द्रजीतसूरि म.सा. की प्रेरणा से हमें इस मंदीर के भगवान मिले हैं.... हमें

विहार दिन :
30
मृगशीर्ष वद १ दिनांक :
26/12/2015
स्थान :
देहू रोड से
आँध
16 कि.मी.

इस संघ को आगे बढ़ाना है....'' आदि बहुत बोले।

मैं श्रोता बनकर, बीच-बीच में थोड़े सवाल-जवाब करता रहा। मुझे Interest था नहीं, बाते मेरे काम की थी नहीं, परंतु उनके भावों को तोड़ भी नहीं सकते थे।

हाँ! एक फायदा यह हुआ कि वह बहन खुद Doctor थे, और उनकी प्रतिष्ठा एक प्रभावशाली महिला के तौर पर बहुत अच्छी थी। इसलिए मेरे संबंधी उनका विनयभाव देखकर Hospital का Staff, बाहर से आए- हुए दर्दी के सगेवाले.... उन सभी को मेरे प्रति अहोभाव की वृद्धि हुई। जाने की मैं बहुत बड़ा संतपुरूष न हूँ, वैसी दृष्टि से वे मुझे देखने लगे।

अंत में तो उस बहन ने हद की। गुरूपूजन करने की जीद की। 100 रू. से पूजन किया और फिर वहाँ खड़े 10-12 लोंगो को मराठी भाषा में पडछंद आवाज से 2-4 मिनिट हमारी पहचान करवाई। हाव-भाव से मुझे इतना तो पता लग ही गया कि, **'उनके मन में मेरी भगवान के जैसी ही छाप चित्रित हो रही थी।'**

बाद में तो एक के बाद एक सभी लोग मेरे पास आने लगे। जो पुरूष थे, चरणों को स्पर्श कर खुद को धन्य मानते। स्त्रीयाँ सिर्फ जमीन पर मस्तक और हस्त को स्पर्श कर खुद को धन्य मानती।

जो थोड़े संन्यासी लालची-कामी-कपटी है, वे खुद की पापलीला किस तरह खड़ी करते होंगे? करोड़ो रूपये कैसे बना लेते होंगे? यह सब अब मुझे समझ में आने लगा। **इस बिचारी भोली, अज्ञानी, श्रद्धालु प्रजा को उन कपटीओं ने ठग-ठगकर खुद का पापाचार खड़ा किया हैं।**

यदि सच्चे साधु जैनेतरों में भ्रमण करे, सच्चा-अच्छा उपदेश प्रदान करे, तो हजारों-लाखों जैनेतरों को जैन बनाना एकदम ही सरल कार्य है.... परंतु ऐसा साहस करे कौन? जैनों का मान-सम्मान, मनभावन गोचरीयाँ.... छोड़कर जैनतरों में शुरूआत में सहन करने पड़ते अपमान और मनतोड़ गोचरीओं को स्वीकार करे कौन? **ऐसे भडवीर शासन में कब और कितने पकेंगे?**

शाम हुई, अँधेरा छाने लगा, हमको सूचित किया गया था कि, 'चूहे आते है, ध्यान रखना।'क्या ध्यान रखना? यह न तो बोलनेवाले को मालूम था न तो हमें। बस एक डर वह भाग्यवंत हमारे दिल में परोते गया।

साधुभगवंत मेरे लिए Hospital के ऊपर जैनघर में से एक Blanket ले आए थे। प्रतिक्रमण के बाद निश्चित किया कि, ''कल के दिन (रविवार को) कात्रज पहुँचना । आहोर समाज का मिलन है, तो उसमें प्रवचनादि के द्वारा लाभ लेना।''ऐसे सामाजिक Function में घुसकर युवापेढी तक पहुँचा जा

विहार दिन :
30
मृगशीर्ष वद १ दिनांक :
26/12/2015
स्थान :
देहू रोड से
औंध
16 कि.मी.

सकता हैं, ऐसा मेरा अभिगम(आशय) था। कल्याणवाले धनजीभाई को समाचार भिजवा दिए थे।

मुझे किसी ने ऐसी खबर दी थी कि, ''पू.आ. जिनसुंदरसूरिजी म.सा. को आपके आगमन के समाचार मिल गए हैं। वे आप को लेने के लिए कात्रज आनेवाले है, और वहाँ आपके साथ एक दिन रूकने वाले हैं।''

इस खबर को मैंने सुनी। पू.आ.भ. की वात्सल्यधारा को ,स्वभाव को मैं अत्यंत अच्छी रीत से जानता था। वे इस तरह सामने आवे, तो उसमें आश्चर्य जैसा कुछ नहीं था। और उसमें शंका करने जैसा भी कुछ नहीं था। परंतु ऐसे अतिआनंद के समाचार सुनने पर भी मेरे मन में एक अशांति उत्पन्न हुई, अरूचि प्रगट हुई, चिंता विकस्वर हुई.... मैंने लगभग वाया-वाया समाचार भी भिजवाएँ कि, ''आप तो बड़े आचार्य हो, आप इतने दूर तक मत आओ। मुझे दोष लगेगा, और मैं तो वापस आपके पास आनेवाला ही हूँ। आप न हो तो, एक-दो दिन की शिविर भी त्रुटित होगी....''

मीठीमध भाषावाले और सुनकर कोई भी खुश-खुश हो जाए, मेरी नम्रता-विवेक को देखकर आनंद प्राप्त करे वैसे उस समाचार के पीछे मेरे मन मैं कैसी चाल थी, कैसा कपट था, कैसा पाप था, कैसा अहंकार था, कैसी लालच थी.... यह मात्र मुझे ही पता था और मैं उसे सभी को दर्शाउँगा, क्योंकि ऐसे अधमाधम गुप्त पापों में कोई फँस न जाएँ ऐसी मेरी हार्दिक करूणाभावना हैं।

परंतु उस रात को मैं चिंता के साथ ही रात्री में खो गया।

हमारे मुमुक्षुओं ने दर्दीओं के लिए तैयार किए गए Bed पर ही नींद खींची। वह Maternity Home की Hospital थी। बहनों की प्रसूति के लिए Hospital थी। मुमुक्षुओं ने तो ठंडी और चूहों से बचने के लिए पलंग का उपयोग कर दिया और मीठी नींद में झुलने लगे।

विहार दिन :

31

मृगशीर्ष वद

२

दिनांक :

27.12.2015

स्थान :

औंध से

कात्रज (पुने)

17 कि.मी

पाप का पश्चाताप

विहार दिन :

31

मृगशीर्ष वद २ दिनांक :

27/12/2015

स्थान :

आँध से

कात्रज (पुने)

17 कि.मी

दीक्षा के पहले एक बार पू. हर्षसागर जी म.सा. को वंदन करने के लिए पाठशाला के परम उपकारी साहेब विनोदभाई के साथ मैं यहाँ आया था। पू.आ. दौलतसागर सूरिजी म.सा. के तब दर्शन किए थे। वयोवृद्ध+लकड़ी के टेके से चलते+कोई अलग प्रकार की ही आँख के ऊपर रही हुई भमुहों(भ्रमरों) की वजह से एक अद्वितीय छाप खड़ी करते(वर्तमान गच्छाधिपति) उनको देख तब भी बहुत सद्भाव पैदा हुआ था। तब वह तीर्थ बच्चे जैसा था। आज 22 साल के बाद 'वह बालक कैसे युवक बनकर शोभता होगा?' उसकी कुतूहुल वृत्ति मन में थी।

चलते चलते ही कल रात की चिंता मेरे मानसपट पर स्पष्ट होकर नाचने लगी।

'हजार-पंदरासो में से 500 जितने लोगो के सामने व्याख्यान देने का मौका आज मिलनेवाला हैं। सभी न आवे, तो भी इतने तो आएँगे ही। उसमें बहुत लाभ हो, इसलिए सुरत से Special किताबें भी मंगवाई हैं। बहुत सारी किताब भी यहाँ बिक जाएँगी। बहुत अच्छा प्रचार होगा।

परंतु यदि पू.आ. भगवंत आ गए तो?

तो प्रवचन कौन करेगा? वे ही करेंगे ना? मुझे व्यवहार से भी उनको कहना तो पड़ेगा ही कि, ''आप वडील हो, बड़े प्रवचनकार हो, आप ही प्रवचन दीजिए....'' और तो फिर मुझे यह मौका फिर से नहीं मिलेगा।

हा! वे तो अतिशय उदार है, समझदार है.... वे खुद अकेले ही प्रवचन नहीं करेंगे। वे मुझे आग्रह करेंगे ही कि, ''तुम ही दो....'' अथवा तो ऐसे कहेंगे की ''तुम भी साथ में ही चलो, हम दोनों प्रवचन देंगे....''

मुझे तो दोनों ओर से नुकसान ही हैं।

वे भले मुझे कहे कि, ''तुम ही दो....'' परंतु मैं तो उस बात को स्वीकार नहीं ही सकता। मेरा ही खराब लगता है....और श्रावक भी थोड़ी ना उनको ऐसे ही छोड़ देगें। उनके प्रवचन के लिए सख्त आग्रह रखेंगे ही।

समझो कि हम दो जनों को साथ में प्रवचन करना पड़े, तो भी नुकसान! मैं भले विद्वान हूँ, परंतु लोगो को वश में कर सके वैसा प्रवचन तो उनके पास ही हैं। इसलिए उनके प्रवचन के सामने मेरा प्रवचन तो फिक्का हो जाएगा। मेरी इज्जत जाएगी, उससे तो प्रवचन नहीं देना ही भला।

बस मैं उनको कह दूँगा कि, ''मुझे बहुत लिखने का कार्य बाकी हैं। इसलिए आप ही प्रवचन फरमाईएँ....''

परंतु, तो फिर वे नएँ 500-700 लोगों का परिचय नहीं होंगा। उनके मन में मेरी एक अच्छी छवी खड़ी नहीं होगी। वे मेरे प्रति अहोभाववाले नहीं बनेंगे। वह सब लाभ पू.आ. भगवंत

विहार दिन :
31
मृगशीर्ष वद २ दिनांक :
27/12/2015
स्थान :
आँध से
कात्रज (पुने)
17 कि.मी

ले जाएँगे, क्योंकि वे सब तरह से सक्षम हैं। करोड़पति भी उनके ओर भक्तिभाव वाले बनेंगे। मेरी किताबे भी ज्यादा नहीं जाएँगी। क्योंकि वे जाहेरात करेंगे, तो भी मेरे सिवा उस जाहेरात में दम नहीं आएँगा।'

मन ही मन में यह घमासान युद्ध चल रहा था। 'पू.आ. भगवंत न आएँ, तो अच्छा....' ऐसी मेली भावना मन में दृढ़ होने लगी।

प्रसन्नचंद्र राजर्षि 7वी नरक तक के अशुभ विचारों तक पतन पाकर वापस ऊपर चढ़ें और मोक्ष तक की भावधारा को उन्होंने प्रगट की, उस तरह मैं भी ऊपर सूचित की गई हद तक के नीच विचारों को करके वापस पश्चाताप की भावधारा में आरूढ़ हुआ।

'मैं साधु हूँ या कौन हूँ? मुझे क्या चाहिए? यश? कीर्ति? प्रतिष्ठा? लोगों में वाह-वाह? यह क्या मेरा जीवन हैं? उससे मोक्ष मिलनेवाला हैं? नालायक! ऐसे उत्तमोत्तम पू.आ. भगवंत तुझे लेने-मिलने 4 कि.मी. सामने आवे, यह तो तेरा प्रचंड पुण्योदय कहलाता हैं। उसके लिए तो तेरे आँखों में से हर्षाश्रु गिरने चाहिए, उसके बजाय तूँ कौनसे उल्टे विचारों में चढ़ गया?'

विहार चलता गया, पश्चाताप की धारा भी चलती गई, साथ-साथ स्वदोषनिंदा अश्रुधारा भी चलती गई। यह सभी बातें किसी के साथ Share करने की इच्छा प्रगटी। पीछे देखा तो न्याय म.सा. आ रहे थे। मैंने गति मंद की, उनके साथ हो गया। बातें चालु की और एक के बाद एक हरेक बात धीरे-धीरे उनको बता दी। उसके बाद आएँ हुएँ प्रशस्त विचार भी उनको व्यक्त किए।

उन्होंने प्रसन्न होकर मेरी सरलता की, निखालसता की अनुमोदना की। परंतु मेरे लिए वह महत्त्व का नहीं था, **मेरा मन निर्मलता की ओर प्रगति कर रहा था। वह महत्त्वपूर्ण था।** परंतु, उनकी प्रशंसा अच्छी तो लगी ही.... परंतु अब मुझ छद्मस्थ को इतने कषाय के लिए माफी देनी ही रही।

अचानक हमारे नजदीक से ही तीव्रगति से एक Bike पसार हुआ। देखा तो Collegian लड़के-लड़की थे। जवानी का नशा चढ़ा हुआ हो वैसा एहसास हो रहा था। पीछे बैठी हुई लड़की ने अति-उद्भट कपड़े पहने थे। उस 1-2 Second के दृश्य को नहीं बोलने में ही फायदा है.... इतना खराब था। कौन बचाएँगा इस आर्यदेश की प्रजा को.... इसका कुछ पता चल नहीं रहा हैं। जैसा जिसका भाग्य! **करूणा को मारना पड़े, मध्यस्थ बनने की भूमिका स्वीकारनी पड़े इतने हद तक हल्कटता व्यापक बन गई है.... तो भी आशा अमर हैं।** हमें तो

विहार दिन :
31
मृगशीर्ष वद २ दिनांक :
27/12/2015
स्थान :
आँध से
कात्रज (पुने)
17 कि.मी

Doctor बनकर जब तक संभवित हो तब तक दर्दी को बचाने का प्रयास करना चाहिए।

अर्हम दो नूतनों के साथ था। वह उनको Google के आधार से एकदम Short रास्ते से आगे ले आया। परिणामतः जब हम कात्रज के पहाड़ के पास पहुँचे, तब हम उनके साथ सम्मलित हो गए। शायद पहलीबार हम सभी साथ में किसी स्थान में एक साथ प्रवेश कर रहे थे।

कात्रज में प्रवेश किया और हम तो स्तब्ध हो गए। 1000-1500 लोंगो के हिसाब से संपूर्ण तीर्थ भरचक था। लोगो का आवागमन सतत चालु था.... उपाश्रय के सामने मैदान में Cricket का खेल चालु था। जाँच करने पर पता चला कि जल्दी सवेरे से ही ये Match चालु हो गई हैं। अलग-अलग शहरों की अलग-अलग Team के बीच पूरे दिन Match खेली जाएगी। बड़ा Tournament रखा गया हैं।

'सभी युवान पूरे दिन उसमें ही तल्लीन रहनेवाले है' इस एक कडवी बात को मैं निगल गया।

उपाश्रय बंद होने से उपाश्रय को खुलवाकर उसमें उतरकर, दर्शन करके मैं तो ऊपर की Gallery में स्वाध्याय के लिए बैठ गया। हमारा पाठ चालु हो गया, इसलिए हेमगुण म.सा. आहोर के रसोड़े में से आयंबिल का कुछ मिल जाएँ, इसलिए गए। परंतु वे खाली हाथ लौटे।

धनजीभाई ने 10 बजे के आसपास मेरा प्रवचन आयोजित किया था। एक बड़े Hall में प्रवचन के लिए उनके साथ उत्साह-उत्साह में मैं पहुँचा।

आश्चर्य उत्पन्न करावे, आघात उत्पन्न करावे, खुद की पुण्य की हीनता स्पष्ट करावे, रास्ते में आए हुए अशुभ विचारों का साक्षात् फल मिला हो उसकी अनुभूति करावे, वैसा वहाँ का माहोल था।

युवापेढ़ी में से कोई देखने न मिले....

प्रौढ़ और वृद्ध भी सब मिलकर 100-150 जितने अंत में इकट्ठे हुए थे।

हालाँकि इस परिस्थिति में मैं तुरंत ही स्वस्थ हो गया, एकदम भाव के साथ प्रवचन दिया। विषय क्या था? यह तो याद नहीं है, परंतु उनके द्वारा दर्शाया गया समय पूर्ण होने पर मैंने विषय अधूरा रख दिया, परंतु उन्होंने बहुत जीद की, ''म.सा.! आगे चलाईए, हमको सुनना है....'' और मैंने 15 मिनिट विषय को ज्यादा खींचकर पूर्ण किया।

वे सब खुश हुए। नई पेढ़ी के विषय की मेरी हार्दिक सूचनाओं ने उनके दिल को हचमचा दिया। **गर्भपात जैसे भयानक पापों की जैनों में हुई व्यापकता को सुनकर भी उन्होंने बिना विरोध के उस बात को स्वीकारा।**

विहार दिन :
31
मृगशीर्ष वद २ दिनांक :
27/12/2015
स्थान :
औंध से
कात्रज (पुने)
17 कि.मी

परंतु फल क्या?

हा! सुनते वक्त शुभभाव जगे होंगे, सम्यक्त्व की स्पर्शना हुई होगी, किसी के जीवन में परिवर्तन भी आया होगा....जिनवचन संपूर्णतः निष्फल नहीं होते। परंतु हम जिस बड़े फायदे की आशा लेकर बैठे होते है, वह हमको प्राप्त न हो, तो हमें निष्फलता का अनुभव होता हैं।

परंतु, मुझे तो सफलता की ही प्रतीति हुई। प्रसन्नचित्त होकर उपाश्रय की ओर मुडा। कराड़वाले किसी भाई ने कराड़ आने की अति- अतिभावपूर्ण विनति भी की। मैंने कहाँ, ''50 कि.मी. जितना बढ़ता हो, तो मैं आऊँगा।'' परंतु 100 के ऊपर कि.मी. उस रास्ते से बढ़ते होने से हमने विचार को गौण किया।

उनके रसोडे में 5-5 मीठाई-फरसाणों का भोजन था। हमने हमारा पुण्य ऐसी गोचरी के पीछे खर्च दिया। न्याय म.सा. को तीर्थ की भोजनशाला में से रोटी-भात मिल गए। सूखी सब्जी भी लगभग मिल गई। आज शाम को ही शत्रुंजयधाम पहुँचने का निर्णय कर लिया था। हा! वह बात लिखना भूल ही गया.... पू.आ. भगवंत मुझे लेने-मिलने यहाँ आएँ नहीं थे। मेरा कैसा भाग्योदय(!) पुण्योदय(!) कहलाता है ना!

शाम को 4 बजे के आसपास ऊपर Balcony में स्वाध्याय कर रहा था, वहाँ तो थोड़े परिचित लगते हुए भाई-बहन वंदन करने के लिए आए। मैं विचारशील हो गया, 'ये सभी कौन हैं?'

वहाँ तो पीछे आते हुए 1-2 बहनों पर नज़र गई। सुरत-कैलाशनगर में पढ़ने-पढ़ाने वाले दीप्ति बहन! और सा. अक्षयप्रज्ञाश्री जी म.सा. के पास जिनकी दीक्षा हुई थी और जो चातुर्मास में हमारे साथ ही थे, वैसे सा.ऋषभनिधिश्रीजी के संसारी मासी जुलीबहन.... सुरत में सालों तक हम रत्नसागर Apartment में 1-2 मजले पर रहते थे, इसलिए इस तरह से मुझे उनका परिचय था....।

''हम तो त्रि दिवसीय यात्रा पर निकले हैं। यहाँ अभी ही हम आए और पता चला कि आप यहाँ पर ही हो, इसलिए सीधे वंदन करने के लिए आ पहुँचे। अब म.सा.! आपको हमें व्याख्यान देना ही पड़ेगा।'' उन्होंने हठ किया।

कुदरत ने जाने कि सुबह के व्याख्यान की कमी को पूर्ण करने के लिए और मैंने सुबह विहार में भाई हुई अच्छी भावना के फलस्वरूप मुझे यह नई दुनिया ही खड़ी करके सुप्रत की। मैंने पहले ही आपको बताया है कि, **'मैंने कल्पना भी नहीं की हो, उस तरह कोई ना कोई कहीं किसी भी तरह मिलते ही रहते हैं।'**

एक निश्चित समय को निर्धारित कर वे गए।

लगभग 150 जितने सुरती लोगों के समक्ष लगभग आधे घंटे तक प्रवचन की रमझट चली। विषय क्या लिया था? यह तो

विहार दिन :
31
मृगशीर्ष वद २ दिनांक :
27/12/2015

स्थान :
आँध से
कात्रज (पुने)
17 कि.मी

मुझे याद ही नहीं हैं। परंतु शुरूआत ऐसे की थी कि, ''आप America जाते हो, और वहाँ कोई भारतीय आपको मिले तो कैसा लगता हैं? उसमें भी कोई गुजराती मिले, उसमें भी कोई सुरती मिले, उसमें भी आपके संघ का ही कोई व्यक्ति मिले तो आपको कैसा महसूस होता हैं? कितना आनंद आता हैं?

मैं अभी महाराष्ट्र मतलब कि विदेश में हूँ।उसमें मुझे गुजराती, सुरती, कैलाशनगर संघ के लोग मिले, इसलिए मुझे तो आनंद की स्पर्शना होगी ही ना! जाने कि मुझे मेरे स्वजन मिल गए।''

सभी ऐसी आत्मीयता से भरपूर प्रस्तावना से खुश-खुश हो गए।

प्रवचन के पश्चात सभी भोजन करने के लिए गए।

जुलीबहन की लड़की ध्वनिबहन वापस वंदन करने आएँ। College में पढ़ने वाले उनको Cousin बहन म.सा. के साथ अच्छा Touch Up था। धर्म का रंग थोड़ा लगा था।

''दीक्षा की भावना हैं?'' मैंने सवाल किया।

''थोड़ी थोड़ी इच्छा हैं। उपधान किया ना, इसलिए! परंतु पप्पा तो मना कर रहे हैं।''

''शुरूआत में तो सभी मना ही करते है, परंतु वैराग्य मजबुत हो, तो अंत में सभी 'हाँ' बोलने लगते हैं। मम्मी भी मना कर रही हैं?'' मैंने वापस सीख देकर सवाल किया।

''नहीं मम्मी कभी भी मना नहीं करती।''

हम बात कर रहे थे, तभी ही उसकी मम्मी आ पहुँची।

''चिंता मत करना। तुम्हारी लड़की को हम दीक्षा के लिए चढ़ाएँगे नहीं,'' मैंने यूँ ही कहाँ।

''म.सा.! आप ये कैसी बात कर रहे हो? मुझे आप पर संपूर्ण विश्वास हैं।'' पूरी मक्कमता के साथ वह बहन बोले।

''वह दीक्षा ले उसमें मुझे आनंद ही हैं। उसके बहन के पीछे भले न वह भी अच्छे मार्ग पर जाएँ। उसके पापा को तो समझा लेंगे। उनका लगाव है, इसलिए भले ना कहे, परंतु वे ऐसे तो बहुत समझदार है।''

सुरत से मंगाएँ हुए ज्यादातर पुस्तक यूँ ही पड़े थे। 'उनका क्या करना? वापस कैसे भिजवाना?' उसकी चिंता एक पल में ओझल हो गई। यह सभी Buses कैलाशनगर ही जा रही थी। और इन पुस्तकों का वहीवट(कामकाज) कैलाशनगर रहनेवाले हेमंतभाई ही संभालते थे। लगभग सूर्यास्त होने आया था और हम शत्रुंजयधाम की ओर जाने की तैयारी करने लगे।

विहार दिन :

31

मृगशीर्ष वद

११

दिनांक :

27.12.2015

स्थान :

कात्रज से
शत्रुंजयधाम,
4 कि.मी.

मिलन की वेला

विहार दिन :
31
मृगशीर्ष वद २ दिनांक :
27/12/2015
स्थान :
कात्रज से
शत्रुंजयधाम,
4 कि.मी.

हमारा पाँच लोगो का काफला शत्रुंजयधाम की ओर अग्रेसर हुआ। परंतु यह शाम का विहार हमें भारी पड़ा। कारण

1. हमको ऐसे समाचार थे कि 2-3 कि.मी. है, परंतु लगभग 4-5 कि.मी. का अंतर निकला....

2. रविवार होने की वजह से Traffic भयंकर....

3. रास्ते पे सब जगह Work In Progress का Board लगा था, यानि कि Road टूटे-फूटे थे....

4. अँधेरा छा गया था....

5. थकान बेहिसाब थी....

ऐसे अवसरो पर मेरे में जोश बढ़ जाता है और आज भी ऐसा ही हुआ। ऐसे Traffic में बीच-बीच से जगह करते हुए फटाफट आगे बढ़ता गया।

रास्ते में शीलगुण वि. म.सा. को एक मराठी भाई मिले। उन्होंने उनका पूछा कि, ''आप किस तरह के साधु हो?'' शीलगुण वि. म.सा. Bombay के होने से तथा टूटी-फूटी मराठी भाषा आती होने से, उन्होंने उस भाई को मराठी में उपदेश दिया तथा जैन साधु के आचार-विचारो के बारे में बताया। वह व्यक्ति अत्याश्चर्यचकित होकर तथा 'यह तो बहुत कठिन है' ऐसी छाप लेकर, शीलगुण म.सा. के आशीर्वाद ग्रहण कर जिनशासन को मन में बसाकर खुद के रास्ते पे अतीतकाल के लिए चला गया।

दूसरी ओर मेरे अंदर पल-पल नई उर्मीयों का संचार हो रहा था।

आज बहुत दिनों के बाद मेरे उपकारी, मेरे पू. गुरूदेवश्री के परमभक्त, वात्सल्य के अटूट भंडार पू. आ. भगवंत मुझे मिलेंगे....

'आज बहुत समय के पश्चात मुझे दीक्षा के बाद बहुत बार वात्सल्यका प्रदान कर संयम में दृढ़ बनानेवाले पू.पं. राजरक्षित म.सा. मिलेंगे....'

'आज न जाने कितने सालों के बाद तत्वरूचि, योगरूचि, नयरक्षित, यश म.सा.(नया नाम याद नहीं हैं।),ऋषभ म.सा..... आदि मेरे विद्याशिष्य मुझे मिलेंगे....'

'आज पहली बार दो बालमुनि भी मुझे मिलेंगे....'

यह सब हमारा अभिन्न परिवार था।

पू. गुरूदेवश्री के कालधर्म के बाद अलग-अलग ग्रुप विचरण करने लगे। पहले तो पू. गुरूदेवश्री के हिसाब से सबका मिलना-जुलना होता, अब तो वह पुनित मिलन भी बंद हो गया था। हा! एक दूसरे के प्रति के लगाव में कोई खामी नहीं आई थी, परंतु Special मिलने का कोई कारण रहा नहीं था।

विहार दिन :
31
मृगशीर्ष वद २ दिनांक :
27/12/2015
स्थान :
कात्रज से
शत्रुंजयधाम,
4 कि.मी.

स्वाभाविक मिलना हो जाएँ, तो पूरानी यादों को पुनर्जीवित कर हँस लेते, रो लेते। पू. गुरूदेवश्री की उपस्थिति में निर्मित होते उस भव्य माहोल को याद कर सभी आनंदविभोर हो जाते, और 'आज वे पूनित प्रेरणाश्रोत नही रहे' इस बात को स्मरण कर सभी रो भी लेते।

'साधुजीवन में ऐसा राग अच्छा नहीं हैं।' ऐसी आदर्श की बात को Side पे रखके मैं तो इतना ही कहुँगा कि, **'गुरू के गुणों के राग से बहनेवाले सिर्फ दो अश्रु के बुँद भी अनंतभवो के पापकर्मो को डुबाने में समर्थ महासागर जैसे हैं।'**

''निसीहि'' बोलकर मैंने उपाश्रय में प्रवेश किया.... तुरंत ही ''पधारो! पधारो!'' कहते हुए सभी साधुभगवंत दौड आएँ। हा! खुद आचार्य भगवंत भी।

''आज आनेवाले हो, वैसी खबर तो भेजनी थी।'' पू.आ. भगवंत ने कहाँ और दूसरे साधुओं को सूचन किया कि, ''जाओ!!! पीछे आते हुए मुनिवरों को लेने जाओ....''उसके पहले तो वे अवसरज्ञ साधु फटाफट तैयार होकर बाहर निकलने ही लगे थे। **अतिथि सत्कार के पू.गुरूदेवश्रीजी ने दिए संस्कार मुझे एकदम जीवंत-जागृत-ज्वलंत देखने मिले।**

थोड़ी देर में तो सभी महात्मा आ गए। 1/2-3/4 घंटे तक सभी साधुओं ने एक-दूसरे के साथ अलकमलक की बाते की। परस्पर मात्र कृत्रिम व्यवहार नहीं था, परंतु सदाबहार आत्मीयता थी। अंततः दूसरे साधुभंगवत प्रतिक्रमण करने बैठे और पू.आ. भगवंत और मैं Room में बातें करने के लिए बैठे। वैसी गंभीर चर्चा नहीं थी। या वैसे कोई निर्णय करने नहीं थे, परंतु साथ में बैठते है तो ग्रुप आदि की बहुत-सी बातें होती हैं।

एक घंटे के बाद हम खड़े हुए। ''देखो! कल के शिविर में तुम्हें एक घंटे की वाचना देनी हैं।'' जबरदस्त आग्रहपूर्वक पू.आ. भगवंत ने खुद की सदाप्राप्य उदारता प्रकट की।

''साहेबजी! छोटे बच्चों के समक्ष मैं कभी भी वाचनादि देता नहीं, सच कहुँ तो मुझे जमता नहीं हैं। Please मुझे आग्रह मत करना....'' मेरी भाषा में सच्चाई को परखकर उन्होंने वह बात छोड़ दी।

प्रतिकम्रण के बाद बाकी सभी साधुओं के साथ भी बातचीत हुई। सभी का अत्याग्रह था कि 'मैं बाकी के दिन यहाँ की शिविर में रूकुँ....' परंतु मैंने 'ना' कहीं। एक दिन के बाद निकल जाने की बात की। उन सभी के आग्रह में कमी नहीं थी, परंतु सालों से मेरे जीद्दी स्वाभाव से परिचित उन्होंने मुझे विशेष कुछ कहाँ नहीं। परंतु मेरी ठाणी हुई बात गलत साबित हुई। एक दिन के बदले हमें तीन दिन रूकना पड़ा, क्योंकि भुवनभूषण म.सा. की

विहार दिन :

31

मृगशीर्ष वद २ दिनांक :

27/12/2015

स्थान :

कात्रज से

शत्रुंजयधाम,

4 कि.मी.

भीवंडी से लेकर पुना तक की थकान आज हदबाहर हो चुकी थी और उनको थकान का बुखार लागु हो गया था। बंध रूम में उन्होंने संथारा किया.... हालाँकि बुखार आने की खबर हमें तो अगले दिन ही पता चली।

Hall के बीच संथारा करके बहुत महीनों के पश्चात विशाल समुदाय में संथारा किया।

विहार दिन :

32

मृगशीर्ष वद

३

दिनांक :

28.12.2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

गुरुदेव के संस्कार

विहार दिन :
32
मृगशीर्ष वद ३ दिनांक :
28/12/2015
स्थान :
शत्रुंजयधाम

पू.आ. भगवंत के साधुओं ने आज कमाल की मेहमानगिरी की। सुबह तो हम सभी का प्रतिलेखन तो कर ही दिया, परंतु आज उन्होंने हम पाँचों के सभी वस्त्रों का काप भी निकाला। मैंने बहुत इन्कार किया, परंतु वे माने नहीं। इस भक्ति में भी कंटाले की बात नहीं,अपितु पूरे उल्लास के साथ 2-3 घंटे तक का यह काप-अनुष्ठान जारी रहा।

भुवनभूषण वि. म.सा. ने आज दीक्षा के बाद पहला बियासणा किया। मेरे शिष्य बियासणा करे, वह मुझे पसंद नहीं हैं, परंतु मैं कदाग्रही नहीं हूँ.... **परिस्थिति** देखकर नवकारसी की भी फटाफट छूट दे देता हूँ।

वे बियासणा कर रहे थे, तब मैं एक-दो बार पूछकर भी आया। बुखार परिश्रम का था, इसलिए दवाई की नहीं, परंतु आराम की जरूरत थी।

मुंबई से प्रतिकभाई भव्य को छोड़ने के लिए वापस आ गए थे। साथ में भव्य के जापान रहनेवाले Cousin मामा भी आए थे। उन सभी के साथ समागम हुआ।

Cousin मामा ने कहाँ, ''म.सा.! छोटा था, तब धर्म करता था। उसके बाद तो धंधे में ऐसा घुल गया कि बात मत पूछो। जब पता चला कि भव्य इस रास्ते पर जाने का विचार कर रहा हैं, तब आनंद की सीमा न रही। उसे और आपको मिलने की इच्छा तीव्र बनी।

म.सा.! जापान में भले ही जैनधर्म का अंश भी नहीं है, परंतु वहाँ की प्रजा के मानवतादि गुण बहुत ही सराहणीय हैं। धंधे में प्रामाणिकता, बहार से आए हुए किसी को भी मदद करनी, कोई सिर्फ रास्ता पूछे तो उसके साथ त्वरीत ही रास्ते को दिखाने जाना.... आदि गुण उनके खुन में बहते हैं। वे अगर बोल दे कि, ''25 तारीख को पैसे दूँगा'', तो वे 26 नहीं होने देते। जबकि हमारे यहाँ तो पैसे लेनेवाला भी समझ के ही बैठ जाता है कि 'उसने 25 कहीं है, परंतु वह 30 तो करेगा ही।'

म.सा.! भारत देश के लिए मुझे नाज़ है, परंतु इतना मैं जरूर कहुँगा कि, 'किसी ना किसी वजह से **हमारी प्रजा में नैतिक गुणों की बहुत अल्पता हैं।**''

मुझे उनकी देश-विदेश की बातों में बहुत दिलचस्पी हुई।

''गुरूजी! आज हम सब लोगों का काप इन साधुओं ने निकाल दिया।'' शिष्य ने मुझे बात कहीं।

''अच्छा। सभी का? न्याय म.सा. का भी?''

''हाँ! उसमें मेरी मुहपत्ती थोड़ी फट गई थी, तो बालमुनि ने पूरी फाड़ दी और मुझे नई दी। भुवनभूषण म.सा. की मुहपत्ति सबेरे ही खो गई थी, तो उनको भी नई दी।''

विहार दिन :
32
मृगशीर्ष वद ३ दिनांक :
28/12/2015

स्थान :
शत्रुंजयधाम

''अच्छा, ठीक हैं।''

''गुरूजी! मेरा चोलपट्टा थोड़ा फट गया था, तो उसे पूरा फाडकर वह भी नया दिया।'' शिष्य की वाणी में शिकायत और तारीफ.... दोनों के मिश्रसूर थे।

''और गुरूजी! सबसे महत्त्व की बात.... खुद पू.आ. भगवंत भी 15-20 मिनिट काप में उपस्थित थे....'' शिष्य ने बात की और मैं चौंका।

''क्या? पू.आ. भगवंत बैठे? हमारे काप में? परंतु दूसरे साधु तो बहुत है ना....''

''बहुत तो है, सभी ने मना किया, तत्त्वरूचि म.सा. तो झगडने ही लगे, परंतु वे मान ले तो पू.आ. भगवंत किस बात के? बलजबरी बैठे, और क्युँ बैठे वह पता हैं?''

''क्युँ?''

वे कह रहे थे कि, ''गुणहंस म.सा. ने मुझे छेदग्रंथ की पढ़ाई करवाई हैं। मेरे उपकारी हैं। उनके कम से कम 1 कपड़े का काप तो मैं निकालूँगा ही।'' और सचमुच आपके कपड़े का काप उन्होंने निकाला। वे दिखावे के लिए ऐसा नहीं कर रहे थे, परंतु जबरदस्त उत्साह उनके मुख पर नजर आ रहा था।''

मेरी आँखें सजल हो गई। ये कैसी खानदानी वाले महात्मा! पंचावन उपर की उम्र! जबरदस्त शासनप्रभावक! 8-10 शिष्यों के गुरू! अत्यन्त पुण्यवान! आचार्य पदवी के धारक! और वे इस तरह काप निकालने बैठ जाएँ? और उनको न आएँ शरम या न लगे लज्जा-संकोच....

धन्यवाद है उन पू. गुरूदेवश्री को.... जिन्होने खुद के शिष्यों में ऐसे उच्चकोटी के संस्कार का सिंचन किया....

आज सुबह-सुबह ऋषभ म.सा. मेरे साथ ही दर्शन करने आए थे। उनका मधुर स्वर मुझे बहुत प्रिय हैं। इसलिए उनके मुख से स्तुति-स्तवन सुने।

उन्होंने कहाँ कि, ''गुरूजी(पू.पं. राजरक्षित म.सा.) ने मुझे प्रतिज्ञा दी है कि उनकी सम्मति के बिना मुझे कहीं भी गाना नहीं। गुरूजी को योग्य लगे, तो ही उन उन स्थानों पर गाने की छूट देते हैं, वरना तो मना ही कर देते हैं।''

मुझे दादागुरूदेव प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. की स्मृति ताजी हुई। पू. उपाध्याय विमलसेन म.सा. का स्वर अतिमधुर होने से दादा गुरूदेव ने उन्हें जाहेर में गाने को ना कहाँ था, और मैंने सुना है कि उन्होंने जिंदगीभर आज दिन तक उस नियम का बराबर पालन किया हैं।

'मधुर स्वर से स्त्रीयों का आकर्षण हो और कहीं ब्रह्मचर्य में हानि पहुँचे तो?' इस एकमात्र भय से उन्होंने यह प्रतिज्ञा दी थी। शिष्य की सुरक्षा के लिए कितनी सतर्कता!

विहार दिन :
32
मृगशीर्ष वद ३ दिनांक :
28/12/2015

स्थान :
शत्रुंजयधाम

वे ही संस्कार पू. गुरूदेवश्री के द्वारा पू. पं. म.सा. में संचरित हो, तो उसमें आश्चर्य क्या?

दुपहर को गोचरी परोसने का कार्य पू.आ. भगवंत और पू.पं. भगवंत ने ही किया । मुझे पहले से ही पता था कि, 'मुझे ये सब लोग मीठाई खिला-खिला कर परेशान कर देंगे।' इसलिए मैंने पहले ही Red Signal दे दिया था कि, ''मैं ज्यादा नहीं वापर पाऊँगा। Please! मुझे हरगिज परेशान मत करना।'' मेरे मुख पर छाएँ हुएँ गंभीरभाव को देख उन सभी ने मुझे ज्यादा हेरान-परेशान नहीं किया। बाकी यदि एक-एक साधु 2-2 मीठाई के टुकड़े भी खिलावे, तो मुझे 30-40 टुकड़े खाने पड़ते।

कुल 3 बालमुनि थे। 2 पू. आ. भगवंत के शिष्य थे, 1 पू.पं. भगवंत के शिष्य थे। पू.आ. भगवंत के एक बालमुनि की ओली पूरी हो रही थी और दूसरे बालमुनि ओली शुरू करनेवाले थे।

''शिविर में सुबह-दुपहर-शाम बच्चों को मीठाई-फरसाण-मेवा खाने मिलता हैं। हम भी वापर रहे हैं। परंतु हमारे यह बालमुनि आयंबिल कर रहे हैं। बोलो....'' पू.आ. भगवंत ने उनकी जाहेर में अनुमोदना की।

अनुमोदना करने के दो कारण....

1. उनकी स्थिरता बढ़े....

2. दूसरे को आलंबन मिले....

वहाँ 4-5 साधुभगवंत पूरानी लिपियों का अभ्यास कर रहे थे। पुना से एक पण्डितजी पढ़ाने के लिए आते थे। परंतु हम आए होने से एक दिन के लिए उन्होंने पण्डित को मना कहलाया था। रात को मु. नयरक्षित म.सा. के भक्त 25-30 युवक आए थे। इस महात्मा का पुण्य चुम्बकीय हैं। जंगल में मंगल करने की क्षमता, संपूर्ण नास्तिक जैसे सेंकड़ो युवक उनके पीछे पागल जैसे भटकते हैं। वे किसी को दाद नहीं देते, तो भी वे इनका पीछा नहीं छोड़ते।

मेरे विद्याशिष्य नयरक्षित म.सा. की विनति से उन युवको को 20 मिनिट मैंने प्रवचन दिया। इस महात्मा का यदि स्वास्थ्य कमजोर नहीं होता, तो जिनशासन में बेनमून कार्यो की हारमाला रची जाती.... साम्प्रत भी थोड़े कार्य तो कर ही रहे हैं। इस तरह हमारा शत्रुंजयधाम का पहला दिन अस्त हुआ।

विहार दिन :

33

मुगशीर्ष वद

४

दिनांक :

29.12.2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

बाल मुनि

विहार दिन :

33

मृगशीर्ष वद ४ दिनांक :

29/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

कल उन्होंने हमारी भक्ति की थी, आज कृतज्ञता भाव से हमने उन सभी की भक्ति की। कल और आज भी उन महात्माओं की झोली का पडिलेहण करने का लाभ मेरे शिष्यों ने लिया था।

आज नया दृश्य देखने को मिला।

मु. विमलरूचि म.सा. दो बालमुनिओं को संभालते थे। आज वे दो बालमुनिओं ने खुद के बालसुलभ स्वभाव की वजह से कुछ धमाल की थी, गाथा नहीं की थी।

विमलरूचि म.सा. ने पू.आ. भगवंत को शिकायत की और पू.आ. भगवंत ने गुस्से (!) होकर उन दोनों को डाँट दी। मैं तो देखते ही रहा। मुझे तो तुरंत पता चल गया कि पू. आ. भगवंत खुद का हास्य अटकाकर गुस्सा प्रदर्शित कर रहे हैं। परंतु वे दो तो सचमुच थरथर गए।

''चलो.... मेरे सामने दोनों अंगुठे पकड़ो....'' और सचमुच दोनों बालमुनिओं को अंगुठे पकड़वाए गए। उसमें थोड़ी देर के बाद अहमदाबादी बालमुनि कुछ जवाब देने के लिए अंगुठे को छोड़ सीधे हुए.... कि त्वरीत ही पू.आ. भगवंत ने उनको कड़े स्वर में धमकाया ''अेय! सामने जवाब देता हैं? चूप! अंगुठा पकड़....'' और उसके बाद वे वापस नीचे झुके....

मैं पू.आ. भगवंत के पास ही बैठा था। मुझे यह सब बहुत पंसद आया। बालमुनि थोड़ी धमाल करे, थोड़ी भूल करे यह तो स्वाभाविक ही हैं। उनमें चंचलता तो होती ही है, परंतु पू.आ. भगवंत उनको जिस तरह संभालते थे, उनके गुस्से में जो बनावट थी, और चालाकी थी वह गजब की थी, सिर्फ जीभ और मुख का नाटक वे अच्छे से अच्छा चरित कर रहे थे। परंतु वह नाटक ऐसा था कि बहुत कम लोग समझ सके कि, 'यह नाटक चल रहा हैं।'

''गुणहंस म.सा.,'' पू. आ. भगवंत बोले, ''इस तरह बालमुनिओ की देखभाल करनी पड़ती हैं।'' वे एकदम निखालसता से बात कर रहे थे।

दोनों बालमुनिओं ने क्या भूल की थी, वह तो मुझे याद नहीं है, परंतु उसके पश्चात अभी पू.आ. भगवंत के सामने खुद के बचाव पक्ष को रजु करने में एक ने डाँट खाई, दूसरे नम्र रहे इसलिए प्रशंसापात्र बने। अंत में दोनों या दो में से एक रोएँ.... और पूर्णाहुति के बाद दोनों को पू.आ. भगवंत ने पास में बुलाया, मस्तक पे हाथ सहलाया प्रेम से.... एक सग्गी माँ से भी ज्यादा प्रेम से दोनों को नहला दिया.... सूचनाएँ दी और विमलरूचि म.सा. को वापस दोनों बाल-मुनि सुप्रत किए।

मेरा हृदय इस दृश्य को देख भर आया और आज भी आठ-दस महिनों के बाद यह लेख लिखते वक्त भी परिस्थिति समान

विहार दिन :
33
मृगशीर्ष वद ४ दिनांक :
29/12/2015

स्थान :
शत्रुंजयधाम

हैं....।

ऐसा कहने की इच्छा होती है कि यदि किसी को खुद के छोटे बच्चों को दीक्षा देनी हो, तो पू. आ. भगवंत जिनसुंदर सूरिजी म.सा. के पास देना। **आपके बच्चे को उसके साथ उसकी 'माँ' नहीं होने का अनुभव कभी भी नहीं होगा** उसका मुझे दृढ़ विश्वास हैं।

पू.आ. भगवंत उस वक्त बोले थे कि, ''गुणहंस म.सा.! छोटे-कोमल है ये बच्चे! उनके मम्मी-पप्पा ने मुझ पर अगाध भरोसा रखकर हृदय के टुकड़े जैसे बच्चों को मुझे सौंपा हैं। मुझे माँ और बाप दोनों की भूमिका निभानी हैं। **सख्त भी मुझे ही बनना है और वात्सल्य भी मुझे ही देना हैं।** पू. गुरूदेवश्री के पास यह सब देखा है, सिखा है, इसलिए दिक्कत नहीं होती।'' गुरूदेवश्री के स्मरण से बोलते-बोलते उनका आवाज नर्म हो गया।

आगमज्ञाता-शास्त्रज्ञाता-विद्वान ऐसे मुझे उनके पास से बहुत कुछ सिखने को मिला।

पू.आ. भगवंत भी छद्मस्थ है, मुझे उनके साथ 20 साल से परिचय हैं। उनके दोषों को भी मैं जानता हूँ। परंतु केवलज्ञानी के सिवा दोष किसमें नहीं हैं? 'हमारे समुह के 110 साधुओं में हमारे पू. गुरूदेवश्री के गौतमस्वामि जैसे यह महात्मा है' ऐसा मैं तो मानता ही था। और मेरी मान्यता दृढ़ बनती जाएँ, वैसी घटनाएँ घटित होती ही गई हैं।

''मुंबई से तुषारभाई सपरिवार आ रहे है,'' वहाँ मुझे समाचार मिले।

तुषारभाई मतलब मेरे संसारी Cousin भाई! अहमदाबाद में 1200 के आसपास बहने पढ़ती है, सुरत में 700 के आस-पास बहने पढ़ती हैं(धार्मिक अभ्यास).... उन सभी की बड़ी-बड़ी श्रुत प्रभावना दी जाती हैं। उन सबका लाभ लेनेवाले यह भाग्यशाली! तिजोरी छोटी, परंतु हृदय बहुत ज्यादा विशाल! मुझे उन्हें हमेशा के लिए **धर्मक्षेत्र में दान में अंतराय करना पड़ता है,** वैसी स्थिति!

वे सपरिवार आएँ। उन्हें गाँव की पंचायती से भी ज्यादा नया-नया सुनने की रूचि तीव्र! संसारी भाभी मनिषा बहन तो कर्मग्रंथादि पढ़े होने से, उनके सग्गे बहन, मम्मी-पप्पा, काका ने दीक्षा ली होने से अत्यंत धर्मरूचिवाले! उन्होंने विनति की ''कुछ धर्मोपदेश दीजिए।''

मेरा स्वभाव विचित्र हैं।

1. व्याख्यान की पाट पर व्याख्यान दे सकता हूँ।
2. नीचे उतरने के बाद पाठ दे सकता हूँ।
3. परंतु कोई आवे और हितशिक्षा माँगे, तो मुझे क्या

विहार दिन :

33

मृगशीर्ष वद ४ दिनांक :

29/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

बोलना? उसका पता ही नहीं चलता। मैं भी मुँगा और वे भी मुँगे.... ऐसी हालात होती हैं।

4. उसमें यदि बोलना शुरू हो जाएँ, तो दूसरों को मुझे रोकना पड़ता हैं। Break बिना की Car जैसी हालत भी कभी-कभार हो जाती हैं।

इसलिए पहले तो सोचमें पड़ा कि, 'मैं क्या बोलु?'

परंतु बाद में मुझे सुरत-उमरा से शुरू हुआ 8 भंगीवाला विषय याद आ गया और मैंने वह विषय इस परिवार को समझाना शुरू किया। लगभग 1.5-2 घंटे तक एकाग्रतापूर्वक सभी ने सुना। अरे, उनके College-School जानेवाले पार्श्व-श्रेणी नाम के बच्चों ने भी उतनी ही उत्कंठा के साथ सबकुछ सुना।

''म.सा.! यह तो मस्त पदार्थ हैं। इसके ऊपर एक पुस्तक लिखो ना?''

''समय बहुत कम मिलता हैं।''

''समय निकालकर भी लिखो। विहार में लेखन हो जाएगा और छापने का लाभ....''

''वह देखेंगे, पहले पुस्तक छपने तो दो....''

शाम को उस परिवार ने विदाई ली।

मैंने देखा है कि संसार में लोगों को तरह-तरह की चिंताएँ परेशान करती हैं।

गरीबो को संपत्ति प्राप्त करने की....

भाड़े पे रहनेवाले को खुद के घर की....

पति-पत्नी को एक-दूसरे के विश्वासघात की....

वेपारीयों को परस्पर धोखेबाजी की....

List बहुत बड़ी हैं।

उसमें माँ-बाप को संतान की चिंता.... बहुत ज्यादा होती हैं। वे संतानों के भविष्य के लिए अतिचिंतित होते हैं। जैनशासन को पानेवाले, संबंधों की अनित्यता को अनेक बार सुननेवाले, अतिधार्मिक लोग भी संतानों के प्रश्न के वक्त अतिबेबस हो जाते है, रो पड़ते है, गुस्सा हो जाते है....

ऐसी ही छोटी-सी चिंता इस परिवार को थी और मैंने मेरे तरीके से समाधान किया। आज मांडली में ही प्रतिक्रमण कर,ऋषभ म.सा. और यश म.सा. के मीठे स्तवन-सज्झायो को सुन हम दिवस की पूर्णाहुति को वरे....

विहार दिन :

34

मृगशीर्ष वद

५

दिनांक :

30.12.2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

अवसर परीक्षा

विहार दिन :

34

मृगशीर्ष वद ५ दिनांक :

30/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

आज शिविर का भी अंतिम दिन था। भुवनभूषण म.सा. को स्वस्थता आ चुकी थी, और इसलिए ही अगले दिन का विहार हमने तय कर दिया था। उनके सग्गे बहन यहाँ से 1-1.5 कि.मी. ही दूर रहते थे। उनके दोनों लड़के शिविर में उपस्थित थे।

जो बाते करनी थी, वे सब दो दिनों के समय में पूर्ण हो चुकी थी।

न्याय म.सा. ने थोड़े पात्रे-टोक्सीयाँ देशी Colour से रंग दी थी।

पू.आ. भगवंत ने मुझे कहाँ कि, ''तुम रूक जाओ सूयगडांग-ठाणांग के जोग कर लो। बाद में चेन्नई पहुँचना।''परंतु मैंने सविनय मक्कमता के साथ स्पष्ट इन्कार किया।

विराट विहार मेरे सिर पर होने से ज्यादा रूकने की मेरी लेश भी तैयारी नहीं थी।

दुपहर को बच्चों का मातृ-पितृ वंदना का कार्यक्रम था। मैं तो गया नहीं था, परंतु मैंने सुना था कि वह कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा। मंच पर बच्चे माँ-बाप को पैर लगते, संगीत बजता, वक्ता सभी को माँ-बाप का उपकार समझाता.... बच्चों में कृतज्ञता के दृढ़ संस्कार पड़ते....

अगले दिन सुबह भुवनभूषण म.सा. के संसारी बहन के वहाँ पगलिए कर आगे बढ़ने का निर्णय किया था।

बालमुनि मेरे पास हितशिक्षा की याचना कर रहे थे। आज मैंने उसके लिए तैयारी कर ली। रात के प्रतिक्रमण के बाद मेरे पास उन्हें बिठाया। आधे घटे तक ऊँची-ऊँची आदर्शो की बातें की(!) मैं बच्चों को हितशिक्षा देने में संपूर्णतः बिन-अनुभवी साधु! वो भरवाडो के सामने संस्कृत के श्लोक फाड़नेवाले सिद्धसेन ब्राह्मण जैसा! मुझे मन में अहंकार भी था कि 'इन सभी को मैं सुधार दूँ।'

पू.आ. भगवंत की पाट के समीप ही हम बैठे थे। वे भी सुन रहे थे, इसलिए ही मेरे भाषण के बाद जब मैं उनके पास गया, तब उन्होंने मुझे हँसते-हँसते कहाँ कि,''गुणहंस म.सा.! तुम्हारी बातें इतनी मस्त है कि मेरे जैसे को भी सुननी अच्छी लगती है, परंतु ये बालमुनि स्वभाव से बंदरों जैसे होते हैं। कुत्ते की पूँछ जैसे कहलाते हैं। अब तो सब कुछ सुन लेंगे, तुम्हें खुश करने के लिए सिर भी हिलाएँगे, सुबह जैसे थे वैसे ही.... उस कुत्ते की पूँछ के जैसे! इन सभी को तो उनकी बालभाषा में ही समझाना पड़ता है, कहानीयाँ ही उनके लिए बड़ा उपाय है....''

सिद्धसेन ब्राह्मण को वृद्धवादिदेव सूरिजी ने जिस तरह धर्म का बोध कराया, उस तरह **पू.आ. भगवंत ने मुझे सच्ची राह**

विहार दिन :

34

मृगशीर्ष वद ५ दिनांक :

30/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

बताई।

1. हमको जो ज्यादा अच्छा लगे, उस पदार्थ का उपदेश देना, श्रोताओं की लायकात को नज़र अंदाज करना.... वह उपदेश देने की लायकात नहीं कहलाती।

2. **''मैं सुधार सकता हूँ, दूसरे नहीं,''** ऐसा अहंकार जिसे लेश मात्र भी हो, वह उपदेश देने के लायक नहीं हैं।

3. **'शास्त्र की सच्ची बातें तो करनी ही चाहिए....'** ऐसा मानकर द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को सोचे बिना ऊँची-ऊँची आदर्शों की बाते करते ही रहना, वह उपदेश देने की लायकात नहीं कहलाती।

मुझे लगा कि मुझे अब तक बहुत सिखना बाकी हैं। बड़े संयमीओं के लिए मेरा उपदेश उचित होगा, परंतु ये तो बालमुनि! मेरा अहंकार को उतारने मैं बड़ा Role अदा करनेवाले उन मुनिवरों को लाख लाख वंदन!

विहार दिन :

35

मृगशीर्ष वद

६

दिनांक :

31.12.2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम,
पुने से हडपसर,
12 कि.मी.

Secretary

विहार दिन :

35

मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :

31/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

पुने से हडपसर,

12 कि.मी.

आज 31 दिसम्बर था। साल का अंतिम दिन! और हमारा भी पुने को विदाय करने का दिन!

सुबह जल्दी से तैयार होकर हमने विहार चालु किया। खुद पू.आ. भगवंत मुझे छोड़ने उपाश्रय के दरवाजे से लेकर तीर्थ के 200-300 कदम दूर रहे दरवाजे तक आएँ। उन्होंने मेरे गले में लटकाई हुई झोली देखी, दांड़े में प्याला देखा....

''गुणहंस म.सा.! अब तो तुम प्रभावक हो गए हो, तीन-तीन शिष्य हैं। अब तुमको झोली निकाल देनी चाहिए। लाओ....'' और उन्होंने मेरे ऊपर रीतसर तराप मारी। झोली की गाँठ को छोड़ने की मेहनत करने लगे। हमारे बीच व्यवस्थित खिंचातानी हुई। मैं भी एकदम जीद में था। अंत में मैंने कहाँ कि, ''पाँच शिष्य हो जाए, बाद में झोली निकाल दूँगा।'' और उन्होंने आग्रह छोड़ दिया।

तीर्थ के झाँपे तक मुझे विदा करने आए हुए पू.आ. भगवंत के चरणों में गिरकर अंतिम आशिष लेकर हम आगे बढ़े। विद्याशिष्य तो अब भी आधे कि.मी. तक मुझे छोड़ने के लिए आएँ और उसके बाद वे मेरे आशिष(!) लेकर विदा हुए।

भुवनभूषण म.सा. के बनेवी साथ ही थे। उनके घर पर पगलिएँ करने ले जाने के लिए! उनका घर हमने सोचा था उससे ज्यादा अंदर निकला, और वैसे भी आज का हमारा विहार लंबा था। उसमें इस पगलिएँ के चक्कर में आधा-एक कि.मी. बढ़ा। तथा उसकी वजह से विहार भी देरी से हुआ, वह तो Extra! परंतु सगी बहन की भावना को संभालने के लिए हमने यह स्वीकार लिया।

घर पर पहुँचे, तो पता चला कि हम जिनके लिए पगलिएँ करने आए थे, वे उनके सगे बहन तो अंतराय में हो गए थे, इसलिए वे तो सगे भाई म.सा. के खुद के घर पे सबसे पहली बार के पगलिएँ का(और शायद सबसे अंतिम पगलिएँ का) जोरदार लाभ ले न सके।

बाकी के परिवार के समक्ष पिता-पुत्र मुनि के जीवन की अनुमोदना की, उसके बाद मेरे आग्रह से भुवनभूषण म.सा. ने उद्बोधन किया। पाठशाला की प्रेरणा की.... तब तक खिड़की में से आकाश में लाल रंग छाया हुआ दिखाई दिया.... और हमने जल्दी-जल्दी वहाँ से विदाय ली। न्याय म.सा. देरी से आएँ होने से वे नीचे ही खड़े रहे थे। वैसे भी Late पहुँचना वह ही न्याय म.सा. को पहचानने की निशानी बन चुकी थी।

फटाफट हमने विहार चालु किया। रास्ते में एक मंदीर आया-वहाँ दर्शन किए। अब भी पुना का ही बहुत सारा Area पसार करना बाकी था। हडपसर तक भी सतत Traffic वाला, Building वाला Area था। बड़े शहरों में चारों ओर 10-20

विहार दिन :

35

मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :

31/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

पुने से हडपसर,

12 कि.मी.

कि.मी. तक लगभग ऐसी ही परिस्थिति होती हैं।

हम तो आगे थे, परंतु पीछे आ रहे हेमगुण म.सा. का मिट्टी का मटका रास्ते में ही किसी वजह से फूट गया। दोरी-चुने की डिब्बी-सर्फ की डिब्बी.... इत्यादि पाँच-छह चीजें वे विहार में मटके में ही डाल देते थे। घड़े के फूटने से सभी चीजें Road पर! वह तो ठीक, परंतु अब उन चीजों को किस में उठाई जाएँ? क्योंकि वे सीया हुआ थेला रखते नहीं थे, पोथी रखते थे, नहीं तो थेले में ही सब कुछ रख देते।

उनके पीछे-पीछे ही भुवनभूषण म.सा. आ रहे थे। उन्होंने एक पल की राह देखे बिगर सभी चीजे खुद के तांबे के मटके में उठा ली। फूट गए मटके के टुकड़ों को Road पर से एक ओर सरका दिया और साधर्मिक भक्ति करने के आनंद के साथ वे दोनों आगे चलने लगे।

'सहाय करे वह साधु' यह व्याख्या सचमुच ही उपयोगी हैं। साधु यदि एक-दूसरे को मदद न करे, तो संयम का द्रव्य से और भाव से.... दोनों तरीके से पालन दुष्कर हैं।

'साधना करे वह साधु' उसमें भी मुझे तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि 'साधना मतलब क्या?' **साधु के लिए प्रधान साधना ही यह है कि संयमीओ के संयमादि में सहायक बनना।**

वैसे, वाक्य भले ही दो हो, परंतु रहस्यार्थ तो एक ही हैं।

विहार लंबा होने से और हमें प्रयाण करने में देरी होने से सूर्य ऊपर चढ़ गया था और इसलिए थकान लगने लगी थी। तथा सिर्फ इतनी ही जानकारी थी कि 'हडपसर में जैन मंदीर-उपाश्रय हैं। वहाँ आज का रहेठान हैं।' अब, मैं तो समझा था कि 'छोटा-सा गाँव होगा, इसलिए हडपसर में मंदीर-उपाश्रय के बारे में किसी को भी पूछेंगे तो जैनमंदीर मिल जाएँगा।' परंतु यहाँ तो हडपसर पुना का ही विभाग हो, वैसा स्थान था और वह भी विशाल! उसमें मैं जिस-जिसको पूछता गया, वे सभी ऐसा ही कहते कि, ''यहाँ तो कोई जैन मंदीर ही नहीं हैं।''

मेरे साथ कोई नहीं था। मुमुक्षु सभी गाड़ी में आनेवाले थे। साधु पीछे थे.... संपर्क न हो, तो इकट्ठा कैसे होना? मुझे तो किसी का Mobile Number भी याद नहीं था, सग्गे भाई का भी नहीं। मेरे पास किसी का भी लिखा हुआ एक नंबर भी नहीं है, ना ही उसका मैंने स्वाध्याय(!) किया हैं। आज भी किसी भी श्रावक का काम पड़े(ललितभाई, नगराजभाई जैसे....) तो मुझे नंबर ढूँढ़ना ही पड़ता हैं। मुमुक्षु आदि के पास हो, तो काम हो जाता हैं। नहीं तो वे भी पूछ-पूछ कर काम पूर्ण करते हैं। Telephone नंबर की Diary तो दूर की बात, एक नंबर की भी नोंध मेरे पास नहीं हैं। और मुझे उसका आनंद है, गर्व हैं। 100-150 नंबर रखने वाले के प्रति बिलकुल अरूचि नहीं हैं।

विहार दिन :

35

मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :

31/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

पुने से हडपसर,

12 कि.मी.

वहाँ करूणा-माध्यस्थ्य गुणका विकास करता हूँ।

परंतु आज तो मुमुक्षु भी साथ में न होने से उनके द्वारा भी पूछताछ कर सकुँ वैसी परिस्थिति नहीं थी।

उपरांततः मैं सच्चे रास्ते पे ही हूँ या कोई दूसरा रास्ता हैं? इसका भी मुझे अंदाजा नहीं था, क्योंकि बीच-बीच में बहुत से रास्ते आएँ थे। सीधा एक रास्ता नहीं था। कहीं भी कि.मी. को बतानेवाले पत्थर भी आएँ न थे। ऐसा ही समझ लो कि अब भी पुना शहर में ही विहार चालु था।

मन में थोड़ी-थोड़ी शंका के साथ आगे बढ़ता रहा। एक Hotel के पास एक नवयुवक को खुद की दुकान खोलकर सभी चीजों को सजाते हुए देखा। मेरा सद्भाग्य!!! उसको हिन्दी आती थी।

''यहाँ जैनमंदीर हैं?''

''यहाँ तो कहीं नहीं हैं।'' कुछ याद करने के प्रयत्न के बाद जवाब दिया।

''नजदीक के 2-3 कि.मी. में भी नहीं हैं।''

''नहीं रे....''

हडपसर में मंदीर-उपाश्रय-घर सब कुछ है, यह बात तो पक्की थी और हडपसर का Area तो आ गया था। और दुकानदार स्थानिक भाई स्पष्ट ना बोल रहा है, तो मैं क्या समझु?

अचानक मुझे याद आया। मैं जब गृहस्थावस्था में था, तब मुझे दो Phone नंबर याद थे। एक मेरे घर का 38377.... और दूसरा काका के घर का 3888646। यह दोनों नंबर Landline नंबर थे। तब तो, Mobile की शोध भी नहीं हुई थी। उसमें हमारे संसारी घर सुरत में तो अब मुस्लिम परिवार रहता है, इसलिए वहाँ Phone करने का तो कोई मतलब ही नहीं था, परंतु काका के घर Phone करके उनके पास से भव्य का Number लिया जाएँ तो, भव्य के पास से हडपसर की जानकारी प्राप्त हो जाएँ। वे तो अब तक हडपसर उपाश्रय-मंदीर पहुँच ही गए होंगे।

''भाई! ,एक Phone करोंगे?''

''जरूर....'' दुकान की वस्तुओं को जमाने के काम को छोड़कर नवयुवक मुझे मदद करने के लिए तत्पर हुआ। नंबर तो लगाया, परंतु सामने से कोई उठा नहीं रहा था। अब क्या?

वहाँ तो पीछे से न्याय म.सा. आ गए, इसलिए बहुत शांति का अनुभव हुआ। दो लोग हो, तो कहीं पर भी रूककर दिन पसार किया जा सकता है और वे तो सब तरह के कार्यो में सक्षम थे।

हमने भी दो चार लोगों से पूछ लिया। परंतु सभी का जवाब एक ही था ''मंदीर नहीं हैं।''

अंततः हम वहाँ पात्र-प्रतिलेखन करने बैठे, वहाँ तो बाकी

विहार दिन :
35
मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :
31/12/2015
स्थान :
शत्रुंजयधाम
पुने से हडपसर,
12 कि.मी.

के तीन साधु भगवंत भी आ गए। अब कोई विशेष चिंता नहीं थी।

''मेरे पास सुरत के मेरे Cousin भाई हेमंत के नंबर हैं। उसके द्वारा भव्य के नंबर मिल जाएँगे....''भुवनभूषण म.सा. ने बात की और हम वापस उस ही नवयुवक के पास मदद के लिए गए। पूरे उत्साह के साथ उसने Phone किया, नंबर लगा, भव्य का नंबर मिला, उसके साथ संपर्क करने का प्रयत्न किया, परंतु अफसोस! वहाँ वापस गाड़ी अटक गई।

''भाई! तुझे G.P.S. में ढूँढ़ना आता हैं?'' शीलगुण वि. ने पूछा। (Mobile में एक सुविधा है कि जिससे समूचे विश्व का कोई भी स्थान कहाँ हैं? वहाँ का रास्ता क्या? आदि सब उसमें से मिल जाता है.... पूरा नक्शा उसमें आ जाता हैं। परंतु उसका उपयोग करना आना चाहिए।)

''म.सा.! हमको तो इसका अब तक कोई काम नहीं पड़ा, इसलिए मुझे तो नहीं आता। तो भी प्रयत्न करता हूँ....'' उस युवक ने मेहनत की, परंतु....

आगे ही एक बड़ा अजैनमंदीर था। सेंकड़ों लोगों का आवागमन चालु था। एकबार तो विचार आ गया कि, 'यहाँ ही रूक जाते हैं।'

परंतु 'स्थंडील-मात्रु की व्यवस्था का क्या? गोचरी का क्या? वे उतरने देंगे या नहीं?' आदि प्रश्न खड़े होने से मैंने सोचना बंद कर दिया।

दुकान के थोड़े नजदीक में ही एक Hotel थी। उसका मालिक शुरूआत से ही हमारी यह हालत देख रहा था। वह दूर से देख रहा था, इसलिए उसे दूसरा कुछ विशेष पता नहीं चल रहा था, परंतु वह नजदीक आया....

''महाराज! नास्ता करोंगे? चाय पीओगे? पधारो, मेरी Hotel में....''

आर्यदेश की प्रजा में खुन के बूँद-बूँद में अतिथिसत्कार के, संतो की पूजनीयता के कितने गहरे संस्कार सिंचित होंगे उसकी कल्पना तो कीजिए। पूरे अनजान 5 लोगों को Free में रू. 200 के आसपास का चाय-नास्ता करवाने की तैयारी रास्ते का सामान्य Hotel वाला भी रखता है वह ही आर्यदेश की महानता!

यहाँ भिखारी है, भीख मांगने की इजाजत है, इसलिए ही लोगों में दान देने के **संस्कार पड़ते हैं।**

यहाँ भूखे लोग है, प्यासे लोग है.... इसलिए लोगों में अन्नक्षेत्र और पानी की परबें खोलने के **संस्कार पड़ते हैं।**

यहाँ संत है, इसलिए ही लोगों में अतिथि सत्कार के **संस्कार पड़ते हैं।**

विहार दिन :

35

मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :

31/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

पुने से हडपसर,

12 कि.मी.

हमनें उसे चाय-नास्ते की सप्रेम ना कहीं।

वो नवयुवक G.P.S. की मेहनत कर रहा था, वहाँ ही रास्ते पर कोई दूसरा भाई आया। हम पाँचो को उस नवयुवक के पास खड़े देखकर वह भी खड़ा रह गया। ''महाराज! क्या काम हैं?''

हमने हमारी कहानी दोहराई।

''लाओ.... मुझे देखना आता हैं। और यहाँ एक जैनमंदीर है, और वह मुझे पता हैं।'' कहके उस भाई ने उस नवयुवक को याद दिलाया कि, ''इस जगह पर मंदीर हैं।''

हकीकत में यहाँ जैनो के घर बहुत कम थे, साधुओं का आवागमन कम था, मंदीर आदि संबधी वैसे कोई कार्यक्रम यहाँ नहीं हुए थे, इसलिए शायद लोगो में वह मंदीर बिल्कुल अनजान था। फिर तो G.P.S. में भी देखने की जरूरत नहीं पड़ी और उस भाई के मार्गदर्शन के अनुसार हम उत्साहभेर आगे बढ़े। लगभग 1-2 कि.मी. चलने के बाद हम हमारे इष्ट स्थान पर पहुँचे।

''मत्थएण वंदामि'' बोलकर तीनों मुमुक्षुओं ने हमको अवकारा। फिल्हाल में सभी अनुकूलताओं से परिपूर्ण उनको कहाँ पता था कि, 'हम कैसी प्रतिकुलताएँ सहकर आएँ हैं।'

सगाई और शादी के बीच के समय मे मोज-मजा करने वाली लड़की को **शादी के बाद पता चलता है कि,** 'लग्नजीवन क्या है? वह जवाबदारी पूर्ण जिंदगी हैं।'

उसी तरह मुमुक्षु अवस्था से लेकर बड़ी दीक्षा के बीच तक के समय में मस्ती से जीवन जीनेवाले मुमुक्षु को **बड़ी दीक्षा के बाद अहसास होता है कि,** 'साधुजीवन क्या हैं? वह कितनी जवाबदारी से भरी हुई जिंदगी हैं।'

16-17 कि.मी. जैसे ऐसे विहार के बाद(हालाँकि 12 कि.मी. ही था) भी हम तो तुरंत ही पाठ लेने बैठ गए।

''मत्थएण वंदामी! म.सा.! गोचरी का लाभ दीजिए, Tiffin लेकर आया हूँ।'' एक युवक खुद की मम्मी के साथ आया था।

''Tiffin में लाया हुआ हम नहीं वहोरेते।''

''म.सा.! मैं तो रोज ही Tiffin लेकर आता हूँ। यह Tiffin मैंने आपके लिए नहीं लाया। रोज यहाँ दर्शन करके मैं Office जाता हूँ। मुझे दुपहर को Office में ही खाना पड़ता हैं। यह तो आपको देखा, इसलिए लाभ लेने की इच्छा हुई।'' निर्मल-निर्दोष मुखमुद्रा के साथ उस युवक ने निवेदन किया। उसकी मम्मी का भी आग्रह बहुत था।

मैं अनिमेष नजरों से उस युवक को थोड़ी देर तक देखता रहा, 'साधुता के प्रति का ऐसा अनुराग इन जीवों को जल्दी मोक्ष में पहुँचा देगा। प्रभु आपने यह कैसी व्यवस्था खड़ी की हैं? कितना मजबुत व्यवहारमार्ग दिखलाया हैं? **सिर्फ साधुवेष भी**

विहार दिन :
35
मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :
31/12/2015
स्थान :
शत्रुंजयधाम
पुने से हडपसर,
12 कि.मी.

हजारों-लाखों लोगों के शुभभावों की उत्पत्ति का कारण बन कर संसार को पार करने के लिए कितना सहायक बनता हैं? ऐसी नई पीढ़ी के पढ़-लिखे, भोगवादी युवको को योगीयों के सामने माथा टेकने का सहर्ष मन होता है, वह कितनी अलौकिक दुनिया है ना!'

मेरे कहने पर साधु ने युवक को यथायोग्य लाभ दिया।

पीछे के उपाश्रय (मुख्य) में स्थानकवासी साध्वीजीयाँ रूके हुए थे। वे वंदन करने आएँ, विरतिदूत की अनुमोदना की....

घर बहुत बिखरे-बिखरे थे, परंतु दोनों महात्मा व्यवस्थित गोचरी लेकर आएँ। शायद गोचरी थोड़ी कम हुई थी, इसलिए उपाश्रय के सामने के ही घर में जहाँ मुमुक्षुओं के एकासने आदि थे, वहाँ ही मैं वधघट लेने गया।

गोचरी पूर्ण कर मैं बाहर आया और भूकंप हुआ।

मुमुक्षु के ऊपर बारडोली से समाचार आए थे कि, 'संघ मेरा भगवान है' उस पुस्तक में आपने जो फलानी-फलानी चीजें लिखी है उससे बहुत बड़ी परेशानी खड़ी हो गई हैं। एक पू. गच्छाधिपतिश्री का बहुत बड़ा विरोध खड़ा हुआ है....

मुझे चिंता हुई। 42 साल की मेरी उम्र तक मुझे ऐसे छोटे-बड़े विरोध आते ही रहेगे, ऐसा हमारे ज्योतिषकार ने कहा होने से और ऐसे विरोध आ चुके होने से बहुत Practice हो गई थी। इसलिए मेरे ऊपर ऐसे विरोधों का असर बहुत कम होता था। तो भी पूरा वीतरागी तो बना नहीं था।

मुझे मेरा और मेरे पुस्तको का थोडा-बहुत तो राग था ही। इसलिए मेरे या मेरे पुस्तकों के विरोध की चिंता मुझे हो वह स्वभाविक थी ना? दूसरे के ऊपर या दूसरे की पुस्तकों के ऊपर मुझे राग नहीं है, इसलिए मुझे उनके विरोध की बिलकुल चिंता नहीं होती। **जहाँ द्वेष खड़ा होता है, वहाँ समझ ही लेना चाहिए कि, 'किसी वस्तु का राग है ही,' नहीं तो द्वेष खड़ा ही नहीं होता।**

''किसका विरोध है?'' उनका नाम जाना। उनका संपर्क नंबर लिया। उनको Phone करके व्यक्त किया कि, ''आपको इस लेख से दुःख पहुँचा हो, तो मैं तहेदिल से क्षमा मांगता हूँ....''

सामने से पू.आ. भगवंत के पास से आश्चर्यजनक जवाब आया। ''गुणहंस म.सा.! आप कौनसे लेख की बात कर रहे हो? मुझे तो लेश भी पता ही नहीं। आपकी वह पुस्तिका मेरे हाथ में आई ही नहीं है, तो दुःख होने का या विरोध का सवाल ही नहीं उठता?''

मुझे पता चल गया कि, 'किसी ने उस महापुरूष के नाम से खुद का विरोध फैलाने का प्रयास किया हैं।'

विहार दिन :

35

मृगशीर्ष वद ६ दिनांक :

31/12/2015

स्थान :

शत्रुंजयधाम

पुने से हडपसर,

12 कि.मी.

थोड़ी देर बाद पू.आ. भगवंत के पास से जवाब आया कि, ''तुमने जो लेख भिजवाया था वह हमने पढ़ लिया है। कुछ भी विरोध के योग्य नहीं हैं। तो भी हमारे में किसी को वह पसंद नहीं आया हो, तो नई पुस्तिका में उसे निकाल देना। शाता में रहेना....''

विशेष नुकसान किए बिना इस रीत से वह भूकंप शांत हो गया। बहुतबार ऐसा होता है कि, मुख्य व्यक्ति के नाम से नजदीक के लोग खुद की इच्छा के अनुसार काम कर लेते हैं। ऐसी परिस्थिति में, या तो मुख्य को पता ही नहीं होता....

या तो पता भी होता है, तो भी वे उपेक्षा ही करते है....छोटी-छोटी बातों के लिए खुद के नजदीकवाले से कौन बिगाडता हैं?

परंतु, उसमें दूसरों को बहुत सहन करना पड़ता हैं। अरे, असल में तो मुख्य की किमत कम हो जाती है, उनके प्रति का लोगों का बहुमान कम होता हैं।

इसलिए हमारे पू. गुरूदेवश्री ने खास फरमाया था कि, ''**Secretary** वह खट्टी-मीठी शक्करटेटी जैसी हैं। **समझदार लोगों को कभी भी निजी Secretary नहीं रखने चाहिए।**

उसके नाच से **नाचना** नहीं चाहिए।

उसके ऊपर अंधविश्वास **रखना** नहीं चाहिए।

उसकी आँखों से **देखना** नहीं चाहिए।

उसकी अक्कल से **सोचना** नहीं चाहिए।

उसके दाँत से **खाना** नहीं चाहिए।

उसके पैर से **चलना** नहीं चाहिए।

परंतु स्वावलंबी **बनना** चाहिए।

खुद की बुद्धि का सदुपयोग **करना** चाहिए।''

Secretary मुख्य व्यक्ति के नाम से पत्रव्यवहार करता हैं, **Secretary** मुख्य व्यक्ति के नाम से नए नए निर्णय घोषित करता हैं।

Secretary मुख्य व्यक्ति के नाम से किसी को चढ़ाता है, किसी को उतारता हैं।

इन सभी चीजों का अंदाजा होने से अब तक तो मैंने मेरे एक भी शिष्य की पराधीनता का स्वीकार किया नहीं हैं। स्वतंत्रप्रज्ञा से निर्णय लेता हूँ। सलाह-मश्वरा जरूर करना चाहिए, पूछना जरूर चाहिए....!

इसतरह के विचार में दिन की समाप्ति हुई और हम हमारे नित्यक्रम के शरण हो गए।

विहार दिन :

36

मृगशीर्ष सुद

७

दिनांक :

01.01.2016

स्थान :

हड़पसर से

उरूलीकांचन

21 कि.मी.

Doctor

विहार दिन :

36

मृगशीर्ष वद ७ दिनांक :
01/01/2016

स्थान :
हड़पसर
से उरूलीकांचन
21 कि.मी.

आज तारीख थी 01/01/2017 वर्ष का पहला दिन! नई उर्मीयों का, नए उत्साह का सूचक दिन! हमने भी उसी उत्साह+उर्मीयों के साथ विहार शुरू किया। आज का हमारा विश्राम था Naturopathy के सबसे बडे center उरूलीकांचन में! आज हम वहाँ पहुँचे, नया-बड़ा उपाश्रय, मंदीर भी भव्य! चालीस आसपास घर! परंतु व्याख्यान की मेरी इच्छा कहीं पर भी संपूर्ण न हुई।

धीमंतभाई के राजकोट से समाचार आए थे कि "हम पू.आ. रत्नसुंदरसूरिजी म.सा. के 300 वें पुस्तक के विमोचन के 10 दिवसीय महोत्सव में 1 दिन आनेवाले हैं। वहाँ से आपको वंदन करने आएँगें।" और आज ही वे वंदन करने आनेवाले थे।

धीमंतभाई राजकोट के उत्तमकोटी के श्रावक! चश्में का बड़ा व्यापार था। उसे बहुत कम कर, संतोषपूर्ण जीवन बिता रहे हैं। पैसे-टके से सुखी आदमी! राजकोट में कोई भी महात्मा पधारते है, तो उनको मंदीरों के दर्शन करने ले जाते हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान तक विहार में साथ जाते हैं। दुपहर को गोचरी के घर दिखाने के लिए भी जाते है.... उनके आंतरिक गुणों के वर्णन के लिए मुझे 3-4 Fullscape लिखने पड़े, ऐसे वे श्रावक!

उनके श्राविका भी धर्म में बहुत अच्छी तरह से जुड़े हुए! जीवविचारादि का अभ्यास करनेवाले!

पाठ पूर्ण करने के बाद दो महात्मा नजदीक में ही रहे हुए Naturopathy Centerमें गोचरी वहोरने गए। वहाँ सभी को शुद्ध-सात्विक-सादा भोजन दिया जाता है, ऐसा हमें पता था।

"ओ महाराज! खड़े रहो। अंदर कहाँ जा रहे हो?" चोकीदार ने दोनों महात्मा को अंदर जाते हुए अटकाया।

"हमें तो संस्था की भोजनशाला में से भिक्षा लेनी हैं।"

"भोजनशाला तो बंध हो गई। सभी का भोजन पूरा हो गया।"

"अभी तो 10 ही बजे हैं।"

"हा! यहाँ तो दस बजे ही सबकुछ पूरा हो जाता है, चलो।" चोकीदार अभी तो जाने कि Naturopathy का मालिक हो, उस तरह व्यवहार कर रहा था।

दोनो महात्मा मेन गेट से वापस मुड़ रहे थे, वहाँ ही प्रौढ़ उमर के एक सज्जन चलते-चलते वहाँ से पसार हुए। "महाराजजी! कुछ काम हैं?"

"वैसे तो भिक्षा लेनी थी, परंतु चोकीदार तो कह

विहार दिन :
36
मृगशीर्ष वद ७ दिनांक :
01/01/2016
स्थान :
हड़पसर
से उरूलीकांचन
21 कि.मी.

रहा है कि सब कुछ पूरा हो गया।''

''अरे! वह झुठ बोल रहा हैं। 10 बजे तो चालु ही होता हैं। चलो, मैं तुम्हारे साथ आता हूँ।'' दृढ़ता के साथ भाई ने बोला और दोंनो महात्माओं के साथ सेन्टर में प्रवेश किया। उस भाई को देखकर चोकीदार ने एक लफ्ज भी नहीं उच्चारा। वे भाई सेन्टर में Naturopathy लेने आएँ होंगे? या वहाँ के Trustee होंगे? या क्या? वह पता नहीं हैं। परंतु बिन्दास होकर वे दोनों साधु भगवंतो को अंदर ले गए। भात-तुरई की सब्जी-रोटी-दुध की मीठाई.... गरमागरम रसोई वहोरकर वापस फिरे। इन सभी में मिरची नहीं, परंतु शुद्ध घी आदि के वजह से अनुकुल लगे वैसी गोचरी थी। मैं जल्दी वापरने बैठ गया।

''अरे, इतने सारे पौंअे कहाँ से मिले?'' चौथे या पाँचवे नंबर के पात्रे में पौंअे भरे हुए देखकर मैंने पूछा।

''उपर पानी वहोरने गया था। वहाँ एक ओर तपेली में पौंअे रखे हुए थे। उस आदमी ने तो विनंति भी नहीं की। मैंने सामने से पूँछा कि, ''ये पौंअे किसके लिए बनाए थे?'' तो उन्होंने कहाँ कि , ''कल ऐसे समाचार आए थे कि म.सा. के मुमुक्षु-मेहमान है, और उनके लिए नास्ता बनाना हैं। इसलिए पौंअे बनाए थे। हम तो ऐसे समझे थे कि बहुत सारे होंगे, परंतु मात्र तीन ही मुमुक्षु थे। उसमें भी उन्होंने पौंअे बहुत ही कम खाएँ। इसलिए ये बढ़ गए हैं। अब तो ये ठंडे हो गए हैं। कौन खायेगा? गाय को दे देंगे....''

उसके जवाब से और दूसरी सभी छानबीन से ऐसा लगा कि उसके मन में अपने लिए बनाने का लेश भी विचार नहीं था। नहीं तो वह हम आएँ तब भी विनंति करता और अभी भी विनंति करता। इसलिए वह निर्दोष लगने से मैंने शीलगुण वि. को बात की और वे ले आएँ।'' भुवनभूषण म.सा. ने गोचरी की आलोचना की। 'गोचरी की आलोअना' उसका परमार्थ तो यह ही हैं। सिर्फ विधि कर लेनी वह नहीं। किस तरह से गोचरी लाई गई? उसमें दोष लगा है या नहीं? आदि सभी चीजों को बराबर चिंतन-मनन करना वह ही गोचरी को आलोवने की सच्ची-सम्पूर्ण विधि हैं।

बाकी की गोचरी लेने के लिए महात्मा घरों में गए.... तब तक राजकोट वाले आ गए थे। उन्होंने खुद के पास रहे हुए राजकोट के पेंड़ो की अतिभारपूर्ण विनंति की। सब छान-बीन करने के बाद पता लगा कि वे क्रीत, अभ्याहृत, स्थापना आदि कोई दोषवाले नहीं है.... इसलिए

विहार दिन :
36
मृगशीर्ष वद ७ दिनांक :
01/01/2016

स्थान :
हड़पसर
से उरूलीकांचन
21 कि.मी.

1-2 टूकड़े वहोरे। उन सभी ने उपर भोजनशाला में ही भोजन किया।

गोचरी के बाद उनके साथ धर्मगोष्ठी हुई। क्या बातचीत हुई वह तो याद नहीं है, परंतु धार्मिकपरिवार के साथ धर्म के सिवाय दूसरी तो क्या बात होती हैं?

शाम को वे निकल गए। सूर्य के अंतिम उजाले तक स्वाध्याय चलता ही रहा और बाद में प्रतिक्रमणादि करके हम स्वप्नमयी दुनिया के वश हो गए। यहाँ मंदीर, उसका लंबा चौगान, उपाश्रय आदि अनुकूल थे। दो-चार साध्वीजीयों को चातुर्मास करना हो तो आसानी से हो सकता हैं।

मुझे Naturopathy Center देखने के लिए निवेदित किया गया था, परंतु मुझे वैसा कुतूहल नहीं हुआ, इसलिए मैंने वहाँ जाने की बात मुलतवी रखीं थी।

Vihar Day :

37

मृगशीर्ष वद

८

DATE :

2.1.2016

Place :

उरूलीकांचन से

यवत

16.5 कि.मी.

शिष्य सार

विहार दिन :

37

मृगशीर्ष वद -८ दिनांक :

02/1/2016

स्थान :

उरूलीकांचन से

यवत

16.5 कि.मी.

सुबह विहार में Road पर ही किराने की दुकान पर खड़ी हुई एक लड़की ने 'मत्थएण वंदामि' किए और मैं+शीलगुण म.सा. दोनों आश्चर्य में पड़े। हाई-वे पर छोटे से गाँव के पास ऐसे शब्दों का उच्चार कहाँ से? यहाँ जैन कहाँ से?

हमने नजदीक जाकर लड़की को पूछा, ''जैन हो?''

''हा! यहाँ हम एक ही जैन हैं। बराबर सामने जो बंगला दिखता है, वह Doctor का बंगला हैं। वह भी जैन हैं। बहुतबार साधु-साध्वीजीयाँ वहाँ उतरते भी हैं। आपको भी उतरना हो तो व्यवस्था हो जाएगी।'' चौदह-साल की बाली उम्र की उस लड़की ने प्रौढ़भाषा में प्रस्ताव रखा।

''गोचरी-पानी?''

''सब व्यवस्था हो जाएगी। हम है ना?'' उसके शब्दों में भक्तिभाव का धोध बह रहा था, लाभ लेने की भावना उछल रही थी। परंतु हम तो ऐसी गोचरी ले सकते नहीं थे, और आगे यवत में उपाश्रय-मंदीर-घर सब कुछ थे, इसलिए हम उसे समझाकर मार्ग पे गतिमान हुए। लंबा विहार होने से थकान पूर्वक हम यवत पहुँचे।

यवत का मंदीर नया! सामने उपाश्रय में नीचे के Hall में अँधेरा! उपर के Hall में उजाला-परंतु कहीं पें भी Room नहीं। मात्रु जाना हो तो भी तकलीफ! पड़दे जैसा कुछ करके मात्रु करना पड़ता।

''यहाँ आज सुबह ही पानी आएँगा, पूजा करनी हो तो अभी ही कर लो।'' पूजारी ने मुमुक्षुओ को सूचना की। इसलिए आज मैं जब दर्शन करने गया, तब वे पूजा कर रहे थे और Mobile में भक्तिगीत बज रहे थे। द्रव्यभक्ति के अवसर पर मंदीर में Mobile के द्वारा भावभक्ति का मिश्रण मुझे तो कतिपय उचित नहीं लगा, परंतु मेरे सामने यह पहली घटना थी और मैं इस विषय में निश्चित नहीं था इसलिए मैंने सर्वगुणसंपन्न मौन का शरण स्वीकारा।

''म.सा.! लाभ दीजिए। हमारा बड़ा परिवार है, 50 लोगों का!'' दिगंबर संप्रदाय के एक बहन ने बहुत ही भावपूर्वक विनंति की। यहाँ श्वेताम्बर-दिगंबर सभी के घर थे। घरों की संख्या वैसे भले कम थी, परंतु एक-एक घर में 8-10-20 सभ्य, इसलिए गुजरात की अपेक्षा से तो बहुत बड़ी संख्या थी।

न्याय म.सा. की आयंबिल की दाल के लिए प्रयास किया, परन्तु प्रायः लाभ हुआ नहीं था।

दुपहर को शीलगुण म.सा. ने प्रसन्नमुख से उपाश्रय में 'निसीहि' बोलकर गोचरी के साथ प्रवेश किया था, क्योंकि गोचरी में अलग-अलग तरह की मीठाईयाँ लाई थी। हमारा यह पूरा विहार मीठाईओ के भोजनवाला ही रहा था। गाँव हो या

विहार दिन :
37
मृगशीर्ष वद -८ दिनांक :
02/1/2016

स्थान :
उरूलीकांचन से
यवत
16.5 कि.मी.

शहर.... सब जगह हमें तो लीलालहेर ही थी। आज महाराष्ट्र की Special Item वरण(जाड़ी तुअेर दाल)+भात भी आई थी।

न्याय म.सा. जो गोचरी लाएँ(किराने की दुकान में से) उसमें चिक्की का और पीस्ता का गंज था.... हम वापर-वापर के थक गए, परंतु हमारे पास दूसरा कोई चारा नहीं था।

''इतना सारा उठाकर ला सकते है क्या?'' मैंने उनको डाँटा।

''जैन की किराने की दुकान थी। पहले तो उसे कोई भाव नहीं थे, परंतु अचानक ही जाने भाव उछल गए और वह चिक्कीयों के और Dry Fruit के डब्बे खाली करने लगा। मैंने बहुत अटकाया, परंतु वह माना नहीं।'' उनके बिना दम के बचाव में मुझे संतोष नहीं हुआ। वे चाहते, तो नहीं वहोरने में वे सक्षम है, परंतु भक्तिभाव से लुभा जाते है, इस हमेशा के अनुभव के बाद मैंने उपेक्षा की।

''गुरूजी! बारामती से श्रावक वंदन करने के लिए आए हैं। बड़ी उम्रवाले होने से उपर चढ़ नहीं सकते। इसलिए, आपको नीचे पधारने की विनंति कर रहे हैं।'' मुमुक्षु ने कहाँ और मैं नीचे गया।

एक-दो वयोवृद्ध और एक-दो प्रौढ़ श्रावक.... आए थे।

''साहेबजी! यह रामजीभाई हैं।'' एक श्रावक ने कुर्सी पर बैठे हुए बड़ी उमरवाले श्रावक की पहचान करवाई। ''उम्र तो 70 के आसपास की हुई है, परंतु साधु-साध्वीजीओं की भक्ति के लिए खूब दौड़ते हैं। **बारामती के आसपास के 50 कि.मी. तक कहीं भी साधु-साध्वीजी के लिए गोचरी-पानी-उपाश्रय आदि की व्यवस्था करने के लिए हमेशा तैयार!** 70-70 ठाणे आएँ थे, तब भी तीनों Time की गोचरी उन्होंने सुलभ की थी। मूल कच्छ के हैं। हम सब उनके पीछे तैयार हो चुके है, तो भी वें खुद का यह कार्य छोड़ते नहीं।''

गंभीरता, खुमारी से दीपते उन वयोवृद्ध को मैं आनंदसभर नजरों से निरखता रहा।

''देवगुरू की कृपा है साहेबजी!'' रामजीभाई बोले। ''आपके गुरूदेव के साथ तो हमारा अच्छा-खासा परिचय था। उनके व्याख्यानों का पान बहुत किया हैं। परंतु अब थक गया हूँ, दूर दूर मैं जाता नहीं। बस, यहाँ नजदीक-नजदीक में हो तो लाभ लेता हूँ। उसमें कमी आने नहीं देता।

परन्तु म.सा.! आपके साथ कोई भी आदमी नहीं है, आप Tiffin की गोचरी लेते नहीं हो.... यह सब तो बहुत कठिन हैं। कैसे चलता है यह सब?''

''चल रहा है, दौड़ रहा है, उड़ रहा है.... कोई भी तकलीफ अब तक तो आई नहीं हैं?'' मैंने प्रत्युत्तर दिया।

विहार दिन :
37
मृगशीर्ष वद -८ दिनांक :
02/1/2016
स्थान :
उरूलीकांचन से
यवत
16.5 कि.मी.

''अब तक तो जैनों के घर थे, इसलिए ठीक है, परंतु अब तो आपको परेशनी होगी ही। थोड़े Flexible बनोगे, तो ज्यादा अच्छा! आगे के विहार सरल नहीं हैं।''

''देखेंगे, ऐसा कुछ भी होगा, तो आप सभी तो हो ही ना?''

''म.सा.! Newspaper लाया हैं। पढ़ना हो तो?'' कहके उन्होंने थेले में से अंतिम 6-7 दिन के Paper निकाले। उनकी दृष्टि से यह भी भक्ति का एक हिस्सा था।

''नहीं! Paper तो पढ़ता नहीं। जरूर नहीं हैं। कोई विशेष समाचार हो, तो आप जैसों के पास से मिल ही जाते है ना!'' मैंने महापाप स्वरूप Paper के लिए नम्रभाव से, तो भी स्पष्टता से विरोध की घंटी बजाई।

उसके बाद बारामती में स्थिरता-प्रवेश की तारीखें तय कर उन्होंने विदाय ली।

सूर्यास्त के बाद एक साधु ने मुमुक्षु को सूचना की कि, ''किसी श्रावक के घर में से रजाई-चादर ले आओ।'' मैंने ये देखा, उसके पहले भी यह देखा था, परंतु आज इस बात को मैंने बराबर ध्यान में ली।

अलबत बाकी के कोई भी साधु Blanket आदि कुछ भी वापरते ही नहीं थे। ठंडी की वजह से मैं वापरता था, और शिष्य ने मेरे लिए ही Blanket मंगवाया था, परंतु उसमें होनेवाली अजयना मुझे अनुचित लगी। तब तो मैंने मौन सेवा। मेरा अनुभव ऐसा कहता है कि **हो सके तब तक Spot पे उपदेश नहीं देना चाहिए।** मतलब यही कि जब कोई घटना घटित होती है, तब धडाका नहीं करना चाहिए। उससे सामनेवाले को गहरी चोट लगती हैं। परंतु उस चीज को ध्यान में लेकर जब शांति से बैठे हो, तब शांति से गुस्से हुए बिना समझाना चाहिए।

प्रतिक्रमण के बाद मैंने सूचना की, ''मुझे Blanket वापरना पड़ता है, वह मेरा दोष हैं। परंतु उसमें हो सके उतनी जयना पालनी चाहिए।

1. गृहस्थ के घर से मुमुक्षु के पास Blanket नहीं मंगवाना चाहिए। तुमें स्वतः ही लेने जाना चाहिए और सुबह वापस देने जाना चाहिए। हम यदि जल्दी विहार करनेवाले हो, तो बराबर Fold करके उपाश्रय में सही रीत से योग्य जगह पे रखना चाहिए। और गृहस्थ को कह देना चाहिए कि वह खुद का Blanket ले जाएँ....।

2. Blanket बहुत Late, शाम को नहीं लाना चाहिए। नहीं तो उसका प्रतिलेखन अंधेरे में करना पड़ता हैं। उपरांततः पडिलेहण के बाद का काजा भी रह जाता हैं। इसलिए दुपहर को पडिलेहण के पहले ही Blanket ले लेना चाहिए, जिससे उजाले में ही पडिलेहण हो जाए....

शिष्यों ने सभी बातों का स्वीकार किया, और उसके बाद

विहार दिन :
37
मृगशीर्ष वद -८ दिनांक :
02/1/2016

स्थान :
उरूलीकांचन से
यवत
16.5 कि.मी.

रोज उसी तरह अमलीकरण किया गया।

पू. गुरूदेवश्री के संयम संबंधी आदर्शों को 100% पालने की मेरी शक्ति ही नहीं है, परंतु शक्य उतने छोटे-छोटे प्रयास कर रहा हूँ। कल सुबह 'चोफुले' जाने के निर्णय के साथ हमने संथारा तो कर लिया, परंतु हमको तब पता नहीं था कि कल का दिन नियति ने हमारे लिए कुछ अलग तरीके से ही निश्चित किया था। हमने जो सोचा था, वह प्रायः कुछ भी होने वाला नहीं था। और हमनें जिसकी कल्पना भी नहीं की थी, वैसी बहुत सारी चीजें होने वाली थी।

मुश्केलीयाँ आनेवाली थी, कषाय जगनेवाले थे, आसक्ति का पोषण भी निश्चित था, साधर्मिक भक्तिभाव उछलने वाला था, साहसिकता वृद्धि को वरनेवाली थी, अनिश्चितता में चिंता होने के बावजूद भी ऐसी जिंदगी जीने का अपूर्व आनंद अनुभव करने को मिलनेवाला था.... परंतु इन सभी से अनजान हम तब तो मीठी(!) निंद में सो गए। **दुनिया जिसको मीठी कहते है, वह निद्रा तो प्रमाद होने से लोकोत्तर शासन ने उसे कडवी कहीं हैं।**

Vihar Day :

38

मृगशीर्ष वद - १

DATE :

15.12.2016

Place :

यवत से
Aakash Hotel Via
चोफुले 17 K.m.

अनिश्चितताओं का शिखर

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - १ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

दर्शन करके हम निकले। रास्ते एकदम चौड़े होने से और बीच में Divider होने से हम डर-चिंता के बिना झड़पी विहार कर रहे थे। आज हमको 'चोफुले' चोकड़ी पें किसी Auto Mobile की दुकान में रूकना था।

निर्दोष गोचरी के लिए हमको यह निरीक्षण करना था कि उसके आसपास 1-2 कि.मी. में कोई अजैनों के घर हैं? धाबे हैं?(धाबा मतलब हाई-वे पे ट्रकवालों को भोजन करने के लिए एक प्रकार की Hotel।) उसमें शाकाहारी Hotel में शाक - रोटी-चावलादि बनते हैं। हमें तो रोटा-गुड़-छाश जैसा मिल जाएँ तो भी चले वैसा था।

'चोफुले' 1-1.5 कि.मी. बाकी था, इसलिए हम आजुबाजु में अजैन घरों की तलाश करने लगे। परंतु वैसे कोई घर मिले नहीं। धाबे बंध जैसे दिख रहे थे । और जिस Auto Mobile की दुकान में पहुँचना था, वह दुकान तो आगे पहुँचने पर भी नज़र नहीं आ रही थी।

हमने दो-पाँच जगहों पर पूछा, परंतु किसी के भी पास से प्रत्युत्तर नहीं मिला। हमने हाई-वे पे रहे हुए 1-2 घरों में पूछा कि, '' हमें रहने दोगे?'' परंतु पूरे अनजान और दाढ़ीवाले हमको किसी ने 'हाँ' नहीं कही। (उस दुकान का नाम हमको यवत से बताया गया था, परंतु अब मुझे याद नहीं आ रहा।) और 'हा' बोलते तो भी गोचरी का क्या? वह तो प्रश्न उपस्थित ही था।

अंत में मुमुक्षु ने Phone करके यवत के श्रावक की दुकान के बारे में बराबर पूछा। और मार्गदर्शन के अनुसार हम आगे-पीछे ठोकर खाते-खाते दुकान पर पहुँचे, परंतु दुकान तो थी बंध!

बहार दुकान का बड़ा Gate था, वह खुल्ला था। फिर Gate और दुकान के बीच बड़े आँगन जैसी खाली-खुली जगह थी। उसके बाद थोड़ी ऊँचाई पे वह बड़ी दुकान थी। उसका Shutter बंध था । कोई भी आदमी- चोकीदार नजर नहीं आ रहा था।

विशाल Road के सामने की ओर नए मकान बने हुए थे। न्याय म.सा. वहाँ पूछने गए, परंतु परिणाम एक **ही-नकार!** यवत के श्रावक को पूछवाया, तो जवाब मिला कि, ''जिसकी दुकान है, वह तो तकरीबन 1-1.5 घटे के बाद आएगा।'' मतलब यह कि हमें और 1-1.5 घटे दुकान के छपरे के नीचे बैठना था।

यह दुकान कोई बाप-दादा के जमाने की दुकान मत समझना। आधुनिक Showroom कैसे होते हैं? उसके जैसी जबरदस्त भी नहीं, किन्तु उससे थोड़ी Down Grade!

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

हमने पोरिसी पढ़ाई। साधुभगवंत पात्राप्रतिलेखन करने बैठे और में अभ्यास में जुड़ गया। किसी भी जगह पे पुस्तक-Note-Ballpen लेकर जुड़ जाना वह मेरा स्वभाव-सा बन गया था।

वहाँ तो एक Car ने आँगन में प्रवेश किया। एक श्रावक+एक श्राविका+उनकी लड़की.... तीन लोग नीचे उतरे।

''मत्थएण वंदामि!'' वंदनादि करने के पश्चात श्रावक ने बात शुरू की। ''चोकड़ी से 2 कि.मी. दूर अंदर गाँव हैं। हम वहाँ ही रहते हैं। साधु-साध्वीजीयाँ वहाँ ही उतरते हैं। परंतु आपने अंदर पधारने का मना किया, इसलिए यवतवालों ने सूचना की थी कि, ''म.सा. के साथ 3 मुमुक्षु हैं। उनकी नवकारसी ले जानी हैं। म.सा. को तो एकासने है और वे कड़क है, इसलिए उनके लिए गोचरी ले जानी नहीं हैं।''

इसलिए म.सा. चाय-पानी लाया है, हम भी साथ में ही नाश्ता कर लेंगे.... वे उबाला हुआ पानी ही पीते होंगे ना? इसलिए वह भी हम साथ लाएँ हैं। म.सा.! आपको खप है? तो पधारो.... लाभ दो।''

सुखी-सम्पन्न श्रावक ने विनय-विवेक के साथ विनंति की, परंतु हमको शंका होती ही है कि 'मुमुक्षुओं के लिए लाई गई रसोई में हमारी भी गिनती की तो नहीं होगी ना?' इसलिए हम वह वहोरते नहीं हैं। अरे, मुमुक्षुओं ने विहार में जो खुद के खाने के लिए नाश्ता-मीठाई-Dry Fruits रखे थे, उसमें से भी एक भी बार हमने वहोरा नहीं था। वे भी समझ ही गए थे कि 'साधुभगवंत नहीं वहोरेंगे।'

मैंने उनको मना किया, ''हमको खप नहीं हैं। तुम मुमुक्षुओं को नाश्ता करवा दो....''

आज साधुभगवंत Fresh थे। सिर्फ 9 कि.मी. का ही विहार हुआ था। ठंडी का माहोल होने से थकान का अनुभव नहीं हो रहा था। सवा आठ के आसपास का समय हुआ था।

यहाँ, अब तक तो रहने का इंतजाम हुआ नहीं था। समझो कि 1 घंटे के बाद इंतजाम हो भी जाएँ, परंतु गोचरी का क्या? आसपास में कहीं पें भी गोचरी की प्राप्ति हो जाएँ वैसे चिह्न दिख नहीं रहे थे।

''भाई! आगे बारामती के रास्ते पें कोई गाँव आता है?'' मैंने श्रावक को पूछा।

''सूपे गाँव आता हैं। यहाँ से 12 कि.मी. होता हैं। वहाँ मंदीर-उपाश्रय हैं। 2-4 घर भी हैं।'' श्रावक ने कहाँ। परंतु उसे शायद पता नहीं था कि 9 कि.मी. चलने के बाद, सवा आठ बजे के बाद 12 कि.मी. चलना मतलब क्या?

''उसके पहले 4-5 कि.मी. पर कुछ आता हैं?'' मैंने पूछा।

''हा! एक आश्रम आता हैं। अजैनों का मंदीर हैं।''

''वहाँ गोचरी मिल सकती हैं?'' मैंने वापस पूछा।

विहार दिन :
38
मृगशीर्ष वद - १ दिनांक :
3/1/2016

स्थान :
यवत से
आकाश होटल विया
चोफुले 17 कि.मी.

''मिल जाएगी। भक्तों का आवागमन चालु ही रहता हैं। भोजनशाला चालु ही हैं। मैं अभी ही पूछ लेता हूँ। मेरा वहाँ Contact हैं।'' कहके भाई ने संपर्क किया।

सब बात करने के बाद कहाँ, ''म.सा.! कोई तकलीफ नहीं आएगी। अभी वहाँ किसी त्यौहार के हिसाब से बहुत सारे लोग आते हैं। 100 के आजुबाजु तो पक्के ही, इसलिए आपको चिंता करने जैसा कुछ नहीं हैं।''

''बोलो, जाना है आगे? 5 कि.मी. चलना पड़ेगा।'' मैंने सभी की सम्मति माँगी। ऐसी बातों में मैं सभी की इजाजत-सम्मति लिए बिना आगे नहीं बढ़ता। मुझे मुख्य चिंता भुवनभूषण म.सा. की थी। पैर के दर्द की वजह से उन्हें विहार में तकलीफ पड़ती थी।

परंतु आज तो उन सभी ने मेरा उत्साह बढ़ाया, ''चलो, चलो, पहुँच जाते है आगे! हम तैयार हैं।''

और कामलीकाल पूर्ण हो जाने की वजह से कामली को गड़ी कर हम वापस हमारे 11 No. के वाहन पर आरूढ़ हो गए। मुमुक्षुओं को वो भाई ही Car में आगे छोड़ने आनेवाले था।

चोकड़ी से हम अब हाई-वे को छोड़कर अंदरूनी बारामती जाने के Shortcut रास्ते पें आगे बढ़े। जैसे ही बाएँ ओर मुड़े कि 2-4 मीठाईओं की दुकाने देखी। मैंने साथ में चलते शीलगुण म.सा. को कहाँ, ''यहाँ से मीठाईं वहोर लो....'' परंतु वे मेरी बात को मजाक समझकर आगे बढ़े।

हाई-वे नहीं होने से Traffic कम था, परंतु रास्ता छोटा होने से Traffic काफी ज्यादा लग रहा था। अकस्मातका डर सिर पर मंडरा रहा हो वैसा.....

सूर्य अब सिर पर चढ़ रहा था, इसलिए श्रम बढ़ता जा रहा था। पाँच के बदले 5.5-6 कि.मी. पहुँचे, तब देखा कि बाई ओर एक रास्ता जा रहा था, और वहाँ ही Car Park करके मुमुक्षु और भाई खड़े थे। उस रास्ते से ही दो सौ कदम की दूरी पर एक बड़ा मकान दिख रहा था। मैंने समझा कि वही आश्रम होगा।

मुख्य Road को छोडके 200 कदम भी अंदर जाना पड़े, तो भी मुझे कम पसंद आता। जितना ज्यादा Road Touch हो, उतना कम चलना पडता है ना! परंतु वैसा तो हर जगह कैसे संभव हो सकता हैं? इसलिए ऐसा सबकुछ स्वीकार कर ही चलना पड़ता हैं।

''पधारो साहेबजी! आश्रम इस ओर हैं। इस Road पर ही आगे जाना हैं।'' श्रावक ने मुझे बताया।

मैं मुख्य Road को छोड़कर बाएँ ओर के Road की ओर मुड़ा। मन में एक तरह का शांति का अनुभव हुआ कि आखीर पहुँच तो गए।

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

''बस! यहाँ से आश्रम ढाई कि.मी. ही दूर है....'' श्रावकभाई बोले और जाने की मेरे सिर पर बिजली गिरी।

''क्या?.... ढाई कि.मी.?.... तो ये सामने दिख रहा है वह क्या है....?''

''वह तो दूसरे किसी का घर हैं। आश्रम तो अंदर हैं?'' उसने मेरा संशय दूर किया।

मुझे गुस्सा आया। उस भाई को धमकाने का मन हुआ। मेहनत करके गुस्से को वश में कर मैंने पूछा, ''परंतु तुमने तो कहाँ था ना कि 5-6 कि.मी. है....''

''हा जी! आश्रम की ओर मुडने का रास्ता 5-6 कि.मी. है.... उसके बाद आश्रम तो 2.5 कि.मी. दूर ही है....''

'मैं क्या बोलू? कैसी डाँट दूँ?' वह ही मुझे समझ में न आया।

''बाद में उस ही रास्ते से आगे बारामती जा सकते है?''

''नहीं! वापस 2.5 कि.मी. बाहर आना पड़ेगा और फिर इस तरह Main Road से बारामती जाना पड़ेगा।'' उन्होंने जवाब लौटाया।

मुझे तो तम्मर आने लगी। दस के आसपास तो बज गए थे। अब आश्रम में जाना मतलब 2.5-2.5 कि.मी. की बढ़ौतरी करना। यदि मुख्य रास्ते पर ही आगे बढ़ा जाए तो? तो आगे सुपे गाँव तो आएँगा ही, परंतु वह तो अब भी 5-6 कि.मी. की दूरी पर हैं। अब इतना चलने की हिम्मत ही कहाँ हैं? साडे ग्यारह के पहले पहुँचना कठिन हो जाएगा, और दूसरे साधुओ की हालत भी क्या होगी?

उस भाई पें गुस्सा तो अपरंपार आ रहा था, परंतु मन को समझाया कि, 'उन्होंने हमको परेशान करने के लिए कुछ भी किया नहीं हैं। वे तो खुद की बुद्धि के अनुसार अच्छा ही करने गए थे। बाकी तो हमारे करम!'

तो भी थोड़ी कडवाहट के साथ उस भाई को कह दिया कि, ''भाई! तुमे हमें सबकुछ पहले ही बता देना चाहिए था ना.... ठीक! अब इस मुख्य रास्ते पर ही आगे 'सुपे' के पहले 1-2 कि.मी. पर कुछ आता हैं? गाँव ? Hotel?....''

''साहेबजी! पता नहीं है। तलाश करके आऊँ?'' कडवाहट के बावजूद भक्तिभाव से वह बोला।''अब सुनो!'' अचानक मैंने मन को मक्कम करके निर्णय ले लिया। ''हम इस मुख्य रास्ते पर ही आगे बढ़ रहे हैं। जहाँ जगह मिलेगी, वहाँ रूक जाएँगी। अब जो होना हो, वो होने दो....

और कलश! तू यहाँ खड़ा रहेगा? न्याय म.सा. और हेमगुण म.सा. पीछे आ रहे हैं। वे आश्रम के रास्ते चले न जाएँ, इसलिए तू यहाँ रूक।''

''हाँ जी!''चौदह साल के उस छोटे बालक ने बिलकुल

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

चिंता किए बिगर हँसते-हंसते 'हाँ' कहीं। या तो उसे परिस्थिति की गंभीरता का अंदाजा नहीं था, याँ तो उसका Tension लेने का स्वभाव ही नहीं था। इसलिए ही वे भागयशाली 'Fat' बने थे।

''डर नहीं लगेगा ना? अकेला है तो? यह भाई आगे तलाश करने जा रहे हैं।''

''नहीं गुरूजी! यहाँ बैठे-बैठे मोबाईल में स्तवन सुनूँगा।'' उस ही मस्ती से हमारे भोले महादेवजी ने प्रत्युत्तर दिया। मुझे ऐसी परिस्थिति में भी उसे देखकर, प्रत्युत्तर सुनकर हसना आ गया। वह जाने कि मुझे सिखा रहा था कि, **''गुरूजी! चिंता क्युँ करते हो? सबकुछ नियति के अनुसार चलता ही रहता है....''**

हमारी गाड़ी वापस पटरी पें चढ़ी।

मैंने अनेकबार अनुभव किया है कि कटोकटी की घटनाओं में मुझे पहले गुस्सा आता है, फिर चिंता सताती है, फिर अनुपम शक्ति आती है, उस आपत्ति के सामने भिड़ जाने की कोई अजब-गजब की मानसिक दृढ़ता जन्म लेती हैं। मुझे कई बार आश्चर्य होता है कि **आत्मा के अंदर कैसी-कैसी बेनमून शक्तियाँ पड़ी है....**

उस भाई से ऐसी गलती क्युँ हुई? वह भी समझ लीजिए। लगभग Car में फिरनेवाले हाई-वे पर एक चोकड़ी से लेकर दूसरी चोकड़ी तक के ही कि.मी. मापते हैं। अंदर मुडने के बाद के कि.मी. का माप की वे गिनति नहीं करते। Car में सैर करनी होने से, उन्हें उन 2 कि.मी. की थकान महसूस नहीं होती। इसलिए साधु-साध्वीजी उपाश्रय से उपाश्रय का माप निकालते है, जबकि संसारी लोग शहर से शहर का या गाँव से गाँव का ही माप निकालते हैं। जिससे कई बार ऐसा बहुत बड़ा अंतर हो जाता हैं।

मेरी तेजी घटने के बजाय बढ़ गई थी। वापस घटे की 6 की रफ्तार से दौड़ने लगा था। साथ ही साथ आजुबाजु नजर भी कर लेता, 'कहीं रहने की जगह मिल जाएँ, या कहीं कोई गोचरी के प्रायोग्य स्थान मिल जाए तो?'

तकरीबन 1 कि.मी. के बाद बाई ओर एक दूध की Dairy दृष्टिगोचर हुई। इच्छा तो हो गई कि वहाँ दूध वहोर लूँ.... परंतु शरम आई और 'वक्त बिगडेगा' ऐसा विचार भी आया, इसलिए सीधे ही सीधे चलते रहा।

वहाँ ही सामने से Car आई। वो भाई और श्रीपालभाई दोनों उतरे।

''म.सा.! यहाँ से तकरीबन 1 कि.मी. दूर 'आकाश' नाम की छोटी Hotel हैं। पीछे ही मालिक का मकान हैं। बहुत भाववाला हैं। वहाँ हमारी रूकने की व्यवस्था कर दी हैं।''

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - १ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

उन्होंने कहाँ और स्मित करकर मैं सडसडाट चलने लगा।

आखिर 17 कि.मी. के ऐसे विहार के बाद मैं हमारे विश्रामस्थान पर पहुँचा। आगे छोटी Hotel! पीछे लंबा घर! घर के पीछे 3-3 छोटी-छोटी रूम थी। एक रूम किसी Doctor को भाड़े पर दी थी, जो फिल्हाल बाहरगाँव गया था। उसकी रूम को ताला था। दूसरी रूम में बेसुमार सामान भरा हुआ था। तीसरे रूम का सब सामान हमारे लिए खाली करके रूम साफ किया गया था। रूम को साफ करने के बाद भी उसमें अब भी रही हुई धूल के प्रमाण से लग रहा था कि 'रूम बहुत धूलवाली होगी....'

मेरा कार्य मैंने शुरू किया। रूम में काजा लिया, और तीनों रूम के बाहर छपरे तथा उसके नीचे की जगह पर भी काजा लिया। उसके बाद बाहर की जगह पर ही लकड़ी के चोरस Pillar के उपर दोरी बांधी और कपड़े सुकाएँ।

धर्मशाला में जिस तरह एक के बाद एक रूम होती है और हरेक रूम के साथ लोबी होती है, मुंबई में चाली में रहनेवालों की बहार की जगह जिस तरह एक साथ लंबी होती है, वैसी वह बाहर की जगह थी।

इतना करकर त्वरीत ही पढ़ने के लिए बैठ गया, उस बात का यह लेख लिखते समय मुझे गौरव हैं। कम से कम इस एक योग को तो मैं आत्मसात कर सका हूँ।

थोड़ी देर में भुवनभूषण म.सा.+शीलगुण म.सा. भी आ गए और मैं तुरंत ही खड़े होकर उनके कपड़े सुकाने लगा। उनको संकोच तो हो रहा था, परंतु वे मौन रहे। मैंने तुरंत ही भुवनभूषण म.सा. को आराम करवा दिया और उनके पात्रे प्रतिलेखन कर दिए।

रहने के सवाल का तो हल हो गया, अब सवाल था गोचरी का!

मैंने शीलगुण म.सा. को Hotel वाले के घर पर तरपनी लेकर भेजा। कुछ सूका-पक्का भी मिल जाए या कोई रसोई भी मिल जाएँ तो?अभी तो जो मिले, वह हमारे लिए मिष्टान्न था।

दूसरा तो कुछ न मिला, परंतु चिवडा(मराठी) ले आएँ।

''एक काम करो। Car में मुमुक्षुओं का सामान हैं। उनके लिए नास्ते के डब्बे हैं। अब तक हमने कुछ भी वहोरा नहीं हैं। आज एक साथ लाभ दे दो....''

''और हा! वो भाई सुबह ताजा नाश्ता लेकर आए थे। वह भी मुझे लग रहा है कि निर्दोष हैं। उन्होंने हमारी गिनती की नहीं हैं। यदि वह बढ़ा हो, तो पक्की जाँच करके वह भी ले लेना।''

मैंने सूचना की और शीलगुण म.सा. उपड़े। दूर तो जाना था नहीं। झोपड़ी जैसी हमारी तीन रूम, उसके बाद Hotel वाले के घर की तीन रूम, उसके बाद Hotel की दो रूम.... इतने हिस्से चलने के बाद Road और वहाँ कार Park की हुई थी।

विहार दिन :
38
मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :
3/1/2016
स्थान :
यवत से
आकाश होटल विया
चोफुले 17 कि.मी.

लगभग 20 मिनिट के बाद वे वापस लौटे।

''क्युँ बहुत देर लगी?''

''उल्टी-सीधी सभी प्रकार की पूछताछ कर दी हैं। उसके बाद ही वहोरा हैं। पूछने में ही देर लगी।'' चला लेनी की वृत्ति नहीं रखनेवाले शीलगुण म.सा.ने स्पष्टता की और झोली में से एक के बाद एक पात्रें निकालते गए।

''खाखरे.... मुमुक्षुओं ने डब्बे में रखे थे....''

''चिक्की.... लोनावला से खरीदी थी। मगनलाल नाम की हम ने रास्ते में सेंकडों दुकानें देखी थी ना? उसमें से....''

''Dry Fruit.... अहमदाबाद वाले बिजलबहन लोनावला आए थे, तब मुमुक्षुओं को डब्बा भरकर दे गए थे....''

''उपमा.... वो भाई सुबह नास्ते में लाए थे, वह बहुत बढ़ गया था....''

''पौंआ.... यह सुबह का बढ़ा हुआ....''

''बदाम का सिरा.... मुमुक्षुओं को लगभग इसकी बाधा थी, इसलिए किसी ने वापरा नहीं हैं। भाई को पता नहीं था इसलिए बना लाए थे, वह संपूर्णतः बढ़ चुका था, इसलिए वह लाया....''

''Waffer, नास्ता.... मुमुक्षुओं के पास था....''

शीलगुण म.सा. ने सही माईने में गोचरी की आलोचना की। अलबत, चार साधुओं का एकासना हो जाए, उतनी गोचरी तो आई नहीं थी। तो भी कुछ शांति हो, शायद 50% शांति हो उतनी गोचरी थी।

''चलो, वापरने बैठ जाओ।''उठे हुए भुवनभूषण म.सा. को मैंने तुरंत ही वापरने बिठा दिया और साथ ही मैं भी बैठ गया।

'खाखरा आदि किसके साथ वापरे जाए?' यह प्रश्न उपस्थित हुआ। शीलगुण म.सा. Hotel वाले के घर पें गए। सद्भाग्य से गरम किया हुआ दूध था। वें लेने तो गए थे चाय! क्योंकि Hotel में चाय तो बनती ही रहती हैं। परंतु यहाँ बारबार चाय बनती नहीं थी। बहुत सारे लोगों का आवागमन भी यहाँ नहीं था। पूछपरछ करने पर Hotel वाले ने बताया था कि, ''Hotel तो नाम की हैं। पीछे हमारी विशाल जमीन हैं। उसकी खेती ही हमारा मुख्य व्यापार हैं।''

शादी होने के वजह से घर के बहुत-से लोग बहार गए थे।

घर के Hotel के खुल्ले हिस्से में ,आंगन में एक झाड़ था। बकरी बाँधी हुई थी, एक गाय थी, एक गाड़ी तथा एक Bike थी। मुर्गा यहाँ-वहाँ फिर रहा था। हम जहाँ उतरे थे, उसके पीछे ही बहुत विशाल खुली जगह थी। दंडे के बिना स्थंडिल जाया जा सके.... वैसी!

दुनिया के प्रदूषण से दूर कुदरत की गोद में, Public के बिना यह परिवार रह रहा था। एक लड़का Engineer था। पुना

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

में नोकरी करता था। एक College में पढ़ता था। घर के बहन के भाव भी अप्रतिम थे। दिन में गोचरी के लिए 4-5 बार जाना हुआ होगा,परंतु 'कंटाला-अरूचि-खेद-थकान-त्रास' ये सभी शब्द उनकी 'मन Dictionary' में प्रतिबिम्बित नहीं हुए। बारबार हमारे पास आकर पूछते ही रहते, ''कोई काम है? कुछ जरूरत है?कुछ बनाना हैं?'' **चरमावत्तको-मार्गानुसारिताको प्राप्त कर चुके ऐसे करोड़ो-लाखों लोग भारत देश के कोणे-कोणे में अलग-अलग जातियों के स्वरूप में बसे हैं।** उसका मुझे दृढ़ विश्वास हैं।

चाय की जगह दूध मिला। Coffee Powder मिला। इसलिए शक्कर लेकर वे वापस फिरे। भुवनभूषण म.सा. को उससे वापरने में अनुकूलता रहीं।

हेमगुण म.सा. को मैंने मना किया था कि, ''तुम अब वापरने मत बैठना। क्योंकि न्याय म.सा. कब आएगे उसका कुछ पता नहीं हैं? शायद कुछ वहोरकर आएँ तो?''

''गुरूजी! मुश्कील हो गई। न्याय म.सा. उस आश्रम में गोचरी लेने चले गए हैं।''शीलगुण म.सा. ने मुझे कहाँ और मेरा पित्ता फटा।

''किसने कहाँ? कलश को वहाँ बिठाया तो था....''

''हा! परंतु अभी ही श्रीपालभाई यहाँ के भाई को लेकर Bike के उपर तलाश करने निकले थे। वे जहाँ कलश बैठा था, वहाँ तक जाकर आएँ। कलश ने न्याय म.सा. को कहाँ कि, ''सब आगे गए हैं। आश्रम 2.5 कि.मी. अंदर है, इसलिए आपको आगे जाना हैं।''

परंतु न्याय म.सा. ने तो उपधि आदि Extra चीजें कलश के पास रख दी। ''इनका ध्यान रखना'' ऐसा कहकर झोली-घड़ा लेकर अंदर गए। ''आगे सभी की गोचरी पूरी कैसे होगी?'' इस भक्तिभाव से ही वे गए होंगे।''

''अरे! यह तो मुझे भी पता चलता है कि वे भक्तिभाव से ही गए हैं। परंतु बुद्धि उनकी बुठ गई हैं। उनको भान नहीं है कि सब मिलाकर 5 कि.मी. बढ़ेंगे, और यहाँ सब को चिंता होगी, और यदि वहाँ से हम सभी की गोचरी ले आएँ तो क्या नतीजा आएँगा? यह हम दो की पूरी हो जाए, उतनी तो लगभग आ गई हैं।'' मैंने मेरा आक्रोश व्यक्त किया। कोई भी कुछ भी नहीं बोला।

मेरी गोचरी पूरी हो गई थी। न्याय म.सा. की राह देखते हुए बैठा रहुँ, तो घंटा-दो घंटा भी बैठना पड़े वैसी शक्यता पक्की थी और मुझे तो उसकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि पेट भर गया था। इसलिए मैं तो खड़ा हो गया। दूसरी ओर शीलगुण म.सा. और भुवनभूषण म.सा. वापर रहे थे। उनको अभी बाकी था और मैंने भी उनको बैठे रहने को ही कहाँ।

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :
3/1/2016

स्थान :
यवत से
आकाश होटल विया
चोफुले 17 कि.मी.

मैं आराम करने के लिए लेटा। आधी-अधुरी निंद आई थी, वहाँ तो मेरे कान में श्रीपालभाई और हेमगुण म.सा. के धीरे स्वर के शब्द सुनाई दिए।

''न्याय म.सा. गोचरी लेकर कलशभाई बैठे है, वहाँ तक तो आ गए हैं। परंतु उपधि+गोचरी+पानी से भरा हुआ घड़ा.... यह सब कुछ होने से वे अकेले इतना सब लेकर आ सके वैसी स्थिति नहीं हैं। इसलिए उन्होंने कलश को भेजा है और कहलाया है कि, ''यदि हेमगुण म.सा. सामने लेने के लिए आ सके तो अच्छा....''

''अच्छा, मैं आ रहा हूँ।'' बोलकर हेमगुण म.सा. मुझे आराम मे खलेल न पड़े, वैसे अंदर दोनों महात्माओं को बताकर कामली+दंडा लेकर निकल गए।

समय हुआ होगा लगभग 12-12.30 का!

मैं सो नहीं पाया। मुझे मेरी जवाबदारी का भान हुआ। आराम को छोड़कर मैं खड़ा हुआ। कपड़ा-दंडा-कांबली लेकर मैंने चलती पकड़ी। दोनों साधु मुझे जाते हुए देखते ही रहे। मेरी तेजी की वजह से दो-चार मिनिट में ही हेमगुण वि. म.सा. से आगे निकल गया। वे आश्चर्यचकित हो गए, 'गुरूजी को किसने कहाँ?' उनको पता नहीं था कि अर्धजागृत दशा में मैंने सब कुछ सुन लिया था।

धूप थी, गरमी लग रही थी, परंतु सर्दी होने से जला दे वैसी गरमी नहीं थी। घड़ा-गोचरी-उपधि लेकर चले आ रहे न्याय म.सा. दिखाई दिए। हम और ज्यादा तेजी से चलकर पास पहुँचे। मन में गुस्सा था, परंतु अभी उसे व्यक्त करने का अवसर नहीं था।

''मात्र यह तरपनी ही लेनी है। थकान नहीं लगी है, परंतु चेतने में प्रवाही वहोरी है ना, इसलिए वह ढूल जाएँ ऐसी संभावना थी, इसलिए बुलाना पड़ा। परंतु, गुरूजी! आप क्युँ पधारे?'' उनके शब्दों में मेरे आने की वजह से दर्द था। गुरूजी को तकलीफ हुई ऐसा विचार विद्याशिष्य को आता ही है और उसका दुःख होता ही है, **वह तो साहजिक हैं।**

वे तरपनी के अलावा दूसरा कुछ भी देना चाहते नहीं थे, और मैं चर्चा करना चाहता नहीं था। मैंने दादागिरी से ही काम किया। झोली-तरपणी मैंने ली। घड़ा हेमगुण म.सा. ने ले लिया, उपधि भी ले ली। मेरा दंडा उनको देकर दंडासन+भारी प्यालावाला दंडा भी ले लिया। और हमारी विहारयात्रा वापस आकाश Hotel की ओर गतिशील हुई। 15-20 मिनिट में हम वहाँ पहुँचे।

वहाँ पहुँचने के बाद झोली खोलकर देखा तो मेरा सौभाग्य कि उसमें गोचरी कम थी। थोड़ा सिरा था, आयंबिल की थोड़ी रोटी, थोड़े चावल.... बस! चेतने में दाल.... परंतु बढ़ जाएँ या

विहार दिन :
38
मृगशीर्ष वद - १ दिनांक :
3/1/2016
स्थान :
यवत से
आकाश होटल विया
चोफुले 17 कि.मी.

परेशान होना पड़े वैसा नहीं था।

'इतनी अल्पगोचरी में तो उनका 50% आयंबिल भी नहीं होगा,' मुझे विचार आया, परंतु उपाय क्या?

आश्चर्य की बात यह थी कि आश्रम में से घड़ा भरकर गरमागरम निर्दोष पानी मिल गया था और उसे न्याय म.सा. उठाकर 2.5 कि.मी. तो लाएँ ही थे।

विहार का हिसाब किया जाए तो (1) भुवनभूषण म.सा.+शीलगुण म.सा. को 17 कि.मी. का विहार हुआ। (2) मुझे और हेमगुण म.सा. को 19-20 कि.मी. का हुआ।(3) और न्याय म.सा. को 22-23 कि.मी. का विहार हुआ।

यह विहार एकसाथ हुआ हो, तो बराबर! परंतु हिस्सों-हिस्सों में हो और चिंता के साथ हो और अनिश्चितता के साथ हो, कल्पनाबाहर हो, तो थकान बहुत ही बढ़ जाती हैं।

हेमगुण म.सा. वापरने बैठ गए। न्याय म.सा. ने वंदन किया, मंदीर-चैत्यवंदन तो सुबह यवत में हो गया था। इसलिए पच्चक्खान पारकर वे भी वापरने बैठे।

चारों वापर रहे थे। सभी थके हुए थे। उस तक का लाभ उठाकर मैंने पडिलेहण चालु कर दिया। चारों अंदर रूम में थे। अंदर जगह छोटी होने से सभी ने खुद की उपधि बहार परसाल में = लोबी में छपरे के नीचे रखी थी। थोड़ी उपधि दोरी पर सुक रही थी। मैंने एक के बाद एक, जितनी उपधि नजर आई उन सभी का प्रतिलेखन कर दिया। पात्रे वापरने में थे, परंतु झोली-पल्ले आदि तो बहार ही थे, वे भी प्रतिलेखन कर दिए। दोरी पें सुकते हुए कपडें भी प्रतिलेखन करके वापस सुका दिए। उसके बाद रूम में जाकर वहाँ भी जो कुछ उपधि हाथ में आई, वे सभी भी चारों की बुमाबुम के बावजूद प्रतिलेखन कर दी। स्थापनाजी आदि सब प्रतिलेखीत कर, मेरा भी पडिलेहण कर, काजा निकालकर मैं ऋणमुक्त हुआ।

यह सब आपको निवेदित करने का आशय इतना ही है कि, **'हम पहले साधु है, वडील-पदवीधर-गुरू बाद में है....'** इतना हम सब समझ ले तो अच्छा! मुझे यह सब कुछ करते वक्त बहुत आनंद आया था। मेरा कर्त्तव्य मैंने निभाया था।

आराम करने का Mood नहीं था, इसलिए लिखने बैठ गया।

शीलगुण म.सा. गोचरी वापर के खड़े हुए, परंतु हेमगुण म.सा. को भूख थी, इसलिए वापस Hotel वाले के वहाँ गोचरी के लिए गए। दूसरा तो क्या मिले? परंतु वे जब वापस लौटे तब वे खुश दिख रहे थे।

''गुरूजी! आयंबिल के लिए खीचड़ी मिल गई। बहन ने ससुरादि के लिए अभी ही बनाई थी। अपना तो सब कुछ पूरा हो गया होने से हमारे लिए तो उनका लेश भी विचार नहीं था।

विहार दिन :
38
मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :
3/1/2016

स्थान :
यवत से
आकाश होटल विया
चोफुले 17 कि.मी.

गरमागरम है, और प्रमाणसर भी हैं।'' लगभग दो टोक्सी जितनी खीचड़ी होगी। साथ में हेमगुण वि. के लिए कोरे ममरे लाएँ थे, जो उन्हें पीछे से बढ़ गए थे।

पढ़नेवाले को बहुत बार ऐसा होता होगा कि, 'यहाँ भले लिखने में आवे कि यह सब चीजें निर्दोष है', परंतु वह तो दोषित ही होगी । पक्की तलाश करेंगे, तो सब कुछ पता लग जाएगा।

परंतु मुझे पक्का विश्वास है कि वह निर्दोष थी। वहाँ की पूरी परिस्थिति को अनुभव कर मैं ऐसा कह सकता हूँ। हा! उन सभी परिस्थितियों का वर्णन कर पढ़नेवाले को वो अनुभव करवाने की ताकात मेरे पास नहीं हैं। परंतु यदि तुम वहाँ हमारे साथ होते, तो जरूर बोलते कि , ''बराबर है, वस्तु निर्दोष है....''

हा! शायद कहीं सचित संघट्टा+प्रमाण से ज्यादा वहोरना.... आदि दोष लगे होंगे। परंतु बड़े कहे जानेवाला बहुत सारे दोषो में से हम बच गए थे.... ऐसा मुझे लगता हैं। **'तत्त्वं तु केवलीगम्यम्'।**

रात को भुवनभूषण म.सा. ने पूरे परिवार को Hotel की जगह पर बैठकर मराठी में प्रवचन दिया। और सभी को पूरी जिंदगी के लिए दारू आदि व्यसनों की प्रतिज्ञा दी। उनके घर में माँस पकता नहीं था, परंतु वे बाहर जाते, तो कभी-कभार खा लेते, परंतु अब उसकी भी प्रतिज्ञा दी।

संथारे का वक्त हो गया। मुमुक्षुओं को तो Hotel वाले के घर के एक रूम में सुला दिया। परंतु हमारे लिए यह एक छोटी-सी रूम थी। पाँच लोग सो सके उतनी जगह भी नहीं थी। बाहर Lobby में सोया तो जा सकता था, परंतु पीछे खेती-बाड़ी होने से साँप आदि का डर था और रात को ठंडी अतिकातील पड़ती थी। इसलिए मैंने निर्णय किया था कि 'रूम में ही जैसा-तैसा करके भी सब कुछ Set कर लेंगे।'

परंतु हमारे साहसिक सैनिक शीलगुण म.सा. तो बहार की Lobby में संथारा करके सोने लगे....

''अे! महाराज! अंदर आ जाओ....'' मैंने थोड़े गुस्से में कहाँ।

''अंदर जगह नहीं हैं। मैं बहार सो जाऊँगा। मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी।'' परोपकारैकरसिक उस भाग्यशाली ने खुद का निर्णय जाहेर किया।

''जगह हो जाएगी।'' मैंने शांति से कहाँ।

''परंतु गुरूजी! रात को मात्रु के लिए बहार जाना होगा, तो दरवाजे को खोलने की जगह भी नहीं बचेगी, वैसे संथारा करना पड़ेगा वैसी हालत हैं। मैंने देख लिया हैं।''

''मैंने भी देख लिया हैं। दरवाजा भले ही पूरा न खुले, परंतु

विहार दिन :

38

मृगशीर्ष वद - ९ दिनांक :

3/1/2016

स्थान :

यवत से

आकाश होटल विया

चोफुले 17 कि.मी.

एक जन बाहर जा सके उतना तो खुलेगा ही। चलो अंदर....'' स्वर को कड़क करते हुए मैंने कहाँ।

परंतु आज वे भाग्यशाली हठ पर चढ़े। 'चार को शांति से सोने दूँगा, तो मैं तीर्थंकर बनूँगा' ऐसी कोई सद्बुद्धि(!) उन्हें सुझी होगी।

मेरा Boiler अतिशय गरम हो गया।

क्योंकि.... बहार साप आदि का डर, ठंडी का डर, आज के दिन का परिश्रम यदि न उतरे तो बीमारीयों का डर.... और ठंडी में यदि निंद न हो, तो थकान ही नहीं उतरे.... परंतु यह सब उस परोपकारी को समझाना मुश्कील हो गया।

''तुमे अंदर नहीं आना?'' मैंने कडक होकर पूछा।

''नहीं''

मैं अंदर गया। मेरा संथारा लाकर मैं भी बाहर संथारा करने लगा। वे तो देखते ही रह गए। 'क्या किया जाएँ?' इस बात की उनको सुझ-बुझ ही नहीं रही।

वहाँ तो मीठास की भूमिका पर रचा हुआ हमारे दो के बीच के तीखे झगड़े को उपशांत करने के लिए गंभीर मुनिवर भुवनभूषण म.सा. पधारे। ''गुरूजी! आप कहाँ बाहर संथारा कर रहे हो....'' ''तो क्या करूँ? इनको किसी भी तरह की सुझ-बुझ नहीं हैं। बुद्धि की छांट भी नहीं हैं। हुशियारी में से उँचे ही नहीं आते हैं। आज्ञा माननी नहीं हैं। तो मुझे ऐसा ही रास्ता लेना पड़ेगा ना?'' ''वे भी अंदर ही संथारा करेंगे। आप चिंता मत करो। आप अंदर पधारो। चलो, शीलगुण म.सा.! अंदर सब तरह की व्यवस्था हो जाएगी।''

और शीलगुण म.सा. अनिच्छा से, चढ़े हुए थोबडे के साथ अंदर आएँ, उसके बाद मैंने संथारा किया। सागर में जैसे नदी समा जाती है, उस तरह उस छोटी रूम में हम पाँच लोग जैसे-तैसे भी समा गए। मेरी दादागिरी काम आई।

एक बात रह गई। विहार में आई हुई दूध की Dairy में हेमगुण म.सा. वहोरने गए थे। उस भाई के मन में आनंद समा नहीं रहा था। परंतु सब दूध Cold Storage में रख दिया होने से चले वैसा नहीं था। इसलिए दूध वहोरा जा सके वैसा नहीं था। नहीं तो, अकेले दूध पर ही हमारा एक टंकका भोजन हो जाता, इतना सारा दूध मिल जाता।

इस तरह हमारा अनेकानेक अनुभवों से हरा-भरा यादगार दिन, 'आकाश' के जैसा बहुत लंबा लगा हुआ 'आकाश' Hotal का दिन अस्त हुआ।

प्रभु! मेरे मृत्यु तक तूँ मेरे जीवन में और ऐसे कितने और कैसे अनुभव करानेवाला हैं? यह बात सपने में आकर कह देना, मुझे!

Vihar Day :

39

मृगशीर्ष वद

१०

DATE :

4.1.2016

Place :

आकाश Hotel से

पानसरेवाड़ी

11 कि.मी.

जय मराठा

विहार दिन :

39

मृगशीर्ष वद १० दिनांक :
4/1/2016

स्थान :
आकाश होटल से पानसेरवड़ी 11 कि.मी.

'आज कहाँ ठहरना?' इसकी अनिश्चितता के साथ, 'पानसरेवाडी' के सामान्य अंदाज के साथ हम जल्दी ही निकल गए। रास्ते बहुत पतले थे और जल्दी सवेरे भी गाड़ीयों के आवागमन की वजह से डर रहता था।

6 कि.मी. चले, सूर्योदय हो गया था और हम 'सूपे' गाँव में पहुँचे। वहाँ 2-4 घर थे। इतना कम विहार हमको पर्याप्त हो जाएँ वैसी परिस्थिति नहीं थी, इसलिए भगवान के भरोसे हमने आगे जाने का निर्णय कर लिया था।

मंदीरजी में दर्शन कर रहे थे, तब पूजारी ने एक अत्यद्भुत चीज बताई। ''म.सा.! इस प्रतिमा के दर्शन कीजिए।'' गभारे में आदिनाथ प्रभु की धातु की परिकरवाली प्रतिमा बाहर लाकर भंडार के उपर थाली में रखकर उसने कहाँ।

''क्युँ? कुछ विशेष है?''

''ध्यान से देखीए....''

''कुछ विशेष ध्यान में आ नहीं रहा,'' मैंने ध्यान से देखने के बाद कहाँ।

''म.सा.! यह देखीए। इसमें परिकर के अंदर ही बहुत सारे पात्र आलेखित किए गए हैं। यह है हाथी पे बैठे हुए मरूदेवा माता! शत्रुंजय के उपर जो जो स्थान है, वे सभी इस परिकर में समा लिए गए हैं।'' पूजारी ने मुझे बताया और मैं आश्चर्यचकित हुआ। सचमुच उसके कहने के अनुसार सब कुछ उस छोटे से परिकर में प्रत्यक्ष हो रहा था।

''म.सा.! इससे देखीए.... ज्यादा स्पष्ट दिखेगा।'' बिलोरी काच को(Magnifying Glass) मेरे हाथ में देकर उसने कहाँ। उसकी बात 100% सच थी। उसने बाद में एक Lamination किया हुआ Card मुझे दिया। ''इसमें प्रतिमा से मिलती-जुलती सभी जानकारी छपी हुई हैं। इसमें क्या क्या हैं? यह सब लिखा हुआ हैं।''

परिकर में समवसरन आदि बहुत सी चीजें थी।

''सात सो साल पूरानी प्रतिमा हैं।'' पूजारी ने मेरे आश्चर्य में बढ़ोतरी की।

हम सब अतीत की जाहोजलाली में खो गए। ऐसे छोटे से गाँव में ऐसी अद्भुत वस्तु पड़ी हैं। और उसकी जानकारी बहुत ही कम को हैं।

दर्शनादि करके बाहर निकले।

''आगे गोचरी का ठिकाना नहीं हैं। 2-3 घरों में से जो कुछ सूकी-पक्की चीजें मिल जाएँ, उसे ले आओ।'' मैंने सूचना की और शीलगुण म.सा.+हेमगुण म.सा. चल निकले। 15 मिनिट में पात्रे-तरपणी भरकर वापस लौटे। खाखरे+सफेद खेके

विहार दिन :

39

मृगशीर्ष वद १० दिनांक :

4/1/2016

स्थान :

आकाश होटल से

पानसेरवड़ी

11 कि.मी.

लाडु+सोनपापडी+दो रोटी+थोड़ी टमाटर की सब्जी+परचूरण आदि बहुत कुछ वहोर लाएँ थे।

'आज का दिन बिना मीठाई का जाएगा' ऐसा मेरा अंदाजा गलत साबित हुआ, क्योंकि सबेरे ही पर्याप्त प्रमाण में मीठाई प्राप्त हो गई थी। एक घर में लड़का पुना Hostel में पढ़ने जानेवाला था, इसलिए घर पें उसके खाने के लिए बहुत सारे लड्डु बनाएँ थे(प्रायः रवा के लड्डु थे)। उसको देने के बाद जो घर पे दूसरे पडे थे, वे उन्होंने वहोराएँ थे।

एक घर में स्कूल जानेवाले लड़के-लड़की के लिए Tiffin तैयार करने के लिए रोटी-सब्जी बनाए थे। इसलिए वह मिल गया। खाखरे तो मिल ही जाते थे।

अब से आगे के Area में अजैनों के घरों में हिन्दी भाषा चलनेवाली नहीं थी। महाराष्ट्र की मराठीभाषा का ही प्रयोगवाला Area चालु हो चुका था। छोटे गाँव के लोग मातृभाषा ही जानते है.... हमारा विहार अब छोटे गाँवों में से ही था।

एक घर में 'म.सा. आनेवाले है' इस बात के समाचार होने से घडा भरकर पानी उबाला था। हमने वो आधाकर्मी पानी वहोर लिया। क्योंकि आगे दूसरे पानी की संभावना नहींवत थी।

आधा-पोणा घंटा इस तरह गाँव में बिताकर हम आगे बढ़े। अंदरूनी रास्ता था, गाड़ीयाँ नहींवत् थी....परमशांति.... इसलिए मस्तीपूर्ण विहार हुआ।

आखिर हम पूछते-पूछते पानसरेवाडी गाँव पहुँचे.... देखा तो गाँव जैसे कुछ भी लक्षण नहीं थे। रास्ते के डाएँ ओर चालीस-पच्चास कच्चे-पक्के घरों का समुह मतलब पानसरेवाड़ी! एक मंजिलवाला एक भी मकान नजर न आएँ। इतनी ज्यादा निरव शांति की मत पूछो बात! हमें यहाँ ही दिन बिताना था और गोचरी वापरनी थी।

Road को छुकर ही पंचायत रूम थी। 'यहाँ ही उतर जाते है' ऐसे विचार से मैं पंचायत की ओर आगे बढ़ा। एक भाई वहाँ से ही आ रहा था। हमारे मराठी के भाषा के ज्ञाता मुंबई के साधुओं ने बातचीत की, ''यहाँ रूकने मिलेगा? ताला हैं। चाबी किसके पास मिलेगी....''

''म.सा.! आप दो-चार मिनिट Late हुए होते, तो यहाँ रूकने को नहीं मिलता। क्योंकि चाबी मेरे पास है और बंध करके मैं दूसरे गाँव ही जा रहा था। आपको चाबी देने में मुझे कुछ परेशानी नहीं है, परंतु सरपंच की इजाजत लेनी जरूरी हैं।''

हमने प्रभु का उपकार माना की उन्होंने हमें समयानुसार पहुँचाया और उस ही भाई के साथ हमारा पहला मिलन करवाया कि जिसके पास चाबी थी।

महात्मा सरपंच के घर जाकर बात कर आए और हमारे लिए

विहार दिन :

39

मृगशीर्ष वद १० दिनांक :

4/1/2016

स्थान :

आकाश होटल से

पानसेरवड़ी

11 कि.मी.

निर्दोष बस्ती के दरवाजे खुल्ले हो गए।

पंचायत गृह में कुल तीन रूम थी। बराबर बीचों बीच Hall जितनी बड़ी रूम! और आजु-बाजु में श्रावकों के घरों की रूम जितनी या उससे थोड़ी बड़ी रूम! सबकुछ साफ-सफाई से चकचकीत! उजाला भरपूर! हवा भी अच्छी.... ऐसा उपाश्रय हो, तो चातुर्मास भी कर सकते हैं।

पाठ पूर्ण होने के बाद मैं अंदर की रूम में सरपंच की कुर्सी पर बैठकर Table की सहायता से लिखने लगा। ऐसे स्थानों में उपाश्रय की तरह लिखने के लिए Table तो मिलते नहीं, परन्तु Office काम के लिए Table-कुर्सी रखी हुई होती है, उससे ही चला लेना पड़ता हैं। परंतु वे Table..... कुर्सी की माप की तुलना में बहुत उँचे होते है, इसलिए उन Table पर लिखने के लिए कुर्सी पर बैठना अनिवार्य बन जाता हैं। इसलिए ही कुर्सी पर बैठना अरूचिकर होने के बावजूद लेखन करने के लिए अपवाद रूप से मैं बैठा।

समय होते ही सरपंच का पढ़ा-लिखा(Engineering Course) लड़का आधे रास्ते में घर बताने के लिए आ गया। आज मराठी भाषा की वजह से पिता-पुत्र ही गोचरी गए। आधे घंटे में तो गोचरी लेकर वापस आ गए।

''मांसाहारी घर छोड़े, परंतु उसके अलावा के घरों में भी अमान-समान भक्तिभाव! इस गाँव में पहली बार इस तरह साधु उतरे है, और गोचरी तो कदापि कोई गया नहीं हैं। बड़े रोटले 2-4 एक साथ उठाते है, गुड के बड़े-बड़े टुकड़े लेते है, 'भगवान!भगवान!' बोलते है, पागल-पागल से हो जाते है, दीपक करने की तैयारी करने लगते है.... बड़ी मुश्कील से उनकी भक्ति के अतिरेक को अटकाना पड़ता हैं। **संपूर्ण गाँव निरक्षर है, तो भी इससे बड़ी साक्षरता दूसरी क्या हो सकती हैं? कि वे अतिथि को, साधु को साक्षात भगवान स्वरूप माने।''** गोचरी पर्याप्त आ गई। थोड़ी दाल मिली थी। यहाँ लाल-मिरची की चटनी भी मिलती है, जिसे वे लोग 'कुच्चा' या ऐसा ही कुछ कहते हैं। वह भी गोचरी में ले आएँ थे।

'सुपे' गाँव की गोचरी और यहाँ की गोचरी हमने वापरनी चालु की।

हा! एक बात बताना भूल गया कि जब दो साधुभगवंत गोचरी वहोरने गए थे, तब बारामती से सुश्रावक रामजीभाई Car में दो श्रावको के साथ Tiffin लेकर आ पहुँचे थे। दूसरी ओर 'सूपे' गाँव से पूजा करके मुमुक्षु आ पहुँचे थे।

''हम इसमें से कुछ भी नहीं वहोरेंगे,'' रामजीभाई को मैंने स्पष्टतापूर्वक मना किया।

''तो गोचरी कैसे वापरोंगे?''

विहार दिन :
39
मृगशीर्ष वद १० दिनांक :
4/1/2016

स्थान :
आकाश होटल से
पानसेरवड़ी
11 कि.मी.

''गाँव में दो साधु लेने गए ही हैं।''

''अरे म.सा.! ऐसे गाँव में गोचरी नहीं जा सकते। वे तो वहोराते भी नहीं हैं। उनको कुछ भी पता नहीं चलता।''

''हम उनको समझा देंगे। हमें प्रयत्न तो करने दो।'' और श्रावको की गलत जीद की उपेक्षा करके दो साधु तो गोचरी गए ही थे। जब वापस आएँ तब श्रावकों ने पूछा कि ''नहीं मिली ना?'' आधे घंटे में ही वापस लौट गए थे, इसलिए उन्होंने कल्पना कर ली कि 'सभी ने 'ना' कहीं होगी।'

''बहुत मिली, और दोगुणा-तीनगुणा मिल रही थी। परंतु हमको मना करना पड़ा।'' साधुओं ने हँसते-हँसते जवाब दिया। ''आप सभी को भोजन करना हो, तो भी पर्याप्त हो जाएँ, इतनी गोचरी मिल रही हैं।''

रामजीभाई आश्चर्यचकीत हुए, खुद को लाभ नहीं मिलने से दुःखी भी हुए, परंतु वे करे भी क्या?

वे पंचायत गृह के बाहर के ओटले पर भोजन करने बैठे और हम अंदर! बीच-बीच में वे बहार से जोर-जोर से आवाज देकर विनंति करते रहे। **सचमुच म.सा. के सग्गे माँ-बाप की भूमिका अदा कर रहे थे** वे रामजीभाई सुश्रावक!

लालमिरची की चटणी ने शीलगुण म.सा. का दम निकाल दिया, क्योंकि वह मुँह मे से आग निकाले उतनी तीखी थी। साथ में गुड़ खा-खा कर मुश्कील से पूर्ण की और पूरे दिन पेट में जलन होने से परेशान हुए। **महाराष्ट्र ने खुद की मराठा शक्ति दिखाना Start कर दी थी।**

भोजन पूर्ण कर मैं दरवाजा खोलकर बहार गया, तो बारामतीवाले चार श्रावक और हमारे तीन मुमुक्षुओं की मोज-मजा देखकर मैं स्तब्ध रह गया। तीन मीठाई-तीन नमकीन-तीन Fruits.... आदि बहुत कुछ! विहार में Tiffin के रूप में इतनी सारी चीजें लानेवाले रामजीभाई के मन के भक्ति के भाव छीपे न रह सके।

उनकी वापस भारोभार विनंति के बावजूद हमने कुछ नहीं वहोरा। सिर्फ पानी हमको वहोरना पड़ा। उस वक्त भी मैंने स्पष्ट सूचनाएँ साधुओं को दे दी, ''यह पानी आधाकर्मी भी है, और सामने से लाया होने से अभ्याहृत भी हैं। हम यदि यहाँ ही पानी उबलवा देते तो सिर्फ आधाकर्मी ही दोष लगता.... इसलिए भविष्य में हमें सामने से लाया हुआ पानी वहोरना नहीं है....''

''परंतु उनको हमने मना किया हो, तो भी उबालकर वे यदि लावे, तो फिर उसे वहोर लेना ही अच्छा है ना? यदि हम नहीं वहोरेंगे और नया उबलवाएँगें, तो वह हिंसा भी ज्यादा होगी ना?'' एक साधु ने तर्क किया।

''वह नई हिंसा चलेगी, परंतु 1-2 बार भी यदि हम वैसा

विहार दिन :

39

मृगशीर्ष वद १० दिनांक :

4/1/2016

स्थान :

आकाश होटल से

पानसेरवड़ी

11 कि.मी.

करेंगे, तो दूसरी बार वे पानी लाना ही भूल जाएँगे। **हम ढ़ीला छोड़ रहे है,** इसलिए वे हमारे मना करने के बावजूद भी ला रहे हैं। वे ऐसा ही सोच रहे है कि, ''महाराज ने भला 'ना' कहीं। हम लेकर ही जाएँगे, तो वे कहाँ ना कहेंगे? और आगे लेकर आते ही रहेंगे।'' मैंने समाधान दिया।

Vihar Day :

39

मृगशीर्ष वद

१०

DATE :

4.1.2016

Place :

पानसरेवाड़ी से

Shepherd House/ गौशाला

9/8.5 कि.मी.

मार्गानुसारिता

विहार दिन :

39

मृगशीर्ष वद १० दिनांक :
4/1/2016

स्थान :
पानसरेवाड़ी से
Shepherd हाऊस / गौशाला
9/8.5 कि.मी.

शाम का नास्ता मुमुक्षुओं के लिए देकर बारामतीवालों ने विदाय ली और हमने भी तैयार होने के पश्चात शाम का विहार योग्य समय पर शुरू किया। हमको आज शाम को बारामती के रास्ते में आनेवाली गौशाला में रूकना था। अगले दिन बारामती पहुँचने के लिए आज शाम का विहार अनिवार्य था।

हेमगुण म.सा. ने आज मुझे सुबह विहार में कहाँ था कि, ''आज अंधेरे में हमने विहार किया था और गाड़ीयों का आवागमन भी था। रास्ता पतला था, इसलिए मुझे बहुत ही गभराहट हो रही थी। बारबार रास्ते पर से नीचे उतरकर खड़ा रह जाता था। गुरूजी! मैं यदि उजाला होने के बाद विहार करूँ तो चलेगा?''

सचमुच तो उनकी बात 100% सच्ची थी। थोड़ा भी अँधेरे का विहार खतरेजनक था ही, साहस ही था। हम भी लगभग तो सूर्योदय के पोणे-आधे घंटे पहले ही विहार करते थे, उसके पहले नहीं। परंतु बड़े विहार आदि कारणों से कभी-कभार जल्दी विहार भी कर लेते थे।

रास्ते में पानी चुकाने के लिए (सूर्यास्त नजदीक होने से) हमने दो-चार छोटे मकानवाली जगह में प्रवेश किया। देखा तो पले हुए कुत्ते बिना बंधे हुए वहाँ बैठे थे। चार-पाँच मराठी बहने और थोड़े भाई वहाँ बैठे-बैठे गप्पे लगा रहे थे।

''यहाँ पानी पीने के लिए हम बैठ सकते हैं?'' शीलगुण म.सा. ने मराठी में पूछा। फिलहाल विहार में हम दोनो ही साथ थे, दूसरे सब आगे-पीछे थे....

''अरे,बैठो ना महाराज!'' इजाजत मिली और हमने पानी पीया। उस दौरान थोडी दूसरी बाते भी चली।

''कहाँ से आ रहे हो महाराज?''

''बारडोली से! गुजरात में है ना? वो! सरदार वल्लभभाई पटेल का गाँव!''

''ओ हो! इतने दूर से आ रहे हो? चलकर आते हो? बहुत कठिन हैं। आगे कहाँ जानेवाले हो?''

''चेन्नई-मद्रास!''

''इतने दूर तक? चलते जाओगे? महाराज! आपका धरम कौनसा?''

''जैनधर्म! महावीरस्वामी हमारे भगवान!''

''आपकी तपस्या बहुत कठिन है। ये नास्ता लोगे?''

''नहीं! हम पाँच लोग हैं। दुपहर को सिर्फ एक ही बार भोजन करते हैं। उसके सिवा सिर्फ पानी! फलादि भी नहीं। वह भी सूर्यास्त तक ही! उसके बाद पानी भी बंध!''

वो सभी लोग जाने कि कोई पूतले बैठे न हो, उस तरह

विहार दिन :
39
मृगशीर्ष वद १० दिनांक :
4/1/2016

स्थान :
पानसरेवाड़ी से
Shepherd
हाऊस / गौशाला
9/8.5 कि.मी.

हिल-चाल किए बिना, आँखों को भी पटपटाएँ बिना एकलीन होकर हमारे शब्दों को पी रहे थे। उनको तो यह सब अकल्पनीय ही लग रहा था। खुद के हजारों संन्यासीओं में उनको शायद ऐसा एक साधु भी दृष्टीगोचर हुआ नहीं होगा।

''आपका परिवार तो होगा ना?''

''था। वह सब हम छोड़ आए। वे तो लाखों-करोड़ोपति हैं। मुंबई-सुरत-अहमदाबाद में रहते है.... परंतु हमारा उनके साथ अब कोई नाता नहीं हैं। कभी-कभार दर्शनादि के लिए आ जाते है?''

उसके बाद तो लोचादि साध्वाचारों का सुमधुर वर्णन-निरूपण शीलगुण वि.म.सा. ने उस मुग्ध प्रजा के समक्ष किया।

''महाराज! आज यहाँ आएँ वह अच्छा किया। **हमारे घर तो विष्णु का अवतरण हुआ।** हमको आपके चरणो की रज लेने दोंगे? महाराज!'' गिले स्वर में वे बोल उठे।

''भाई स्पर्श कर सकेंगे। बहने छूँ नहीं सकेगी.... वे मात्र प्रणाम कर सकेंगे।'' जैनसाधुओं की ब्रह्मचर्य व्यवस्था बतानी शेष रह गई थी, वह भी इस निमित्त से मेरे शिष्य ने दर्शा दी।

भाईयों ने पैर को स्पर्श किया, बहनें नजदीक आकर जमीन को स्पर्शे।

यह सब गरीब नवाज नहीं थे। Bike आदि Park किए होने से पता तो चल जाता था कि दक्षिण गुजराज के समृद्ध गाँवटी किसानों की समकक्षा में इनको दर्जा दिया जा सकता था।

Time बहुत बिगड़(!) गया था। हम दो आगे चले। परंतु आज वापस हमारी परीक्षा होनेवाली थी। उस परीक्षा का तो हम जैसे अज्ञानीओं को पता कैसे लगे?

हम गौशाला के तरफ मुडनेवाले रास्ते को पहचान नहीं पाएँ। हम आगे बढ़ चुके थे। सूर्यास्त हो गया, अँधेरा छा गया। पूछताछ करने के बावजूद भी रास्ता बतानेवाला कोई नहीं मिला। ज्यादातर लोग तो गौशाला से परिचित भी नहीं थे।

अंततः एक जानकार मिला। उसने हमको कहाँ कि, ''तुम तो पीछे वो रास्ता छोड़ आएँ, वापस 3 कि.मी. जाना पड़ेगा....''

मैंने सोचा कि, ''कल सुबह हमको आगे ही जाना है, तो हम आगे ही बढ़ते है और कहीं रूक जाते हैं। 3+3=6 कि.मी. कहाँ बढ़ाना?''

इसलिए हम दो आगे बढ़ते गए।

''ओ! महाराज! कुठे चाललेे(कहाँ चले)?'' Road की बाएँ ओर पर एक घर के बाहर खुले चौक में खड़े एक प्रौढ़ किसान ने आवाज लगाई और हम खड़े रहे।

''गौशाला में रूकना था। पर हम आगे निकल आएँ। अब रात को कहीं रूकना हैं। कहीं जगह मिल सकेगी?''

''अरे महाराज! मेरे घर में ही पधारो!'' किसान ने भक्ति से

विहार दिन :

39

मृगशीर्ष वद १० दिनांक :

4/1/2016

स्थान :

पानसरेवाड़ी से

Shepherd हाऊस / गौशाला

9/8.5 कि.मी.

विनंति की....

''परंतु तुम्हारे परिवार को मुश्कील पड़ेगी तो?''

''अरे, बापजी! परिवार में है ही कौन? मैं और मेरी पत्नी! बस दो ही! अधिक में इस आँगन में बंधी हुई गाय और बकरी! यह एक-दो कुत्ते! दो लड़के तो बहारगाँव रहते हैं। लड़की की शादी हो गई हैं।'' किसान ने खुद की पूरी किताब खोल दी।

हम Road को छोड़कर नीचे उतरे। उनका घर थोड़े तेडे आकार का था। मतलब कि ऐसा था। सीधी 3 रूम और आड़ी 1 रूम.... 3 रूम के दरवाजे अलग-अलग, परंतु वे सभी रूम अंदर से एक ही.... और चौथे रूम के दरवाजे में से भी तीसरी रूम में जाया जाता था।

हमको पहले तो वे 3 रूमवाली बड़ी जगह में ही ले गए।

''यहाँ Light चालु है, हमको नहीं चलेगी....''

''बंध कर देंगे?'' उन्होंने कहाँ....।

''परंतु तुम दो लोगों को यहाँ सोना होता है ना? हमको नहीं चलता।''

''**हम बहार सो जाएँगे....**'' उन्होंने खुद का अतिशय भक्तिभाव प्रगट किया।

''नहीं! नहीं! उससे तो वह चोथी रूम चल जाएगी।''

''महाराज! वह तो छोटी है और उसमें तो एक ओर कांदे (प्याज) पड़े हैं। वहाँ आपको अनुकूलता नहीं होगी।''उसने हमारी चिंता की।

''बताओ तो सही....'' मैंने कहाँ और वह रूम देखी। उस भाई की बात सही थी, परंतु हम दो जन संथारा कर सके, उतनी जगह तो थी ही। हमने उस ही रूम में रूकना पंसद किया। अंदर की ओर का(जिससे 3 रूम में जाया जाता था) दरवाजा बंध रखने का और सीधे आँगन में ही खुलते दरवाजे से आवागमन करने का निर्णय हमने कर लिया।

''महाराज! खाने-पीने में क्या लोगे?'' किसान ने खुद की सुमधुर भाषा से पूछा।

मुझे हंसना आया। शीलगुण म.सा. को वापस उपदेश देने का सुवर्ण मौका मिल गया। मैंने उन्हे बढ़ावा दिया कि, ''प्रतिबोध करो, **तुम्हारे द्वारा बहुत सारे नयसार महावीर बनेंगे....**''

और उन्होंने मराठी भाषा में उपदेश रत्नाकर की रचना कर दी।

किसान ने भोजन का आग्रह छोड़ा, परंतु वह दूध की जीद पर आरूढ़ हुआ। चाय की पंचात में पड़ा....हमने उसका भी मना किया। तो वह चला गया और थोड़ी देर में वापस आया....दाडम के दो बड़े फल वहाँ रखें। हमने देखा .... मना

विहार दिन :
39
मृगशीर्ष वद १० दिनांक :
4/1/2016

स्थान :
पानसरेवाड़ी से
Shepherd हाऊस / गौशाला
9/8.5 कि.मी.

करने ही वाले थे....वहाँ तो उसने भक्त्यादेश कर दिया कि ''महाराज! अब इसकी 'ना' मत कहना।'' और हम उसे कुछ कहे, उसके पहले तो वह रफ्फूचक्कर हो गया।

हमको अब साधुओ का संपर्क साधना था। वे अच्छी तरह से पहुँच तो गए है ना? उपरांत में वे हमारी भी चिंता करने ही वाले थे, इसलिए जब तक हमारे पक्के समाचार उनको न मिले, तब तक वे चिंताग्रस्त ही रहनेवाले थे।

सद्भाग्य से (!) शीलगुण म.सा. के पास Route के कागज पर अर्हम का नंबर भी था। और मराठी भाषा भी उनको आती थी। उन्होंने किसान को बुलाकर Phone करवाया। नंबर लगा तो सही, परंतु इस किसान को मराठी भाषा ही आती थी और अर्हम को मराठी का 'अ' भी नहीं आता था। इसलिए किसान के द्वारा उसे समझाया कैसे जाएँ? अंततः अर्हं ने गौशाला के मराठी भाई के साथ बात करवाई। वह भाई सबकुछ समझ गया....

''फलाने गाँव में स्कूल के पहले, Road की बाई ओर एक घर है....'' थोड़ी देर बाद अर्हम उस भाई के साथ वहाँ आ पहुँचा।

''Valparin-Chrono-500 की गोली तो भुवनभूषण म.सा. के पास रह गई हैं। मेरे पास थी वह खाली हो गई हैं। अब?'' मैंने यह बात शीलगुण वि. को की। वे विचारमग्न हुए।

उसके अलावा मच्छरदानी और संथारा भी गौशाला में ही थे। क्योंकि उन 3 साधुओं के पास एक-एक चीजे भक्तिस्वरूप में थी।

दूसरा सब तो चला लेता, परंतु गोली के लिए Risk लेना मुझे उचित नहीं लगा, क्योंकि Fit की गोली का स्वभाव ऐसा है कि यदि वह लेने में न आवे, तो शायद रातोरात Fits आ जाएँ।

पहले तो उस गाँव में ही दवा की दुकान में अर्हम को गोली लेने भेजा। परंतु वहाँ गोली नहीं मिली, इसलिए वे गौशाला जाकर गोली+संथारा+मच्छरदानी लेकर वापस लौटे। फिर प्रतिकमणादि कर हमने भक्तिपरमाणु से पूर्ण उस घर में चेन की निंद ली।

भुवनभूषण म.सा. और हेमगुण म.सा. को भी उस दिन शाम को पानी चुकानें वक्त हमारे जैसा ही सुमधुर अनुभव हुआ था। उन तीनों ने वहाँ गौशाला में गायों के संग निंद का रंग लिया।

कल हमारा बारामती नाम की शरदपवार की नगरी में प्रवेश था।

Vihar Day :

40

मृगशीर्ष वद - ११

DATE :

5.1.2016

Place :

Shepherd House/
गौशाला से बारामती
16 कि.मी.

गाडी पाप की खाडी

विहार दिन :

40

मृगशीर्ष वद ११ दिनांक :

5/1/2016

स्थान :

फारमर हाऊस/
गौशाला से बारामती
16 कि.मी.

सुबह उठकर नित्यक्रम संपूर्ण कर हम निकल रहे थे। वहाँ तो किसानबाबु आ गए। वे हमें बारामती हाई-वे का छोटा रास्ता बताने के लिए 1.5 कि.मी. साथ चले। बीच में मुझे स्थंडील जाना पड़ा, इसलिए 5 मिनिट रूके भी। और हाई-वे पर पहुँचने के बाद हमने उनको धन्यवाद दिए तथा उन्होंने हमें एकदम भक्तिभावपूर्वक विदाय दी। जब तक हम दिखाई दिए तब तक वे वहाँ ही दटे रहे।

सुबह विहार में हमने देखा कि चार-पाँच कुत्ते के छोटे-प्यारे बच्चे रास्ते मे आकर खेल रहे थे। गाड़ीयों का आवागमन होता तो वापस डरकर अंदर भाग जाते थे। वापस रास्ते पर आ जाते। गाड़ीयाँ बारबार Slow होकर उने बचाने की कोशिश करती, परंतु ये छोटे-छोटे पिल्ले जाने की आत्मसमर्पण करने निकले हो वैसे बारबार Road के बीचोबीच आ जाते।

''इनकी मम्मी कहाँ गई होगी? इन सभी को संभालना चाहिए ना?''

''खाने के लिए गई होगी, तो ही पिल्लों को खिला पाएँगी ना?'' हमारे बीच बातचीत हुई।

मैंने एकबार तो साथ में चल रहे अर्हमभाई के द्वारा उन सभी को रास्ते पर से दूर निकाला, परंतु हम सिर्फ 10-12 कदम आगे चले होंगे और वे सभी वापस रास्ते पर!

हाई-वे के उपर रोज हजारों कुत्तें दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं। हरेक विहार में लगभग 1 कुत्ता तो मरा हुआ, मौत के करूण अनजाम को पाया हुआ दिखाई देता हैं। उसके अलावा साँप-मेंढ़क-सुअर और दूसरे भी कतिपय जीवों को यमलोक पहुँचाने का कार्य ये गाड़ीयाँ करती हैं। संयमी तो अनुभव करते ही होगे कि बहुत बार तो Road के साथ उस कुत्ते का शरीर भींत और रंग की तरह इतना एकमेक हो जाता है कि **'यह कुत्ते का शरीर था' ऐसा पहचानना भी मुश्कील हो जाता है,** और वह देखकर हमको मान ही लेना पड़ता है कि, इसके उपर से सेकड़ों-हजारों Truck के घातक Tyre पसार हो गए होंगे, और उन्होंने इसका छुंदा किया होगा।

हम बाहरगाँव से भक्तों को मिलने बुलाते है और वे स्कूटर-Car-बस में आते है....

हम बहार गाँव आदि से भक्तों के द्वारा लाई गई गोचरी वहोरते है....

हम बहारगाँव आदि से भक्तों के द्वारा चातुर्मास के लिए लाई गई उपधि-Stationery वहोरते है....

उसमें पंचेन्द्रिय-विकलेन्द्रिय की कत्लेआम की अनुमति का कितना दोष हमको लगता है और उसकी वजह से हमारा चारित्र

विहार दिन :
40
मृगशीर्ष वद ११ दिनांक :
5/1/2016

स्थान :
फारमर हाऊस/
गौशाला से बारामती
16 कि.मी.

कितना मलिन होता है वह खास विचारणीय हैं।

हम उनको गोचरी आदि के लिए बुलाते है, तो कारावण दोष, परंतु ऐसा न करे, वे खुद से ही भक्तिभाव से करे, तो अनुमति दोष तो लगनेवाला ही हैं।

बीच-बीच में बारामती के श्रावक सामने आते गए। वे खुद का कर्त्तव्य निभा रहे थे। इसलिए उनका आना हमारे दोष का कारण नहीं हैं। इसकी चर्चा वापस कभी करेंगे।

''शरदपवार बारामती का हैं। बारामती से हमेशा जंगी बहुमती से जीतकर आता हैं। उसने बारामती की प्रजा को खुश रखने के लिए यहाँ सभी प्रकारकी सुविधाओं की पूरी व्यवस्था की है।'' श्रावको ने विकसित बारामती के पीछे का रहस्य प्रगट किया(शरदपवार महाराष्ट्र के एक समय के मुख्यमंत्री)।

हम पहुँचे और प्रभुदर्शन करके हम उपाश्रय में रूके।

संघ में सामूहिक वर्षीतप की आराधना(बियासणा) चालु थी, इसलिए हमारी स्थिरता के 6 दिनों के दौरान लगभग 3 दिन तो हम भोगावली कर्म का भोग करने वाले थे।

सुबह और रात को दो Time के प्रवचन चालु हुए। रात को भुवनभूषण म.सा. प्रवचन देते।

पुना में तुषारभाई ने मुझे जो प्रेरणा की थी कि, ''आप यह आठ भंगीवाला पुस्तक लिखो। वह मैंने यहाँ लिखना चालु किया। Terrace में परमशांतिवाले स्वाध्याय रूम में बैठकर, व्याख्यान में समवसरण के लिए तैयार किया गया और इसलिए ही निर्दोष ऐसे Table के सहारे, शीलगुण म.सा. ने दुकानों से वहोरकर लाएँ निर्दोष कागजों के उपर निर्दोष Ballpen से इशानाभिमुख बैठकर 'Minimum Effort....'पुस्तक लिखना चालु किया(आज तो वह छप चुका हैं)।''

यहाँ हमारा और पाँच दिनों का रहवास होने से आगे के विहार के लिए नई शक्ति का संचार हो जानेवाला था। पीछे के विहार की थकान नाबूद हो जानेवाली थी।

Vihar Day :

41-42

मृगशीर्ष वद
११ (1-2)

DATE :
6-7.1.2016

Place :

बारामती

शिथिलाचार–
साध्वाचार

विहार दिन :

41-42

मृगशीर्ष वद १२ (1-2)४ दिनांक :

6-7/1/2016

स्थान :

बारामति

''देखो शीलगुण म.सा. गोचरी वहोरकर जल्दी आ जाते है। हम चारों जन वापरने बैठ जाते हैं। न्याय म.सा. बहुतबार आधे घंटे के बाद आते हैं। हम सभी का समय फालतु बिगड़ता हैं। उनके आने के बाद भी यदि सबको देने के बाद वध-घट हो, तो उसका समय अधिक बिगड़ता है....'' गोचरी मांडली में मैंने स्पष्टता की....

''ऐसा बारबार हो रहा हैं। इसलिए आज से एक बदलाव करना हैं। पहली झोली आएँ, तब सिर्फ मैं और शीलगुण म.सा. ही वापरने बैठेंगे। जब दूसरी गोचरी आएँगी, तब तुम दो भी बैठ जाना, जिससे तुम्हारा समय बरबाद न हो।''

दोनों साधुओं ने स्वीकार किया और उसके बाद इस चीजका अनुकरण चालु हुआ।

संसारी भाई-भाभी, संसारी मित्र पीनलभाई+उनकी श्राविका.... उनके दोनों बच्चें.... सब तीन-चार दिन के लिए बारामती आ गए थे। वे सभी जाने कि नौकरी-धंधे से रिहा हो गए हो, उस तरह बारबार मिलने आते थे। सुरत-मुंबई से ऐसे चक्कर लगाना संभव नहीं था, **परंतु अंतर के अहोभाव को तो कौन रोक सकता हैं?**

यहाँ हमको दो निन्दनीय घटनाएँ सुनने को मिली ।

1.नजदीक के गाँव में दो साधु खराब काम करते हुए रंगे हाथ पकड़े गए। बारामती संघ ने उनकी जवाबदारी उठाई। रास्ते में उन दोनों साधुओं के कपड़े बदलवाकर रवाना किए। Mobile में खराब चीजें+Bank Account.....

मुग्ध जैन नास्तिक हो जाएँ, साधु-संस्था को गालीयाँ देने लगे.... ऐसी वह घटना थी। और वे दोनों फिरंगी साधु कोई तीर्थ में जाकर वापस साधु बन गए है, ऐसी भी वहाँ खबर मिली। मार खा चुके, तो भी **पैसे कमाने की शक्ति नहीं होने से संसार छोड़ने के बदले साधुवेश के आधार से (सहारे से) पेट भरनेवाले ऐसे जीवो पर करूणा करने के सिवाय हम दूसरा तो क्या कर सकते हैं?** ऐसी बड़ी शिथिलतावाले निष्ठुर-निर्लज्ज वेषधारीओं को और शिकारी जैसे उनकी वाणीजाल में फसे मुग्ध जैनों को कौन बचाएँगा? **भगवान की कृपा बरसे उसकी राह देखनी रही।**

2. बारामती में किसी वेषधारी ने घर-घर जाकर पैसों का चंदा इकट्ठा किया। माँगने के अनुसार पैसे न दे, तो घर नहीं छोड़ते.... इन सभी गतिविधियों की वजह से श्रावक सन्न रह गए। पैसे तो दे दिए, परंतु नक्की किया की 'साधुओं से दूर रहना।'

विहार दिन :

41-42

मृगशीष वद १२ (2)४ दिनांक :

6-7/1/2016

स्थान :

बारामती

''म.सा.! बारामती में बहुत सारे घर होने के बावजूद भी आपके पास कुछ चन्द लोग ही आते है, उसका कारण ऐसी सभी दुर्घटनाएँ हैं।'' ऐसे कान में खिले ठुकने का अनुभव हो, वैसे शब्द हमें सुनने पड़े।

शिथिलाचारीयों का निर्लज्ज-बिनमर्यादा भरा व्यवहार...

शिथिलाचारीयों की, आचार संपन्न साधुओं की श्रावकों के पास तरह-तरह की विचित्र अपेक्षाएँ....

इन दो चीजों ने बहुत सारे जैनों को आते भव में अजैन बनाने की **Ticket बुक करवा दी है,** वे दुर्लभबोधि बने है....

दिन -42

मुझे पता चला कि उपाश्रय में नीचे ही आयंबिल खाता हैं। 2-4 आयंबिल होते हैं। न्याय म.सा. वहाँ से थोड़ी चीजें निर्दोष वहोर तो सकते थे, परंतु नीचे रसोड़े में अँधेरा होता था, इसलिए उस जगह पर रसोईवाले बहन Bulb चालु ही रखते। वह बहन आते, रसोई बनाते, आयंबिल हो जाता, बरतन धुल जाते....उसके बाद जाते समय वह Bulb बंध होता।

नीचे के Hall में बराबर बीच के हिस्से में तो आकाश में से उजाला आता था। पूराने जमाने में जैसे बीच का भाग उपर से खुल्ला रहता, वैसा ही यहाँ था। परंतु रसोड़े के समीप के अँधेरे में तो वह Bulb का उजाला दुपहर 12 बजे भी स्पष्ट रीत से अलग खुद की वर्तमानता व्यक्त करता। और यदि दिन में भी Bulb का उजाला स्पष्ट अनुभव हो, तो उसकी 'उज्जई' माननी ही.... ऐसा आचार न्याय म.सा. निर्विकल्प पालते ही थे।

हा! Bulb बंध हो जाएँ, तो गाढ़ अँधेरा हो जाता वैसा नहीं था। जमीन आदि तो नजर आती ही थी.... और वहाँ वहोरने में कोई दोष नहीं था,परंतु आयंबिलवालों को ज्यादा उजाला चाहिए होगा, इसलिए Bulb चालु करवाते।

1.हम उनको ऐसा कह नहीं सकते थे कि, ''Bulb बंध करो, चालु मत करो....,'' क्योंकि उसमें तो हमारी गोचरी के लिए वह आदेश दिया हुआ कहलाएगा, और फिर तो गोचरी दोषित ही हो जाती हैं(सचित संघट्टा)....

2. Bulb चालु हो, तब तक तो वहाँ 'उज्जई' की वजह से जा नहीं सकते, वहोर नहीं सकते।

3. वे खुद से ही यदि Bulb बंध करे/रखें, तो वहोर सकते हैं।

ऐसे सभी कारणों से न्याय म.सा. ने नीचे से दो दिन तो कुछ भी लिया नहीं।

तीसरे दिन उनकी गोचरी कम आई हुई थी, उनको मंगानी थी.... नीचे से चने आदि भी मिल जाएँ, तो भी चले.... परंतु Bulb का क्या करना?

मेरी गोचरी पूरी हो गई थी। मैंने कहाँ, ''लाओ तरपणी मुझे

विहार दिन :

41-42

मृगशीर्ष वद १२ (1-2)४ दिनांक :

6-7/1/2016

स्थान :
बारामती

दो। मैं प्रयत्न करके देख लेता हूँ।'' उनको संकोच तो हुआ, परंतु आखिर उन्होंने मुझे मैदान में उतरने दिया।

तरपणी लेकर मैं नीचे गया। देखा तो आयंबिल तो पूरे हो गए थे। वो बहन बरतन धो रहे थे, Bulb चालु था.... यदि मैं पास जाऊँ, तो उनके हाथ कच्चे पानीवाले होने से गरबड़ तो होने ही वाली थी, और वैसे भी Bulb जब तक स्वतः ही बंध नहीं होता, तब तक तो मुझे आगे बढ़ना ही नहीं था।

मैं वापस उपर आया। दो-चार मिनिट के बाद वापस गया नीचे....

उस वक्त बहन के सब कार्य पूरे हो चुके थे। आयंबिल खाते की रूम का दरवाजा बंध कर Bulb बंध कर, जा रहे थे.... ''धर्मलाभ''.... अवसर देखकर मैंने शब्द उच्चारा।

''बहन! आयंबिल में सिर्फ चने का खप हैं। परंतु देखना हा! Bulb चालु मत करना। ऐसे ही दरवाजा खोलकर चने वहोरा पाओगे ना?''

उस बहन ने अतिशय भक्ति से वहोराएँ और एक तपस्वी मुनिवर की भक्ति निर्दोष वस्तु से करने का अनमोल अवसर पाने का मुझे भी उत्कृष्ट आनंद हुआ।

Vihar Day :

43-44

मृगशीर्ष वद -
१४ - अमावस

DATE :

8-9.1.2016

Place :

बारामती

गुरुपद

विहार दिन :
43-44
मृगशीर्ष वद - १४- अमावस दिनांक :
8-9/1/2016
स्थान :
बारामती

''गुरूजी! एक तकलीफ हो रही हैं।'' विनयवंत हेमगुण म.सा. ने एकांत में आकर मुझे उत्कृष्ट नम्रता के साथ बात का निवेदन किया।

''आपने गोचरी में जो व्यवस्था रची है, वह एकदम बराबर ही हैं। परंतु मुश्कील यह हो रही है कि आपकी और शीलगुण म.सा. गोचरी जल्दी पूरी हो जाने से आप दोनों तो खड़े हो जाते हो। उसके बाद यदि हम दोनों में गोचरी कम पड़े तो तो कोई दिक्कत नहीं है, परंतु आप जानते ही हो, **'गोचरी कम होनी वह तो हमारे Group में आश्यर्च ही गिना जाता हैं।'** और इसलिए ही रोज गोचरी बढ़ती है और उसका निपटारा तो हम दोनों को ही करना पड़ता है ना? समान हिस्सों में विभाजन कर दिया जाए, तो भी मुश्कील नहीं है,परंतु वह शक्य नहीं होता। वह तो आपकी उपस्थिति हो, तो ही संभव हो सकता हैं।

तथा जो गोचरी आई होती है, वह हम दोनों के बीच विभाजीत भी कौन करे? हम खुद ही ले ले, तो वह भी उचित नहीं कहलाता ना?''

मुझे मुनिवर की बात सही लगी। तुरंत ही तय कर लिया कि, ''हम दो जन जल्दी बैठेंगे, तो भी गोचरी पूरी होने के बाद ही उठेंगे।''

छोटे साधुओं को हो रही तकलीफों की ओर ध्यान देना वह तो गुरू की जवाबदारी है। सचमुच तो मेरी ही भूल कहीं जा सकती है कि, 'उनको मुझे कहने के लिए आना पड़े।'

छोटे साधु शिकायत करने में संकोच महसूस करते है, मन ही मन मुंझाते है, गुरू के पास बात करने से डरते है, जिसकी शिकायत करनी होती है, उसके साथ रिश्ता बिगड़ जाने के भय से भी मौन रहते है.... परंतु वह मौन सहनशीलता का सूचक नहीं होता और इसलिए वे अंदर ही अंदर सतत चिंता में रहते है, उनकी प्रसन्नता टूट जाती है, पूरे दिन वे सब विचार उनके मन को खा जाते है, संयम की क्रियात्मक साधना के प्राणसम भावात्मक साधना बिचारी अकाल मर जाती है....

इसलिए ही गुरूओं को, वडीलों को छोटे साधुओं को हो रही तकलीफे स्वतः ही जान लेनी चाहिए और उसे दूर करने का सक्रिय प्रयास करना चाहिए, तो ही ये पुष्प संपूर्णता से खीलेंगे, वरना करमा जाएँगे....

सुना है कि पू.आ. योगतिलक सूरिजी म.सा. खुद के सभी शिष्यों के साथ क्रमशः निजी Meeting करके मार्गदर्शन दिया करते हैं। उस कारण से उनकी प्रसन्नता अकबंध रहती है, बढ़ती रहती हैं।

शिष्य कुछ भी बोलते न हो, तो ऐसा मानने की जरूरत नहीं है कि, 'उसके मन में कुछ भी नही है, वह प्रसन्न ही हैं।'

विहार दिन :
43-44
मृगशीर्ष वद - १४- अमावस दिनांक :
8/1/2016
स्थान :
बारामती

शुरूआत में शिष्य सबकुछ मन में दबा देते है, डाँट देते है, छुपा देते है....

परंतु जिस दिन वह छिपी आग बहार आती है, तो वह बहुतो का भोग लेती हैं।

गुरू की वैयावच्च का अत्यधिक बोझा आएँ....

गुरू के पास से काम ही मिले, ज्ञान-वात्सल्यादि कुछ नहीं....

गुरू उसके तन-मन की देखभाल न करे....

तो उसकी असर शिष्य के मन में धीरे-धीरे बढ़ती जाती हैं। वह अंततः तीसरे Stage के Cancer तक पहुँचती है और जीव को खलास कर देती हैं।

मैंने देखभाल नहीं की, वह मेरी भूल .... परंतु भूल समझने के बाद देखभाल करनी चालु की वह मेरी पात्रता!

दिन - 44

आज वर्षीतप की आराधना में बियासणा का दिन थ।

वर्षीतप के रसोडे में हम वहोरने गए, परंतु दुःख हो वैसी कितनी चीजें देखने मिली। लाभार्थीओं को, कार्यकरो को तपस्वी प्यारे लगते है, इसलिए ही वे उनके लिए 5-5 मीठाई, नमकीन, Fruits सब बनाते है, परंतु उनको प्रभु प्यारे नहीं लगते, इसलिए ही प्रभु की आज्ञाएँ जानने की भी फुरसत नहीं रखते है, जानी हो तो पालने की बात में तो उपेक्षा ही हैं।

चार बजे रसोड़ा चालु हो जाता हैं।

गुलाबजांबु जैसी चीजे पहले दिन बनाई हुई वापरी जाती है(जो नहीं ही चलती) आदि आदि बहुत अजयणाएँ सिर्फ यहाँ ही नहीं, बहुत-सी जगहों पर देखने मिलती हैं।

दोष किसको देना?

हम प्रेरणा करके ऐसे सामूहिक रसोड़े चालु तो करवा देते है, परंतु उसके बाद की इन घोर विराधनाओं का क्या? उसके लिए हम सख्त रूख क्युं नहीं अपनाते? सिर्फ संख्या वृद्धि, सिर्फ बाह्य आडंबर में हम संयमी भी यदि धर्म मानने लगेगे, तो तो अधर्म और धर्म में भेद क्या?

अरे, 'अधर्म है' ऐसा समझकर अधर्म करनेवालों को तो कम पाप लगेगा, क्योंकि वे अधर्म को अधर्म मानकर कर रहे हैं।

परंतु अधर्म को, अजयणा को, आडंबर को 'यह धर्म है' ऐसा मानकर करनेवालों को तो मिथ्यात्व-अज्ञान आदि बड़े दोष लगेंगे।

सामूहिक आराधना गलत नहीं है, सामूहिक आराधना में सुविधा के लिए सामूहिक रसोड़े हो वह भी अपवाद से गलत नहीं है, परंतु उसमें जयणा के लिए बराबर प्रयास ही नहीं

विहार दिन :

43-44

मृगशीर्ष वद - १४- अमावस दिनांक :

8/1/2016

स्थान :
बारामती

किया जाता वह संपूर्णतः गलत हैं। उसके लिए संयमी कडक होकर प्रेरणा ही नहीं करे, वह संपूर्णतः गलत हैं।

जयणादि के लिए सख्त प्रयास करने के बाद भी अनाभोग-प्रमादादि की वजह से कोई विराधनादि हो जाएँ, तो उसकी माफी मिल सकती हैं।

हम सब कब यह सब समझेंगे? वह पता नहीं हैं।

वरसीतप में बरफ चलता है, Cold-Drinks गरम करके ठंडा करके पीना चलता है, Icecream भी पिगालकर ठंडी करके वापरने में आती है.... ऐसा ऐसा यदि किसी रसोडे में होता हो, तो वह हदबाहर का आज्ञाभंग+अज्ञानता है.... सभी समझे तो अच्छा!

इस तरह हमारा अमावस का दिन एक अमावस जैसे प्रश्न के हल के बिना ही समाप्त हुआ।

Vihar Day :

45

पोष सुद

१

DATE :

10.1.2016

Place :

बारामती

आखरी दिन

विहार दिन :

45

पोष सुद १ दिनांक :

10/1/2016

स्थान :

बारामती

आज बारामती का आखरी दिन था। गाँव के बहार 1.5-2 कि.मी. के अंतर में सुंदर तीर्थ जैसी जगह थी। उपाश्रय भव्य था। आज हमने वहाँ सम्यक्त्व सहित बारह व्रत उच्चराने का कार्यक्रम रखा था।

मैंने मेरे तरीके से 80 जितने नियमों की Llist तैयार की थी। उसमें सम्यक्त्व से लगते नियम+पापत्याग के नियम+पुण्यकार्य के नियम.... उसकी Xerox निकलवाकर रखी थी। वे भी नियम वर्तमान काल को दृष्टि समक्ष रखकर बहुत ही उपयोगपूर्वक सज्ज किए गए थे।

मैं तो 9 बजे वहाँ पहुँच गया, परंतु मेरा पुण्य 9 बजे नहीं पहुँचा और इसलिए सिर्फ 2-3 लोग आए थे। सब तैयारी अब तक करनी शेष थी। अंततः दस बजे कार्यक्रम चालु हुआ। लगभग 100 के आसपास लोग आ गए थे। सभी बीच-बीच में Late भी आ रहे थे। जो भी आएँ, वे तभी विधि में जुड़ गए। चलती गाड़ी में चढ़नेवाले मुसाफिर ही देख लो....

एक के बाद एक नियम मैं समझाने लगा। लगभग 11.30 बजे हमारा अनुष्ठान परिपूर्ण हुआ। मैंने घोषणा की **''मेरी भावना है कि 'दक्षिणभारत' में ऐसे 1 लाख व्रतधारी श्रावकों को तैयार करना....''** परंतु मुझे लग रहा है कि इस कार्य के लिए मेरे पास वैसा अतिप्रचंड पुण्य नहीं है, बाकी तो भविष्य में ही सच्ची हकीकत पता चलेगी। अनुष्ठान के बाद वापस गाँव में आ गया। आज सभी मेहमान(!) Return होनेवाले थे।

गोचरी के बाद न्याय म.सा. ने मुझे कहाँ कि, ''श्रीपाल आपको गुरू बनाना चाहता हैं। उसने कल ही मुझे बात की हैं। वह प्रायः आज आपसे बात करेगा। हालाँकि वक्त कम है, दुपहर को प्रवचन है, और उन सभी को रवाना होना है, इसलिए शायद दूसरी बार वापस आएँगा, तब बात करेगा।''

मैं न्याय म.सा. की निःस्पृहता को ताँकता रहा। सच्ची बात कहुँ तो वापी में तो मैंने उनको कह ही दिया था कि, ''श्रीपाल को तुम्हारे प्रति विशेष सद्भाव है, तो भले वह तुम्हारा शिष्य हो।'' परंतु मेरी वह उदारता वास्तविक होने के बावजूद भी बात-चीत में विरोधी विचार भी पनपे थे। ''श्रीपाल मेरे पास आया था। अब वह न्याय म.सा. का शिष्य हो रहा है तो वह कैसे उचित है? मेरा एक शिष्य कम हो वह तो ठीक, परंतु लोगों में मेरी कैसी छाप पड़ेगी कि शायद इनका संयम अच्छा नहीं होगा।''

हालाँकि मैंने 'धन-धन्नो अणगार' पुस्तक लिखी हैं। उसमें मैंने ही उनको मेरे से महान प्रदर्शित किया है, तो फिर लोग भी वैसा माने तो उसमें गलत क्या हैं?''

विहार दिन :
45
पोष सुद १ दिनांक :
10/1/2016
स्थान :
बारामती

ऐसे तरह-तरह के विचार पनपे थे। विहारादि में श्रीपाल का न्याय म.सा. के साथ घुलमिल जाना, उनके साथ चलना, उनकी चिंता करना, उनकी प्रशंसा करना.... यह सब मैंने बारबार अनुभवा था। इसलिए मैंने मान लिया था कि, 'श्रीपालकुंवर न्याय म.सा. को पंसद कर चुका हैं।' और उस बात को मैंने स्वीकार कर लिया होने के बावजूद भी मन में थोड़ा खेद था, वह भी कपट का त्याग कर मैं बोल रहा हूँ।

इसलिए ही आज जब इस बात का जिक्र न्याय म.सा. ने किया तो मुझे विस्मय हुआ। मोहनीय के उदय से प्रेरित आनंद हुआ। 'यह आनंद गलत है' ऐसा विचार मिथ्यात्वमोहनीय के क्षयोपशम से उत्पन्न हुआ। न्याय म.सा. पर बहुमानभाव पैदा हुआ। उनकी पेशकश इतनी दृढ़ता से की हुई थी कि उसमें किसी भी तरह की औपचारिकता की गंध भी नहीं आ रही थी।

हालाँकि उसके साथ मिलन न हो पाया। रविवार को दुपहर का प्रवचन चल रहा था। और तब ही वे दूर दरवाजे में से 'मत्थएण वंदामि' करके निकल गए।

इन छः दिनों में ही शीलगुण म.सा. ने खुद की जिंदगी की पहली किताब लिखी, वह भी हिन्दी में.... हा! मेरे 'सुपात्रदान' पुस्तक के हिन्दी अनुवाद के स्वरूप ही लिखी थी। (तब से लेकर आज तक उन्होंने बहुत-सी पुस्तकों का हिन्दीकरण कर लिया हैं।)

''म.सा.! अब तक तो गुजराज-महाराष्ट्र था। उसमें भी जैनों के घरवाले Area थे, परंतु अब जो Area आएँगे, उसमें तो जैनों के दर्शन भी मुश्कील हैं। मंदीर-उपाश्रय भी नहीं मिलेंगे। इसलिए इस Cycle वाले को साथ रखीएँ, गाड़ी में गोचरी(रसोडा) साथ रखीएँ, अथवा तो Tiffin की गोचरी वापरना ही। अब आगे सब मांसाहारी ही ज्यादा प्रमाण में मिलेंगे।''

मन में खोफ-डर उत्पन्न कर दे वैसी बातें सभी के मुख से श्रवणकर, सचमुच थोड़ा डर उत्पन्न हुआ भी सही, परंतु वह निश्चय पक्का कर ही लिया था कि जब तक तीन-चार बार वैसे विचित्र अनुभव न हो, तब तक इस तरह ही जैसे आएँ है, वैसे ही आगे बढ़ना....

रात्री प्रवचन अच्छे जमे थे। भुवनभूषण म.सा. की प्रेरणा से बहुत से लोगों ने अलग-अलग प्रकार की बाधाएँ ली। उन्होंने अलग-अलग बाधाएँ लिखकर अलग-अलग चिट्ठीयाँ तैयार की थी। फिर हरेक के पास एक-एक चिट्ठी उठवाई और जिस चिट्ठी में जो बाधा आई, उसने वह बाधा ली। सभी ने बहुत उमंग-उत्साह के साथ इस अनिश्चित तरीके को अपनाकर बाधा स्वीकारी थी। पाठशाला सक्रिय करने के प्रयास भी हुएँ।

अंततः अगले दिन विहार करने की तैयारी करके 'भविष्य में क्या होगा?' उसकी उत्कंठा और उत्तेजना के साथ हम शाम के

रंग ढल गए।

एक के बाद एक जिंदगी के दिन बीते जा रहे थे। हररोज कमाया ज्यादा या खोया ज्यादा?.... वह तो कर्मसत्ता के हिसाब में सब नपा ही जा रहा होगा।

हर रोज मौत को याद करने के लिए सूरिपुरंदर ने कहाँ हैं और रोज संथारापोरिसी के वक्त **'जइ में हुज्ज पमाओ'** बोलते भी है, परंतु वह रोजींदी बनी हुई क्रिया में कितना उपयोग हमारा सर्तक रहता हैं? वह तो हम जानते ही हैं।

'इस जीवन में अंतिम निंद्रा किस तरह आएगी?' उसकी खबर के बिना ही आज तो हमने शरीर को आराम देने के बहाने से प्रमाददोष का सेवन कर दिया....

विहार दिन :

45

पोष सुद १ दिनांक :

10/1/2016

स्थान :

बारामती

OUR ROUTE INFO

S.No	PLACE	K.M	Murtipujak	Sthanakvasi	Digamber	Non-Jain	Jain Temple	Upashray
1	BHIWANDI	0	MANY	MAY BE	MAY BE	YES	YES	YES
2	KALYAN	12	15+	0	0	YES	YES	YES
3	BADLAPUR	15	20+	5	0	YES	YES	YES
4	MIDWAY HOUSE	8	0	0	0	NO	NO	NO
5	NERAL	11	25+	0	0	YES	YES	YES
6	KARJAT	14	50+	0	0	YES	YES	YES
7	KHOPOLI	11	25+	0	0	YES	YES	YES
8	LONAVALA	15	50+	50+	0	YES	YES	YES
9	KAMSHET	19	30+	0	0	YES	YES	YES
10	PARSHWA PRAGNALAY	15	BHOJANSHALA	0	0	NO	YES	YES
11	DEHU ROAD	7	8	0	0	YES	YES	YES
12	AUNDH	16	30+	MAY BE	MAYBE	YES	YES	NO
13	KATRAJ (PUNE)	17	BHOJANSHALA	0	0	NO	YES	YES
14	SHATRUNJAY DHAM (PUNE)	4	BHOJANSHALA	0	0	NO	YES	YES
15	HADAPSAR	12	10+	10+	0	YES	YES	YES
16	URULI KANCHAN	21	30	10	0	YES	YES	YES
17	YAVAT	16.5	15	0	15+	YES	YES	YES
18	AAKASH HOTEL	17	0	0	0	NO	NO	NO
19	PANSAREVADI	11	0	0	0	YES	NO	NO
20	PANJRAPOL/SHEPHERD HOUSE	8.5/9	0	0	0	NO	NO	NO
21	BARAMATI	17	100+	20+	MAY BE	YES	YES	YES
	Total	267/267.5	14 PLACES	7 PLACES	4 PLACE	15 PLACES	17 PLACES	16 PLACE

HIGHLIGHTS

श्रुत messenger

ओसियन हाईट्स सोसायटी, चेन्नई

Part 1

ALSO AVAILABLE IN THIS SERIES

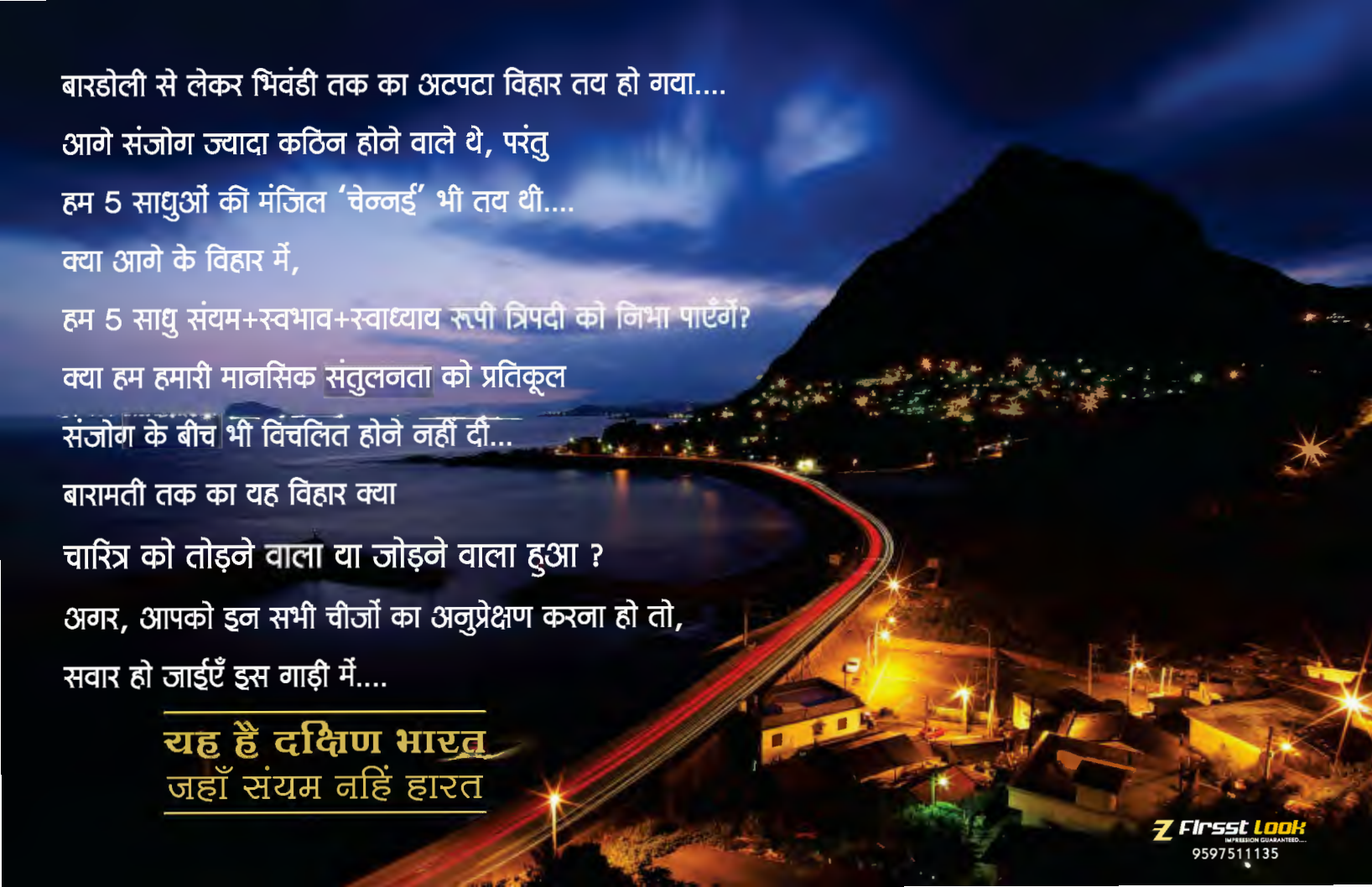
बारडोली से लेकर भिवंडी तक का अटपटा विहार तय हो गया....
आगे संजोग ज्यादा कठिन होने वाले थे, परंतु
हम 5 साधुओं की मंजिल 'चेन्नई' भी तय थी....
क्या आगे के विहार में,
हम 5 साधु संयम+स्वभाव+स्वाध्याय रूपी त्रिपदी को निभा पाएँगे?
क्या हम हमारी मानसिक संतुलनता को प्रतिकूल
संजोग के बीच भी विचलित होने नहीं दी...
बारामती तक का यह विहार क्या
चारित्र को तोड़ने वाला या जोड़ने वाला हुआ ?
अगर, आपको इन सभी चीजों का अनुप्रेक्षण करना हो तो,
सवार हो जाईएँ इस गाड़ी में....
यह है दक्षिण भारत
जहाँ संयम नहिं हारत
Firsst Look
IMPRESSION GUARANTEED....
9597511135